क्रांतिकारी
वासुदेव बलवन्त फड़के

[एक क्रान्तिकारी युवक की जीवन-गाथा]

सूर्य-प्रकाशन, नई सडक, दिल्ली-६

प्रकाशक सूर्य प्रकाशन,
नई सड़क दिल्ली ११०००६

दूरभाष २६६४१२

मुद्रक अमित प्रिंटर्स
मोहन पार्क, नवीन शाहदरा दिल्ली ३२

प्रथम संस्करण विजयदशमी, १९८९

मूल्य १५-००

श्रद्धेय माँ, जो मेरे जीवन और
लेखन का आदर्श है,
के चरणो मे सादर
सर्मापत ।

—सत्य शकुन

28488

सोच ! विचार !!

हम अपने वर्तमान राष्ट्रीय नायकों का गुणगान और विशद चर्चाएँ करने मे इतना उलझ गए हैं कि स्वाधीनता प्राप्ति हेतु जूझने मरने वाले अनेकों शहीदों को हमने अँधेरे कोनों मे पटक दिया है। उनका दोष इतना ही था कि उन्होंने निःस्वार्थ भावना से देश और देशवासियों के लिए बेमोल प्राणोत्सर्ग किया। उनके इस त्याग की कीमत हमने उनके सगे-सम्बन्धियों को हर दृष्टि से बेहाल करके चुकाई या चाँदी के चंद सिक्के देकर उनकी भावनाओं से खिलवाड़ किया है।

इससे अधिक हमारा नैतिक पतन और क्या हो सकता है? स्वाधीनता के बाद जिन लोगों ने सत्ता पर अधिकार किया, मेरा विचार है, उन्होंने काफी हद तक अपने त्याग की कीमत वसूल कर ली है। आज देश-सेवा का अर्थ देश और देशवासियों का दोहन मात्र रह गया है। यही कारण है कि नैतिकता, राष्ट्र-प्रेम, बन्धुत्व भावना, त्याग सब व्यक्तिगत स्वार्थ तक सीमित हो गया है। ये लक्षण राष्ट्र के लिए खतरनाक सिद्ध होंगे, आवश्यकता इस बात की है कि हम उन चरित्रों को अपने सम्मुख रखें, जिन्होंने राष्ट्रहितार्थ अपने व्यक्तिगत और निजी स्वार्थों का बलिदान कर दिया। आज नारे लग रहे हैं—इक्कीसवीं सदी मे जाने के। इसमे कोई बुराई नहीं है, पर अगर स्वार्थ और व्यक्तिगत लाभ के संकीर्ण दायरों में हम सिमटे रहे, गरीबों के श्रम को कौड़ी के मोल खरीदते रहे, अपनी सात पीढ़ियों तक को धन धान्य से परिपूर्ण करने की विचारधारा से ग्रसित रहे, तो इस देश और देशवासियों का भविष्य अंधकार मे ही रहेगा।

मैंने यहाँ एक ऐसा चरित्र उभारने का प्रयत्न किया है जिसने १८५७ की क्रांति के बाद, स्वाधीनता प्राप्ति की निःस्वार्थ भावना को आगे प्रसारित करने के प्रयत्न में अपने प्राण न्यौछावर कर दिए। पात्र और घटनाएँ वास्तविक और अवास्तविक दोनों ही हैं। उपन्यास को गति देने के लिए कल्पना का सहारा लेना आवश्यक था।

बीकानेर,
१६ मई १६८६

—सत्य नारायण

१

१८५७ की क्रांति धधके हुए एक वर्ष के लगभग होने जा रहा था। अंग्रेज स्वाधीनता की इस ज्योति को बुझाने के लिए ऐसी क्रूरता और नृशंसता पर उतर आए थे कि साधारण भारतीय जन, जिन्हें जरा भी अपने देश और देशवासियों से प्रेम था, गोरों के प्रति घृणा के भाव से भर गए थे। भारतीय अपने निकट से किसी अंग्रेज को गुजरते देखते थे, तो उन्हें लगता कि मानो कोई कसाई जा रहा है, पर ऐसी सारी भावनाओं को खुलकर प्रकट करने की उनकी हिम्मत नहीं हो पाती थी। अधिकांश तो ऐसे थे, जो गुजरते गोरों की तरफ आँख उठाकर भी नहीं देख पाते थे। बड़े-बड़े शहरों में चर्चाएँ दबे स्वर में होती थीं, लेकिन गांवों में कुछ खुलकर पक्ष विपक्ष की बातें चलती थीं। कुछ लोग गोरों को अच्छा बताते, तो कुछ खराब। जरा-जरा से लड़के भी अनुभवी वृद्धों के से स्वर में बतियाते थे, बाल मण्डली में गोरों के क्रिया कलापों की समीक्षा प्रायः वाक् युद्ध का रूप ले लेती थी और कभी कभी तो हाथापाई तक की नौबत आ जाती थी। ऐसी घटनाएँ घर के बाहर होती थीं क्योंकि घर में बड़े बूढ़ों का अंकुश, बहसबाजी और धींगा-मस्ती की इजाजत नहीं देता था।

घर के पिछवाड़े के बगीचे में वृक्ष के नीचे, भरी दोपहरी में दो बालक बैठे बतिया रहे थे। दोनों ही उत्तेजित लग रहे थे। एक बालक आक्रोशपूर्ण स्वर में बोला—

'जुगल, तुम्हें सिद्ध करना होगा कि अंग्रेज जो कर रहे हैं सही कर रहे हैं।'

'मैं क्या सिद्ध करूँ। क्या उस दिन मास्टरजी नहीं कह रहे थे?'

'क्या मास्टरजी की कही हुई हर बात सच है?'

'वासुदेव, यह सोचना तो हमारा काम है।' जुगल धीमे स्वर में बोला।

'मास्टरजी ने कहा था कि अंग्रेज अपना बचाव कर रहे हैं। तुमने कहा कि उन्होंने ठीक ही कहा है। मैं तुमसे पूछता हूँ कि यह बात ठीक कैसे हुई? वे गाँवों में आग लगा रहे हैं, पेड़ों पर लटका-लटका कर लोगों को फाँसी दे रहे हैं। इस अपना बचाव करना कहते हैं क्या?'

'मेरे विचार में यह गलत नहीं है। अगर वे ऐसा न करें तो पूरा हिन्दुस्तान उनके विरोध में खड़ा हो जाएगा।' मुस्कराते हुए जुगल बोला।

वह तो होगा ही। वे चाहे कितना ही अत्याचार क्यों न कर लें, भारतीय दबने के नहीं हैं। उन्हें अपना देश छोड़ना ही होगा। तुम उनका पक्ष ले रहे हो। तुम्हें शर्म आनी चाहिए।'

पक्ष नहीं ले रहा हूँ। जुगल दृढ़ता से बोला।

'ले रहे हो।' वासुदेव बोला।

अच्छा मान लो ले रहा हूँ —तुम मेरा क्या कर लोगे?'

वासुदेव कुछ देर तो उसे घूरता रहा। फिर तमतमाकर खड़ा हो गया। 'जुगल भी कुछ भयभीत हो गया था। वासुदेव सख्त लहजे में बोला—

अगर मेरे पास बन्दूक होती या तलवार होती तो तुम्हें बताता।

वासुदेव की लाल आँखें देख कर, जुगल ने आगे कुछ न बोलना ही उपयुक्त समझा और चुपचाप उठ कर चला गया।

'अगले दिन विद्यालय में भी वे दोनों नहीं बोले। वासुदेव मास्टरजी के विरुद्ध आक्रोश से भरा हुआ था कि उनके कारण ही उन दोनों में लड़ाई हुई। वह मन में सोच रहा था कि मास्टरजी को सबक सिखाना चाहिए, पर यह तय नहीं कर पा रहा था कि विद्यालय में सिखाया जाए या कहीं बाहर। जुगल उसकी आन्तरिक भावनाओं से बखूबी परिचित था। आधी छुट्टी हुई। जुगल मुस्कराता हुआ वासुदेव के पास आया।

'नाराज हो क्या?

तुम्हें नहीं दिख रहा है क्या?' वासुदेव बोला।

'तभी तो आया हूं। देखो एक बात कहे देता हूँ। तुमने अगर मास्टरजी के साथ कोई शरारत की, तो तुम्हारे घर कह दूंगा, फिर मुझे दोष मत देना।' जुगल गम्भीरता से बोला।

'अच्छा हुआ तुम आ गए, अन्यथा मास्टरजी को कोई और ही सँभालता।' वासुदेव मुस्करा कर बोला।

'तुम जो कुछ सोचते हो उसे मैं समझता हूँ। यह मत भूलो कि मास्टरजी सरकारी नौकर हैं याने अंग्रेजों के नौकर। उनके विरुद्ध कैसे बोल सकते हैं?'

'तो अच्छा है कि चुप रहूँ' वासुदेव हँसता हुआ बोला।

'चलो—बाहर घूम फिर आए।' जुगल बोला।

'नहीं। मैं तो तुम्हारे गलत-सलत कामों में साथ देता रहता हूँ और तुम मेरी सही बात का समर्थन तक नहीं करते।' वासुदेव मुस्कराया।

'देखो भाई, संतरा की चोरी चोरी नहीं कही जाती। पँचकौड़ी के विशाल बाग में से अगर हम, संतरा के पेड़ पर से दो चार संतरे तोड़ कर खा लें, तो इसमें कोई बुराई नहीं है। जुगल बोला।

तुम्हारे किसी काम में बुराई नहीं है। बिना बाग के मालिक से पूछे, संतरे तोड़ कर खा लेना कोई बुरी बात नहीं है। पँचकौड़ी ने कभी पकड़ लिया तो वह तुम्हें इनाम देगा।' वासुदेव हँसता हुआ बोला। दोनों मित्रों ने जाकर संतरों का आनन्द लिया। वापस आने में देर हो गई। दुर्भाग्य था कि स्कूल में अन्दर आते हुए प्रधानाध्यापकजी ने देख लिया। बचने का कोई रास्ता नहीं था। जुगल जानता था कि आगे क्या होने वाला है। प्रधानाध्यापकजी के डंडे के आगे उसकी रूह काँपती थी। वासुदेव स्वाभाविक गति से चलता हुआ प्रधानाध्यापकजी के सामने आकर खड़ा हो गया। काँपता हुआ जुगल भी उसकी बगल में आकर खड़ा हो गया।

'कहाँ गए थे?' प्रधानाध्यापकजी ने कड़क कर कठोर स्वर में पूछा।

'जी ' वासुदेव ने बोलना चाहा कि प्रधानाध्यापकजी ने उसे टोक दिया।

'तुम चुप रहो। तुम बताओ।' जुगल की ओर इशारा करके उन्होंने कहा।

'पेट खराब चल रहा है जी।' जुगल ने दबे स्वर में कहा।

'तुम बताओ।' वासुदेव की तरफ इशारा हुआ।

'संतरे खाने गए थे।'

'कहाँ?'

पँचकौड़ी के बाग में।'

'चोरी से ?'

'जी।'

'क्या यह अच्छी आदत है ?'

'जी नहीं।'

'यह ले गया होगा।' जुगल की ओर इशारा हुआ। जुगल को लगा कि उसकी साँस बन्द होने वाली है। उसने बड़ी कातर निगाहों से वासुदेव की ओर देखा।

'यह नहीं मैं इसे ले गया था—श्रीमानजी।

'हाथ आगे बढ़ाओ।' आदेश हुआ।

वासुदेव ने निर्भीकता से हाथ आगे बढ़ा दिया। चार डण्डे लगाने के बाद प्रधानाध्यापकजी ने गंभीर स्वर में कहा—

भविष्य में ऐसी हरकत फिर मत करना—जाओ।

दोनों कक्षा में आकर बैठ गए। जुगल छुट्टी होने तक बिल्कुल खामोश बैठा रहा। छुट्टी की घंटी बजी।

मैं अभी आया। साथ चलेंगे।' जुगल बड़ी तेजी से प्रधानाध्यापकजी के कमरे की ओर बढ़ा। आज्ञा लेकर कमरे के अन्दर पहुंचा।

कहो क्या बात है ?'

'श्रीमानजी मुझसे दो गलतियाँ हुई हैं। वासुदेव को सन्तरा की चोरी के लिए मैं ले गया था। दूसरी गलती यह हुई कि मैं सच बोलने की हिम्मत नहीं जुटा पाया। मैं अपराधी हूँ और सजा पाने के लिए तैयार हूँ।

प्रधानाध्यापकजी अवाक रह गए लेकिन थोड़ी देर बाद मुस्करा कर बोले—

तुम्हें तो सजा मिल चुकी है और वासुदेव को भी सजा ठीक ही मिली है।' तुमने सच कह कर प्रायश्चित कर लिया। वासुदेव को तुम्हारे गलत काम में सहयोग नहीं करना चाहिए था इसलिए वह सजा पाने का अधिकारी था।

जुगल प्रधानाध्यापकजी के पैरों पर गिर पड़ा। उन्होंने उसे उठाया और गले से लगा लिया।

'श्रीमानजी अब भविष्य में ऐसी गलती कभी नहीं होगी।'

'शाबाश! और देखो पँचकौड़ी से जाकर भी क्षमा माँग लेना।'

जुगल बाहर आग या। कुछ ही दूरी पर वासुदेव उसकी प्रतीक्षा मे खडा था।

'कहा गए थे ?' वासुदेव ने पूछा।

'सच स्वीकार करने।'

वाह र हरिश्चद्र !' वासुदेव हँसा।

तुम सच बाल सकत हो, ता मैं क्यो नही बोल सकता, और अभी तो पचकौडी स क्षमा माँगनी है। जुगल बोला।

'परा हिसाब तो ध्यान है न ? हम तीन साल म उसके सैकडो सतरे खा चुके हैं।' वासुदेव मुस्कराया।

'कुछ भी हो, गलती की है, क्षमा माँगनी पडेगी ।' जुगल बोला।

'जो हुक्म पर यार उसके हाथ म हमेशा जो डडा रहता है, वह तूने देखा तो है न ? गज भर का है और मोटा बाप रे !'

'दख अब मैं डरने वाला नही हू।'

बाते करत करत वे बाग मे बनी हुई कोठरी के पास आ गए। इसी कोठरी म पँचकौडी रहता था। दिन भर उसकी खाट बाग मे किसी वृक्ष के नीचे बिछी रहती थी और रात को कभी कोठरी मे, तो कभी बाग मे, जहाँ भी मौका लगता था, सो लता था। वे कोठरी के पास खडे हाकर सोच ही रहे थे कि एक ओर से पँचकौडी आता दिखाई दिया। हाथ मे डडा, बडी बडी मूछे, काला रग, जलती हुई आँखें पूरा छ फटा।

यार, मेरी हिम्मत ता जवाब द रही है।' वासुदेव बोला पर जुगल ने उत्तर नही दिया।

'क्या बात है र छाकरो ?' रोबीले स्वर मे पँचकौडी बोला।

जुगल ने एक साँस म सारी बात कह दी। पँचकौडी हसा।

'अरे ! गाँव मे और भी तो हैं जो चोरी करके सतरे खाते हैं तुमन भी खा लिए तो क्या हुआ आओ आओ तुम्हें मीठे सतरे दूँ। जब भी तबीयत करे, मुझसे माँग लिया करो।'

दोनो बालक हैरान थे। वे तो पचकौडी को राक्षस समझते थे निदयी पत्थर दिल वाला, पर यहाँ तो मामला उल्टा निकला। सतरे लेकर व खुशी-

खुशी बाहर आए।

बासू दुनिया भी अजीब है यार। जुगल सतरा खाता हुआ बोला।

बात तो मेरी भी समझ मे नही आई यार।'

खैर ! छोड मैं समझता हूँ यह सच्चाई का पुरस्कार है।'

दोनो अपने अपने घर की ओर चल दिए। वासुदेव घर पहुँचा, तो उसे लगा कि कही बाहर जाने की तैयारी हो रही है। उसकी बहन ने बताया कि वे गाव छोड रहे है और बम्बई जा रहे हैं।

'क्या ? वासुदेव ने प्रश्न किया।

मुझे पता नही माँ से पूछो।'

और उसने जब मा से पूछा तो उसे उत्तर मिला—'पिता से पूछो।'

और वह पिताजी के पास गया।

मेरी परीक्षा सिर पर है और '

बेटे हालात एसे हो गए हैं कि हम शिरढोणा म नही रह सकते। काफी ऋण भी हो गया था। मैंने बाग बेच कर ऋण चुका लिया है। बम्बई में कुछ काम करूँगा हालात सुधरते ही वापस आ जाएग। तुम बच्चे हो तुम्हे इतना ही समझ लेना काफी है।

वासुदेव ने फिर और प्रश्न नही किए। अगले दिन उसने जुगल को सारी बात बताई तो दोनो ही उदास हो गए।

जुगल मुझे याद तो रखोगे न ? भर्राए स्वर मे वासुदेव बोला।

मेरे दोस्त बचपन की मित्रता कभी नही भूली जाती।'

हम आज चले जायँगे। फिर न जाने कब मिलना हो।'

बम्बई कोई सात समुद्र पार थोडे हैं यार।'

'फिर भी दूर तो है ही। मुझे तो यही तेरा घर न जाने कितनी दूर नजर आता था। एक दिन नहीं मिलता था तो मन नही लगता था।'

वासुदेव की आँखें भर आइ। जुगल का दिल भी भर आया, पर उसने अश्रुओं को आँखो तक नही आने दिया। जुगल उस दिन स्कूल भी नही गया। दिन मे उसने अपने मित्र को विदा किया और फिर आकर रोता रहा।

२

मनुष्य की यह प्रकृति होती है कि जिस मिट्टी में वह जन्म लेता है, खेलता-कूदता है, उसकी खुशबू उसके रोम-रोम में बसी हुई होती है और गाँव की तो अपनी ही विशेषता होती है। प्रकृति की भरपूर छटा में स्वच्छंद मानव, विशेषतया बच्चे दिन भर विचरण करते रहते हैं, उन्हें गाँव की एक-एक गली का पता होता है, आदमी औरत, बड़-बूढ़े—कौन कैसा है प्रत्येक का पूरा विवरण उनके पास होता है। फलों के वृक्ष कहाँ कहाँ और कितने हैं किस पेड़ के फल ज्यादा मीठे होते हैं और किस समय उन्हें चोरी से तोड़ने की सुविधा होती है। किस की गाय या भैंस अधिक दूध देती है किसके घर की छाछ खट्टी होती है यह सब उन्हें बताने की जरूरत नहीं रहती। पक्षियों ने घोंसले कहाँ बना रखे हैं और उनमें कितने अण्डे हैं, अण्डे कब फूटे और बच्चे कब उड़े, यह भी उनसे छिपा नहीं रहता।

ऐसे माहौल से निकलकर, शहर के अपरिचित वातावरण में आना वासुदेव को बहुत खल रहा था। भरोसे के दोस्त भी नहीं बन पाए थे। यहाँ अंग्रेज उसे कदम कदम पर दिखते थे। उन्हें देखते ही उसका हृदय क्रोध से भर उठता था। उसे अपने पिताजी की सुनाई हुई कहानी याद आ जाती था।

इस प्रकार अंग्रेजों के प्रति घृणा उसे विरासत में मिली थी। बाद में १८५७ की क्रांति और उसके बाद की घटनाएं सुनकर उसकी घृणा दृढ़ होती गई। वासुदेव को पढ़ाई के लिए कल्याण भेज दिया गया। कल्याण में उसके रिश्ते के बाबा रहते थे। उन्होंने उसे सरकारी स्कूल में भर्ती करा दिया। वासुदेव मन लगाकर पढ़ने लगा। यहां उसके दो ही काम रहते थे—अध्ययन और चिंतन-मनन। गांव की अपेक्षा यहां स्वाधीनता-आंदोलन की सूचनाएं अधिक मिलती थीं। एक दिन उसने सुना कि कानपुर के निकट अंग्रेजों ने एक गांव को घेरकर आग में झोंक दिया और एक भी ग्रामवासी को जीवित बाहर नहीं निकलने दिया। उसका नन्हा हृदय बेचैन हो उठा। स्कूल में उसके हृदय की बात सुनने के लिए कोई तैयार नहीं था। शाम को घर पहुंच कर उससे रहा नहीं गया तो उसने बाबा से बात शुरू की। बाबा उसकी भावनाओं को समझते थे, पर उसे प्रोत्साहित नहीं करते थे क्योंकि उनके विचार में यह उम्र पढ़ने की थी। फिर भी कभी-कभी उसका मन रखने के लिए चर्चा कर लेते थे। आज भी वह समझ गए कि वह किसी खास मुद्दे पर बातचीत करने आया है। वे मधुर वाणी में बोले—

'आओ—वासू।'

'बाबा—आपने सुना?'

'क्या?'

'कानपुर के पास अंग्रेजों ने क्या किया?'

'चर्चा सुनी तो है। भाई, मैं एक बात कहता हूं। बर्रों को छेड़ोगे, तो वे काटेंगे ही।'

'बर्रें! बाबा, कुत्ते कहो।' घृणापूर्ण स्वर में उसने कहा। बाबा हंसे और काफी देर तक हंसते रहे। वासुदेव समझ नहीं पाया कि हंसी का क्या कारण है।

'वासू, कुत्ते को छेड़ोगे, तो वह भी काटे बिना नहीं रहेगा।'

'लेकिन बाबा कुत्ते और बर्रों में एक अंतर है। कुत्ता डंडा पड़ते ही जरूरी नहीं कि मुकाबला करे, वह भागेगा, पर बर्रें मुकाबला करते हैं, भागते नहीं हैं।'

'चलो तुम्हारी बात मान ली। सीधी सी बात है उनके पास ताकत है, इसलिए वे अत्याचार तो करेंगे ही।'

'हम करोड़ों हैं फिर भी उन्हें ताकतवर मानते हैं। वे हैं ही कितने—मुट्ठी

भर ।'

शक्ति होती है एकता में मेरे बच्चे । हम बँटे हुए हैं । हमने हमेशा इसलिए मात खाई है । फिर भी आज तक सबक नहीं सीख पाए ।'

'यह बात आपने ठीक कही ।' वासुदेव सन्तुष्ट होकर बोला ।

बाबा भी मुस्कराए ।

'अब तुम जाओ—खेलो कूदो । समय पर आ जाना ।'

वासुदेव समझ गया कि अब बाबा बात नहीं सुनेंगे । वह चला गया । अभी कुछ ही दूर जा पाया था कि पीछे से एक औरत ने उसे पुकारा । वह उनके पड़ोस में रहती थी । निकट आकर वह बोली—

'बेटे, एक काम कर दोगे ?'

'जरूर, बताइए क्या काम है ?'

'तुम खेल के मैदान की ओर जा रहे हो न ?'

'जी हाँ ।'

'मट्टू को घर भेज देना । वह वहीं कहीं खेलने में लगा होगा ।'

'जी, जाते ही भेज दूंगा ।'

वह आगे बढ़ गया । कुछ ही दूर जाने पर एक चौकोर सी जगह आई । बालकों ने उस स्थान को अपने खेल के लिए बना रखा था । वहाँ कुछ वृक्ष भी थे । उसने इधर-उधर नजर दौड़ाई । दूर एक पेड़ के नीचे मट्टू किसी के साथ बैठा हुआ था । वासू तेज कदमों से उसकी ओर बढ़ा । समीप पहुँचने पर वह क्षण भर के लिए ठिठक गया । मट्टू किसी गोरे के साथ बैठा बातें कर रहा था ।

'मट्टू ।' उसने कुछ दूर से ही पुकारा ।

'अरे ! वासू क्या बात है ?' मट्टू उठा और उसके साथ ही वह गोरा भी उठ खड़ा हुआ ।

'तुम्हारी माँ ने फौरन बुलाया है ।'

'अच्छा । इनसे मिलो ।' मट्टू ने गोरे व्यक्ति से उसका परिचय करवाना चाहा, पर वासु रूखे स्वर में बोला—

'मैं यहाँ खेलने आया हूँ, किसी से मिलने नहीं ।'

'मेरा नाम डा० विल्सन है, गोरा बोला।'

आपका नाम कुछ भी हो, मुझ उससे क्या लेना देना?'

'इन्सान का इन्सान से लेना देना तो चलता ही रहता है।'

'आप इन्सान हैं! वासुदेव व्यंग्य से बोला।

'तो भाई क्या मैं आपको जानवर नजर आ रहा हूँ। मान ला शरीर से मैं जानवर जैसा नजर आ भी रहा हूँगा, पर दिल स मैं इन्सान हूँ।'

'अगर ऐसी बात है तो मुझे हैरानी है।'

'मैं चला' मटरू जाते हुए बोला।

'आइए उधर बठकर बातें करें' विल्सन ने कहा।

वासुदेव न चाहते हुए भी उसकी ओर खिंच गया। दोनों बठ गए। विल्सन मीठे स्वर मे बोला—

'आप शायद अंग्रेजों को इन्सान नहीं समझते।'

'आपने बिल्कुल ठीक सोचा।'

'आखिर क्यों?'

'यह मेरा अपना मामला है।'

'आप समझदार नजर आते हैं, किन्तु सबको एक लाठी से तो नहीं हाँकना चाहिए।

'यह वास्तव मे मेरी गलती है।'

'हम भारत मे दो पीढ़ियों से हैं। मेरा जन्म यहीं हुआ यहीं मैं पढ़ा लिखा हूँ। यहाँ के लोगों को मैंने देखा है, परखा है। भारतीय बहुत अच्छे हैं बहुत अच्छे। अंग्रेज उनके साथ अच्छा व्यवहार नहीं कर रहे हैं। वह रुका।

वासुदेव उसस काफी प्रभावित हुआ। प्रसन्नता भरे स्वर मे वह बोला—

'आप मुझे 'तुम' कहें मैं तो आपसे बहुत छोटा हूँ' मैं आपकी मित्रता स्वीकार करता हूँ।'

विल्सन को भी खुशी हुई। वासुदेव के सपाट और साफ लहजे से, वह बहुत प्रभावित हुआ था।

धन्यवाद मेरे दोस्त। मुझे इस बात को मानने म कोई हिचक नहीं है कि एक इन्सान को दूसरे इन्सान स जसा व्यवहार करना चाहिए, अंग्रेज वसा

नहीं कर रहे हैं।'

'इसी बात को मैं सोचता रहता हूँ।'

'तुम लोगों के विरुद्ध और भी षड्यन्त्र किए जा रहे हैं। तुम अभी बच्चे हो, गहराई से इन बातों को नहीं जान पाओगे।'

'आप मुझे बताइए, मैं समझने की कोशिश करूँगा।'

'बड़े उतावले हो।' विल्सन हँसा और बोला— इन सब बातों को जानने के लिए, तुम्हें मैं पुस्तकें दूँगा। पढ़ो और सोचो। पर हाँ—अंग्रेजी तुम्हें आती है न?'

'नहीं, मेरे पिता जी नहीं चाहते कि मैं अंग्रेजी पढ़ूँ।'

'भाषा से बैर क्यों? तुम्हें अंग्रेजी पढ़नी चाहिए।'

'इससे लाभ क्या है?'

'सबसे बड़ा लाभ तो यह है कि तुम्हें पता लगेगा कि अंग्रेज तुम लोगों के बारे में क्या लिख रहे हैं।'

'आप ठीक कह रहे हैं—मैं सीखूँगा, अंग्रेजी सीखूँगा। आप सिखाएँगे?'

'जरूर।'

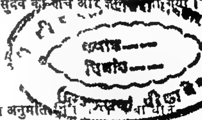
और इस प्रकार वासुदेव घर वालों के विरोध के बावजूद भी डॉ० विल्सन से अंग्रेजी सीखने लगा। वह धुन का पक्का तो था ही। विल्सन की मित्रता से उसे लाभ भी हुआ। यद्यपि अभी कई बातों को वह गहराई से नहीं समझ पाता था, फिर भी उसकी समझ में कुछ बातें गहराई तक बैठ गईं, जैसे कि भारतीयों का शोषण हो रहा था। उनके साथ उन्हीं के देश में गुलामों का सा व्यवहार किया जा रहा था। विल्सन उसे अंग्रेजी-लेखकों की पुस्तकों के चुने हुए अंश सुनाता और फिर दोनों उस पर चर्चा करते। वासुदेव की रुचि और [illegible]

एक दिन विल्सन बोला—

'मैं बम्बई जा रहा हूँ—चलोगे?'

'बाबा से पूछना पड़ेगा।'

'पूछ लेना।'



वासुदेव ने बाबा से पूछा तो उसे सहर्ष अनुमति [illegible]

मैं तुम्हें बताना भूल गया था। बलवंतराव का समाचार आया था कि

सरस्वती तुम्हारे लिए चिंतित हो रही है।'

'उनकी तो यह हमेशा की आदत है।'

'बेटे, माँ बाप का दिल ही ऐसा होता है। दो चार दिन रहकर आ जाना।'

'जी ठीक है। विल्सन साहब भी जा रहे हैं उनके साथ ही चला जाऊंगा।'

बम्बई मे पाँच दिन रहकर वे खूब घूमे। विल्सन समझदार था। वासदेव के पिता से मिलने के लिए उसने कोई जिद नही की। वासुदेव के जरा से इशारे को वह समझ गया था। दोनो निश्चित जगह पर मिलते और फिर घूमने निकल पडते। विल्सन ने उसे ऐसे स्थान भी दिखाए, जो सार्वजनिक थे, पर भारतीयों को वहा घुसने की इजाजत नही थी।

'ओह! मेरे कारण आप भी वहाँ नही जा सकते।' वासुदेव दुखी स्वर में बोला।

'मैं वहाँ जाना चाहता तब न?'

एक दिन दोनो बन्दरगाह पर आए। वासुदेव ने पहली बार जहाज देखे थे।

'अन्दर देखना चाहोगे?' विल्सन ने पूछा।

'आप मेरे मन की बात जान जाते हैं!' मुस्कराकर वासुदेव बोला।

चलो।

विल्सन के साथ होने के कारण किसी ने टोका टाकी नही की। वह उसे जहाज के गोदाम मे भी ले गया।

'ऐसी गाँठें बन्दरगाह पर भी पडी थी। इनमे क्या है?' वासुदेव ने पूछा।

'यही बताने के लिए तो मैं तुम्हे यहाँ लाया हूँ। इन गांठो में रुई है। इन्हें इग्लैण्ड ले जाया रहा है। कौडियो के भाव इन्हे खरीदा गया है। वहाँ इनसे कपडा बनाया जाएगा और फिर यहाँ लाकर बेचा जाएगा। इस प्रकार कई गुना लाभ ये लोग कमा लेंगे। आओ वापस चलें।'

'कपडा बनाने के कारखाने यहाँ भी लग सकते हैं?' वासुदेव ने जहाज की सीढियाँ उतरते हुए कहा।

'यहाँ कारखाने लगाकर अंग्रेजो को अपने पैरो पर कुल्हाडी मारनी है क्या?'

बम्बई में रहते हुए माँ ने वासू को खूब खिलाया। एक बार फिर माँ के आँचल से उसने विदा ली और कल्याण आ गया। विल्सन को अभी बम्बई में ठहरना था।

• ३

कल्याण पहुँचकर वह पढ़ाई पर जुट गया। बाल-हृदय पर लगे आघात चिरस्थायी होते हैं। बचपन की स्मृतियाँ सदाबहार होती हैं। एक-एक घटना जीवन में मौके-बेमौके याद आती रहती है और कुछ तो जीवन का अंग ही बन जाती हैं। वासुदेव एक एक रणबांकुरे क्रान्तिकारी के बारे में अधिक से अधिक जानने का प्रयास करता। उनकी शहादत एक ओर उसमें चेतना उत्पन्न करती, तो दूसरी ओर उसके हृदय को चोट पहुँचती। वह सोचता, 'भारतीय सोए क्यों है? उनका खून क्यों नहीं खौलता? क्या उन्हें आजादी नहीं चाहिए? देश के लिए मरने वालों का बदला वे क्यों नहीं लेते? सारा भारत एक होकर एक स्वर में अपना अधिकार क्यों नहीं माँगता?' ऐसे ही और भी कई प्रश्न उसके मस्तिष्क में कौंधते रहते थे। धीरे धीरे, जैसे जैसे उसे इन प्रश्नों का उत्तर मिलता गया, वैसे वैसे एक इच्छा एक ललक उसके मन में समाती गई कि उसे भी कुछ करना चाहिए। यह ज्योति, जिसे ये शहीद प्रज्ज्वलित कर गए हैं, उसे बुझने नहीं देनी चाहिए। उसे सफलता न भी मिले, तो कोई बात नहीं है। उसके बाद अन्य लोग इस दीपक को जलाए रखेंगे और फिर एक दिन ऐसा आएगा कि जिस नींव की ईंटें ये लोग बने हैं, उस पर आजादी का भव्य भवन खड़ा हो जाएगा।

कुछ सवाल ऐसे भी थे, जो भटकन पैदा कर देते थे। विल्सन से पूछने पर वह एक ही जवाब देता है—'वासू, इन प्रश्नों का उत्तर तो कार्यक्षेत्र में उतरने के बाद ही मिलेगा। तुम्हें मैं अब एक सलाह देना चाहूँगा कि अंग्रेजी-लेखकों की रचनाओं के साथ-साथ अपनी भाषा की रचनाओं को भी पढ़ो। इस तुलनात्मक अध्ययन से तुम्हें अपने विचार बनाने का मौका मिलेगा और साथ ही कई प्रश्नों के उत्तर भी मिल जाएंगे।'

'आपका विचार ठीक है, पर अभी अंग्रेजी भाषा पर मेरी इतनी पकड़ कहाँ हो पाई है ?'

हो जाएगी—तुम्हारी सीखने की गति से मैं खुद अचम्भित हूँ। अपनी गति बनाए रखो।'

समयचक्र घूमता रहा। स्वाभाविक गति से जीना मरना लगा हुआ था, पर कुछ लोग मरकर इतिहास बनते रहे। समय की निर्बाध गति और मौत के मुहँ पर करारा थप्पड़ जमा कर हमेशा के लिए अमर होते रहे। ऐसे लोग जन-जन की चर्चा का विषय बन गए। वासुदेव के हृदयोद्गारों का क्षेत्र बढ़ता गया। काई छँटती गई।

दो वर्ष व्यतीत हो गए। इसके बाद उसके जीवन में अस्थिरता व्याप्त रही। कभी बम्बई तो कभी पूना। अध्ययन अस्त-व्यस्त जरूर रहा, लेकिन देश प्रेम की भावना दृढ़ और बलवती होती गई। विचार परिपक्व होते रहे। अब वह पन्द्रह वर्ष का हो गया था। सन् १८६० चल रहा था। एक दिन उसका विवाह भी कर दिया गया। सहधर्मिणी बनी मलूताई। अब वह माँ बाप पर बोझ नहीं बना रहना चाहता था। कुछ दिन बम्बई के जी० आइ० रेलवे के दफ्तर में नौकरी की। यह नौकरी उसे विल्सन की सिफारिश पर मिली थी। सिफारिश करवाने के बाद जब वह विल्सन के साथ आफिस से बाहर आ रहा था, तो विल्सन मुस्कराकर बोला—

नौकरी तो तुम्हें मिल गई है।'

धन्यवाद।

पर मैं तो कुछ और ही सोच रहा हूँ।'

वासुदेव ने प्रश्नात्मक मुद्रा में उसकी ओर देखा तो उसने हँसकर कहा—

तुम्हारी यह नौकरी अधिक दिन नहीं चलने की।'

लेकिन क्यों ? मैं कामचोर तो नहीं हूँ ?

मैं जानता हूँ तुम हद से ज्यादा परिश्रमी हो, पर तुम्हारी भावनाएँ दबकर रह पाएँगी क्या ?'

वासुदेव सोच में पड़ गया। विल्सन ने उसकी ओर देखा और उसके कंधे पर हाथ रखकर स्नेहसिक्त स्वर में कहा—

'परवाह नहीं— भावनाएँ दबाना मत नौकरी और मिल जाएँगी। सर उठा कर जीना।'

विल्सन वापस चला गया और वासुदेव नौकरी करने लगा। उसे अँग्रेजों का व्यवहार बहुत खलता था। अपने मातहत कर्मचारियों से, कुलियों से, यात्रियों से, ये तानाशाही का व्यवहार करते थे। एक दिन उसके एक साथी से अंग्रेज अफसर की झड़प हो गई। अँग्रेज अफसर ने उसके साथी को निर्दयता से पीटा और फिर हुक्म दिया—

'टुमारा नौकरी कल से खटम हाय।'

'नहीं—नहीं, ऐसा मत करिए। मेरे बच्चे भूखों मर जाएँगे।' वह अफसर के पैरों पर गिर गया।

अँग्रेज ने उसकी पसलियों पर जूते की ठोकर मारी।

'ओ ! यू बिच् का बच्चा रास्कल हरामी कुट्टा हाय। नौकरी करना नाय माँगता। यू गो आउट फ्राम हियर नानसेंस। संटरी संटरी।'

वर्दी पहने हुए संतरी ने आकर सलाम ठोका।

'हम इसको बाहर फेंकना मांगटा हरिअप'

संतरी, उस रोते चिल्लाते व्यक्ति को घसीट कर बाहर ले गया। वासुदेव का खून खौल रहा था, किंतु विल्सन के शब्द उसे याद आए और पूरी घटना को वह निर्निमेष आँखों से देखता रहा। इसके बाद उससे काम नहीं हो पाया। वह कुर्सी पर चुपचाप बैठा रहा।

'यही कारण है कि देश के लिए कोई मरता है, तो दूसरे चुप क्या रहते हैं। यही कारण है कि एक स्वर एक आत्मा से आजादी का राग नहीं अलापा जाता है। पेट के लिए परिवार के लिए नौकरी के लिए, प्रताड़ना सह सह कर इंसान पत्थर बन जाता है। भावना शून्य हो जाता है। मैं उसकी मदद नहीं कर पाया, क्योंकि मुझे अपनी नौकरी की चिन्ता थी। कुछ दिनों बाद इसी प्रकार मैं भी इस गोरे के जूतों की ठोकर खाऊँगा। नहीं नहीं अगर मेरे साथ ऐसा हुआ तो मैं मैं ठोकर मारने वाले को जीवित नहीं छोड़ूंगा।'

शाम को घर जाकर उसने सारी घटना पत्नी को बताई तो वह बोली—

'उसकी गलती रही होगी, तभी तो पिटा है। आपको बीच में बोलने की

जरुरत नही है।'

दफ्तर उसके बाप का है क्या ?' आवेश मे वासुदेव बोला।

'वह अफसर है उनका राज है।'

तुम नही समझाओगे।' गुस्से म वह बाहर निकल गया। घूम फिर कर, जब वह वापस आया, तो भावनाएँ कुछ शात हो चुकी थी। काफी दिनों तक फिर अँगार राख मे ढके रहे। इसी बीच मे उसकी पत्नी को उसके पास छोड़कर, परिवार पुन अपने पैतृक गाँव लौट गया था। वह महीने के महीने उनके लिए रुपए भज देता था, ताकि उनका खर्चा चलता रहे। अब वह पूण स्वाधीन हो गया था। रात गए घर लौटता। उसे ऐसे कुछ नवयुवक मिल गए, जो अग्रजो के विरुद्ध थ। खुल कर चर्चाएँ होती, विचार विमश होता। यदा-कदा विल्सन भी आता रहता था और हँस कर हमेशा एक जसे शब्दो का उच्चारण करता था—

'नौकरी अभी तक चल रही है ?

वासुदेव हँस कर उत्तर देता—'आपके कथन को गलत सिद्ध करना है न ?'

दोनो खिलखिला कर हँस पड़ते, और फिर एक दिन ऐसा आया कि विल्सन का कथन सही सिद्ध हो गया। दोपहर का समय था। वासुदेव ऑफिस मे बठा काम कर रहा था कि चपडासी ने आकर कहा— आपको साहब बुला रहे हैं।'

आया। कह कर वह फिर से काम मे लग गया।

अफसर नया और कुछ खुर्राट किस्म का आदमी था। हिदुस्तानी कमचारी उसे फूटी आँखो नही सुहाते थे। पाँच मिनट भी नही हुए थे कि वह खुद ही वासुदेव के पास आ धमका आते ही बडे असभ्य ढंग से वह बोला— यू ब्लक मैन हम टुमको बुलाया।'

मैं आ ही रहा था। गुस्से को पीकर वासुदेव बोला।

आ ! व्हाट यू आर सेइग नानसेंस आडर इज आडर यू मस्ट ओबे इट डमफूल।'

'सर—हम दोनो ही पढे लिखे हैं। हमे सभ्य भाषा का प्रयोग करना चाहिए।'

डॉट टीच मी यू स्वाइन्।'

'यू आर स्वाइन् आई हेट यू अन्डरस्टैंट आई हेट एवरी इग्लिशमैन,

ए डाग ए`ड स्वाइन इज बैटर दैन यू वी इंडियनस आर बैटर दैन यू। आ'म नॉट युअर स्लेव। वी आर मास्टर आफ आवर कन्ट्री।'

'अंग्रेज अफसर अवाक् रह गया। सभी कर्मचारी सहमी निगाहों से उन दोनो की ओर देख रहे थे। अफसर बडबडाता हुआ चला गया। कर्मचारियो मे टीका-टिप्पणी होने लगी।

'नौकरी तो तेरी गई—यार !' एक कर्मचारी बोला।

'मैं ऐसी नौकरी पर थूकता हू।' वासुदेव अभी तक गुस्से मे था।

'तेरी हिम्मत की दाद देनी पडेगी—यार। समझ मे नही आया, वह इतना कुछ सुन कैसे गया,?' दूसरा एक कर्मचारी बोला।

सुनता नही तो क्या करता मार खाना क्या साला ? वासुदेव बोला।

'सही बात है- यार। हम नौकरी करते हैं गुलाम तो नही हैं।' एक अधेड कर्मचारी बोला।

'गुलाम हैं ? हम गुलाम। तभी तो कुत्तो से भी गई गुजरी जिंदगी जी रहे हैं गालियाँ खा रहे हैं इनका काम कर रहे हैं। आज, अगर हम लोगो मे इतना स्वाभिमान जाग जाए कि इनकी नौकरी को हम लात लगा सकें, तो ये हाथ जोडकर नौकरी दे।'

'कह तो ठीक रह हो—यार पर।'

यही 'पर' तो हमे खा रहा है। खैर ! छोडो, तुम लोग अपना काम करो। मैं जा रहा हूँ। इस गोरे को कह देना कि अपनी नौकरी किसी ऐसे आदमी को दे दे, जो इसकी गुलामी कर सके।'

वासुदेव फिर कभी इस ऑफिस मे न आने की कसम खाता हुआ चला गया। खुली हवा म आने के बाद उसकी विचारधारा ने पलटा खाया।

'मैं तो आ गया, लेकिन इसने अगर कोई पुलिस कार्रवाई की तो ?' और उसी शाम को उसने अपना निवास-स्थल बदल लिया। दो दिन कुछ नही हुआ। तीसरे दिन उसका एक मित्र मिला।

'घर बदल लिया क्या ?'

'हाँ—और आफिस का क्या हाल-चाल है ?'

'ठीक है—तुम्हें बुलाया था।' मित्र बोला।

'क्या ? अब उसका मुझ से क्या लेना, देना है ?'

'उसने तुझे नौकरी से नहीं निकाला है।

'लेकिन मैं अब उस अफसर के नीचे काम नहीं करूँगा।'

'तुम्हारा विभाग बदल देगा—यार।'

'उससे क्या होगा ? हैं तो एक ही थली के चट्टे-बट्टे। एक साँपनाथ, तो दूसरा नागनाथ। मुझे अब उस आफिस में नौकरी करनी ही नहीं है।'

'तुम्हारी इच्छा है—भाई। मित्र बोला।

मैं इनकी नस्ल को पहचानता हूं। कहीं गलत सलत फँसाकर बदला ले लेगा। नौकरी तो गई गई, साली चक्की और पीसनी पड़ेगी।'

'यह तुम्हारे सोचने की बात है। बस उसका कहना है कि अगर तुम लिखित में माफी माँग लो तो वह तुम्हें क्षमा कर देगा।'

'माफी क्यों ? पहले उसने गालियाँ दी थी या नहीं ? उसे कह देना कि माफी तो उसे माँगनी चाहिए।'

'कह दूंगा। एक बात है—यार, सीधा तो हो गया है—साला। पहले बात बात पर आँखें दिखाता था पर अब तो भीगी बिल्ली बना अपने कमरे में दुबका रहता है।'

'एक होकर रहो—इनकी मजाल नहीं है कि बेवजह दबाएँ।'

मित्र चला गया। वासुदेव घूम फिर कर घर पहुँचा। पत्नी को सारी बात बताई।

'यही मैंने सोचा था कि एकाएक घर कसने की क्या जरूरत पड़ गई।

'तुम डरी तो नहीं ?

डर कैसा ? पर अब नौकरी का क्या होगा ?

'तुम कहो तो माफी माँग लूं।' उसने पत्नी के मन की थाह लेने के लिए कहा।

'माफी क्यों ? कसूर उसका था।' वासुदेव का मुख चमक उठा।

'तुम चिंता मत करो। मैं तलाश में हूं। दूसरी नौकरी मिल जाएगी।' वह भविष्य की सोच में डूब गया।

४

दस दिन हो गए थे। एक दो जगह नौकरी का जुगाड बैठा, पर वासुदेव को पसन्द नही आया। आज भी वह थका हारा वापस आ गया। बैठे बैठे उसने सोचा, क्यो न जाकर विल्सन से मिल लिया जाए। पत्नी से राय लेकर, वह सीधा विल्सन के घर पहुचा। विल्सन ने उसको देखते ही अपना पुराना वाक्य दोहराया—'नौकरी चल रही है न?'

'नही।'

'चलो—इतनी भी चला ली, बहुत है।' वह मुक्त कंठ से हँसते हुए बोला।

'आप हँस रहे हैं मेरी जान पर बन रही है।'

'हुआ क्या?'

वासुदेव ने सारी घटना अक्षरश बयान कर दी।

'ठीक किया। तुम्हारी जगह अगर मैं होता, तो मैं भी यही करता।'

'जो होना था—हो चुका। अब मुझे क्या करना चाहिए?'

'तुम्हें सबसे पहले खा पीकर आराम करना चाहिए। कल अपने बाबा से मिलो। दो चार दिन मुझसे गप्प शप्प करो। इतने मे कोई न कोई रास्ता निकल ही आएगा।'

'आप मजाक करने मे लगे हुए हैं।'

'नही भाई, मैं बिल्कुल मजाक नही कर रहा हूँ। अच्छा, तुम उठो—नहाओ-धोओ। मैं तुम्हारे लिए भोजन की व्यवस्था करता हूँ।'

'मैं अधिक नही रुक सकता। पत्नी वहाँ अकेली है।'

'ओह! खैर—आज तो रुकना ही पडेगा। कल मैं तुम्हारे साथ चलकर देखूगा कि तुम्हारे लिए क्या कर सकता हूँ।'

दोनो ने बैठकर अपने-अपने मन के गुबार निकाले। समय चुटकी बजाते निकल गया। दूसरे दिन बम्बई पहुँचकर विल्सन, वासुदेव को लेकर अपने कई मित्रो के पास गया। वे वासुदेव का नाम सुनते ही नाक-भौंह सिकोड लेते थे। पूछने पर उसकी कारस्तानी का हवाला दे देते।

एक होटल में घुसते हुए विल्सन बोला—'पहले भोजन कर लें, फिर विचार करेंगे। वैसे बम्बई में तुम्हारी काफी तारीफ हो रही है।'

भोजन होता रहा और बातें भी चलती रहीं।

'आपने एक बात पर गौर किया ?'

'किस बात पर ?'

'मेरी तारीफ तो सबने की, लेकिन उन महाशय की गलती तो किसी ने नहीं बताई।

'एक अंग्रेज कभी दूसरे अंग्रेज की बुराई नहीं करता।'

'लेकिन आप '

'मेरी बात छोड़ो। मैं अपने टाइप का कुछ अलग ही इंसान हूँ।'

'उन्हें निष्पक्षता तो बरतनी चाहिए।' वासुदेव बोला।

निष्पक्षता बिना सच्चाई के निभ नहीं सकती और सच्चाई को देख पाना बहुत मुश्किल काम है। सच्चाई को देखा था ईसा ने इसलिए उसे सूली पर चढ़ने पर भी कोई हिचक नहीं हुई। अब तो लोग लकीर पीटने पर लगे हुए हैं धर्म की आड़ लेकर अपना स्वार्थ पूरा कर रहे हैं और पूरा संसार ऐसा कर रहा है।'

'हम लोगों ने धर्म की परिभाषा को गलत रूप में ले रखा है। भलाई की जगह इससे हानि अधिक हो रही है। इंसान इंसान को शक की दृष्टि से देखता है। होना तो यह चाहिए कि इंसान इंसान को पहचाने, पर यहां तो खाई बढ़ रही है।'

'बिल्कुल सही है। आज तुम गोरे होते और अपने अफसर के साथ ऐसी हरकत कर भी लेते तो तुम्हारा कुछ नहीं बिगड़ता। काला ईसाई अगर ऐसी हरकत करता, तो उसे डाँट फटकार कर क्षमा कर दिया जाता, किंतु तुम्हारी जाति दूसरी, तुम्हारा धर्म दूसरा, इसलिए तुम सख्त सजा के हकदार हुए। यह है धर्म की महिमा।'

दोनों ने भरपेट भोजन कर लिया था। विल्सन ने रुपए चुकाए और वे बाहर निकल आए। पुनः नौकरी तलाशने का नया दौर आरम्भ हो गया। अभी कुछ ही दूर गए थे कि विल्सन रुका और बोला—'अरे! याद आया। मेडीकल

कॉलेज चलते हैं।'

'मैडिकल कॉलिज ! क्यो ?'

'वहाँ मेरा एक दोस्त है। लँगोटिया यार कहो। तुम्हारा काम शायद हो जाए और मेरा भी एक काम है।'

'आपका क्या काम है?'

'मैं तुम्हें बताना भूल गया था कि पिछले सप्ताह मुझे दिल का हल्का दौरा पड़ा था। चक्कर भी करवा लगा।'

'आपको अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखना चाहिए। मैंने आपको नाहक कष्ट दिया।'

'अरे ! छोड़ो, मैं इन बातों की परवाह नहीं करता।'

वे मैडिकल कॉलिज पहुँचे। विल्सन सीधा अपने मित्र के पास गया। दोनों शायद बहुत खुले हुए थे। विल्सन का मित्र ऊँची आवाज में बोला—

''मैंने तो तुम्हारे बारे में सोचना ही छोड़ दिया था।'

'अरे ! हरबट, ऐसी क्या बात है—भाई।'

'बात कोई खास नहीं है। मैंने सोचा कि अब तो तुमसे कब्रिस्तान में ही मिलना होगा।' दोनों खिलखिला कर हँस पड़े।

विल्सन बोला—'तो तुम आखिर मुझे कब्र में पहुँचा कर ही दम लोगे।'

'दोनो चलेंगे भाई, दोनों।' हरबट बोला।

'तुम्हारे मैडिकल कॉलिज में कोई नौकरी है क्या? कोई खाली जगह हो, तो बताओ?'

'है तो सही—तुम नौकरी करोगे क्या?'

'मैं नहीं यार, मेरा यह मित्र करेगा। इनका नाम वासुदेव है। पहले रेलवे में नौकरी करते थे। इनके अफसर ने इन्हें 'कुत्ता' कह दिया, तो इन्होंने तपाक से उत्तर दिया कि आप भी कुत्ते हैं और फिर घर रवाना हो गए।'

विल्सन ने सम्पूर्ण घटना कुछ ऐसी मजाकिया शैली में व्यक्त की कि तीनों ही हँस पड़े। हरबट भी कुछ-कुछ मुक्त और उदारहृदयी पुरुष था, फिर भी वह विल्सन जितना खुले दिल और दिमाग का आदमी नहीं था। क्षण भर उसने कुछ सोचा और फिर बोला—

'विल्सन, मैं तुम्हारी बात नहीं टाल सकता। मिस्टर वासुदेव को नौकरी मिल जाएगी पर पुनः ऐसी कोई हरकत करने पर, मुझसे ये सहयोग की अपेक्षा न करें। साफगोई के लिए माफी चाहूंगा।'

'मेरा विचार है, ऐसी स्थिति में ये खुद ही नहीं चाहेंगे कि तुम इन्हें सहयोग दो। क्यों मिस्टर वासुदेव ?' विल्सन, वासुदेव की ओर देख कर बोला।

आपने बिल्कुल ठीक कहा।' वासुदेव ने संक्षिप्त उत्तर दिया।

एक काम तो हो गया।' विल्सन बोला।

दूसरा भी कोई काम है क्या ?' हरबर्ट बोला।

'घबरा रहे हो क्या ?'

'नहीं तो।'

मैं खुद का चैकअप करवाना चाहता हूँ। हार्ट की शिकायत है।'

हार्ट के वाल्व ज्यादा खुले रखना होगा।' हरबर्ट हँसा।

वह तो पुरानी आदत है।'

'चिन्ता मत कर, तू मरने वाला नहीं है मेरे साथ आओ।'

तुम यहीं बैठना। —कह कर, विल्सन हरबर्ट के पीछे पीछे बाहर निकल गया। वासुदेव को खुशी थी कि फिर से रोटी रोजी का प्रबन्ध हो गया। बैठा बैठा वह विल्सन और हरबर्ट की एक दूसरे से तुलना करता रहा। काफी देर गए विल्सन लौटा। चेहरे पर वही मुस्कान और वाणी में वही जिंदादिली।

जिन्दा रहा तो फिर मिलेंगे।' वासुदेव को चलने का इशारा करते हुए वह हरबर्ट से बोला।

मैंने कहा न, कि तू जल्दी नहीं मरने का।' जवाब मिला।

हरबर्ट उन्हें छोड़ने बाहर तक आया। उसने दोनों से हाथ मिलाया। जाते जाते विल्सन ने पूछा—

वासुदेव कल से आ जाए ?'

'हाँ, कल से आ सकते हैं।'

मार्ग में चलते चलते वासुदेव ने पूछा—'चैकअप हुआ ?'

'हाँ।

'क्या बताया ?'

'इन लोगों का एक ही काम है ऐसा मत करना वैसा मत करना। इंसान को इतना बांध देते हैं कि वह काफी पहले ही मौत चाहने लगता है। क्यों ? है न ठीक बात ? उसने अपना चिरपरिचित ठहाका लगाया।

वासुदेव ने जवाब नहीं दिया।

'मौत जब आती है तो ढोल बजाकर नहीं आती। अगर उसे इंसान की चिन्ता होती, तो वह कुछ ऐसा इन्तजाम कर सकती थी कि अपने आने का कोई संकेत देती। बेचारा इंसान अपना कुछ तो बचाव करता। अब, जब उसके आने का समय ही नियत नहीं है तो हम डरें क्यों ?' वासुदेव के घर पहुंचकर, शाम का भोजन कर काफी रात गए तक वे बतियाते रहे।

मैं आप से एक सवाल पूछूं ?' वासुदेव बोला।

'पूछो।'

'१८५७ में जो ज्योति जलाई गई थी, मुझे लगता है वह बुझने को है।'

बुझने को है पर बुझेगी नहीं। तूफान के झोंकों से लहरा रही है। शीघ्र ही सैकड़ों हथेलियां उसे आड़ देंगी। वह और भी प्रखर रूप से जलेगी।'

आप मेरा मन रखने के लिए कह रहे हैं ?

'नहीं मैं सच कह रहा हूं। तुमने देखा होगा कि समुद्र में तूफान आने से पहले शान्ति छा जाती है।

'हां कुछ दिन पहले मैंने इसका प्रत्यक्ष अनुभव किया। एक मछेरे की नाव में, मैं समुद्र की लहरों का आनन्द लेने गया था। अभी हम कुछ ही दूर जा पाए थे कि मछेरे ने नाव वापस मोड़ ली। मेरे पूछने पर उसने उत्तर दिया था कि तूफान आने वाला है। मैं समझा वह मुझे मूर्ख बना रहा है। कहीं कोई चिह्न नहीं शान्त समुद्र ठहरी हुई हवा, किन्तु तट पर आने-आते लहरों के थपेड़े भयानक होने लगे। बाद में मैंने सुना कि उस दिन के तूफान ने काफी नुकसान किया था।

तुम पढ़ रहे होगे। ब्रिटिश सरकार इस क्रान्ति के बाद काफी उदारता दिखा रही है। अपने बचाव के लिए दीवारें बना रहा है लेकिन मुझे लगता है कि अगला तूफान आखिरी फैसला करके रहेगा। हां, समय लग सकता है।'

विल्सन की आवाज से लग रहा था कि उसे नींद आ रही है इसलिए वासुदेव

को कहना पड़ा—'अब आप सो जाएँ।'

प्रातः विलसन चला गया। वासुदेव भी नहा धोकर अपनी नई नौकरी पर रवाना हुआ। हरबट ने उस उसका काम समझाया। दिन भर वह काम म व्यस्त रहा। उसने मडिकल कॉलेज म भी वही पुराने खटराग पाए। वह देखता था कि अग्रेज डाक्टर भारतीय मरीजो से कैसा अभद्र व्यवहार करत थ। उन्हें किसी प्रकार की सुविधाए उपलब्ध नहीं करवाई जाती थीं। यहां भी गाली गलौज और पक्षपात का वही वातावरण व्याप्त था, जो रेलवे मे था। वही घुटन एक सड़ाध अपमानित जीवन नौकरी करनी है तो इस जीवन को स्वीकार करना पड़ेगा चुनौती के बोध पशु की सी जिंदगी ग्रीवा और नेत्र न उठाने की चेतावनी के साथ, मूक बने रहने की सावधानी भी आवश्यक थी। वह सोचता— छि —यह जिन्दगी है क्या ?'

मन मार कर उसन दो साल निकाल दिए। इस बीच मे वह दूसरी नौकरी की तलाश म भी लगा रहा। एक दिन उसे सफलता मिल ही गई। पूना का फायनैस कमसइएट आफिस उस नौकरी देने के लिए तयार हो गया। उसने यह सूचना पत्नी को दी, तो वह बोली— चलो—अच्छा है। यहां से पीछा छूटेगा। आपका भी यहां मन नही लग रहा था।'

'हम भी तो खुश नही थीं ?'

आपको उदास देख कर मुझे परेशानी होती थी।'

'चलो, अब दोना खुश रहेगे। वह हँसते हुए बोला।

अगले दिन उसन त्यागपत्र लिया। विदाई लने हरबट के पास आया।

'नई नौकरी के लिए मरी शुभकामनाए हरबट बोला।

'धन्यवाद। आपके सहयोग और सद्भाव को मैं हमेशा याद रखूंगा। मैं काफी दिनो से विलसन को नही मिल पाया। वे ठीक तो हं ?

मुझे भी काफी दिनो मे उसकी ओर से कोई सूचना नही मिल पाई है।

मैं उन्ह अपने बारे म सूचित करूंगा। अगर आपको टकरें, तो मेरा पता उन्ह बता दीजिएगा।

उसने अपने कार्यालय का पता हरबट को लिखकर दे दिया।

'जरूर जरूर।

कार्यालय से बाहर आकर वह अपने दोस्तो से मिलने चला गया। दोस्ती उसकी कोई खास नही थी, फिर भी औपचारिकता निभाना उसने ठीक समझा। इन लोगो को छोडते हुए उस कोई दु ख नही हो रहा था। उसे जुगल की स्मति हो आई। उसे छाडते हुए उसका दिल कितना दु खी हुआ था मानो कोई थाती छूट रही हो आज भी उसकी याद, उसकी दोस्ती, हृदय मे वैसी की वैसी बसी हुई है रची हुई है।

५

सपरिवार वह पूना आ गया। नौकरियाँ बदलती गइ, स्थान परिवतन होते रहे मित्रो मे बदलाव आता गया, लेकिन उसके विचारो मे कोई परिवतन नही आया। पूना आकर उस एक ही लक्ष्य नजर आने लगा कि सोचने विचारने से कुछ नही होने का हवा मे महल बनाने से क्या लाभ? कोई ठोस कायवाही करनी चाहिए। समय निकलता जा रहा है। क्राति की लपटें मद पडती जा रही हैं। इनमे इधन डालना ही पडगा। एक दिन वह अपने मित्र वामनराव जोशी को लेकर पुस्तक विक्रेताओ के पास चक्कर लगान गया, ताकि पढने के लिए कुछ नई पुस्तकें खरीद सके। एक दुकान पर खडे खडे उसने देखा कि नवयुवक आते और पुस्तक विक्रेता को 'रानडे है' कहते। विक्रेता लाकर दो पुस्तके थमा देता। खरीददार पैसे चुकाते और पुस्तकें लेकर चलत बनते। देखते देखते पच्चीस तीस नवयुवक पुस्तकें खरीद कर ले गए।

ये कौन सी पुस्तकें है—भाई। बडी बिक रही हैं रानडे साहब की लिखी पुस्तकें मुझे भी दिखाना।' वासुदेव बोला।

अब तो खत्म हो गई हैं। दो चार दिन म आइएगा।' दुकानदार बोला।

'इन पुस्तको मे ऐसी क्या विशेषता है?' वासुदेव ने दुकानदार से प्रश्न किया।

'यह तो बेचारा बेचने मे लगा हुआ है, इसे क्या पता? आओ मेरे साथ मैं

तुम्हें पुस्तकें दूगा।' वामनराव बोला।

'तुम छिपे रुस्तम निकले यार, पहले क्या नहीं बताया ?'

'अब बता रहा हू न। महादेव गोविन्द रानडे ने 'मराठा साम्राज्य क
उत्थान' और 'मराठा इतिहास का स्रोत' नाम से दो पुस्तकें लिखी हैं। उनक
बिक्री धडल्ले से हो रही है। मैं समझता हूँ कि अगर महाराष्ट्र के नवयुवको क
खून पानी नहीं हुआ है तो इन पुस्तको को पढकर वे अपने प्राचीन गौरव औ
आज की परिस्थितियो की तुलना अवश्य करेंगे।'

'एसा है, तो यह बहुत अच्छी बात है। आज के नवयुवको को यही बताने क
बात है कि हम क्या थे और क्या हो गए हैं।'

शिवाजी के राज्य की खुशहाली का दिलचस्प वर्णन किया गया है। रोज
और रोटी तथा साधारण जीवन मे सुरक्षा के मुद्दो को खूब उभारा गया है।'

'हाँ आज रोटी रोजी के लाले पड रहे हैं और सुरक्षा केवल गोरो की र
रही है। तमाशा तो यह है कि देश के मालिक तो रोटियो को तरस रहे हैं औ
ये विदेशी जिन्होने कभी बादशाह के आगे हाथ फैलाया था, आज बादशाहो क
बनाने बिगाडने मे लगे है ऐश कर रहे हैं।'

'वासू—इन बातो को सब देख रहे है भुगत रहे हैं, फिर भी नींद खु
कहाँ रही है ?'

वामनराव का घर आ गया था।

'आओ—बैठोगे नही ?' वामनराव बोला।

नहीं।

तुमने स्थान की बात की थी न ? वह मैंने देख ली है। दो कमरे बने ह
हैं। आगे और पीछे काफी खुली जगह है। एकान्त मे है। कोई चिमन भाई पटे
है, वही मालिक हैं। तुम चाहो तो अभी देखने चलें और चिमन भाई से बात भ
कर लें।'

ठीक है—तुम पुस्तकें लाओ। उधर भी चलकर देख लेते हैं।'

वामनराव ने पुस्तके लाकर उसे थमा दी और दोनो ही चिमन भाई से मिलने
चल पड़े। चिमन भाई के मकान से पहले ही वह स्थान आ जाता था। वासुदेव
को जगह बहुत पसन्द आई। आस पास बस्ती भी नही थी।

'मैं ऐसी ही जगह की तलाश मे था, वासुदेव अपनी प्रसन्नता व्यक्त करते हुए बोला।

'तुम्हें पसन्द है तो बात करें। वैसे मेरा विचार है, पटेल इन्कार नहीं करेगा।'

'चलें—उससे भी बात कर लें।'

चिमन भाई ने दोनों युवकों का स्वागत किया और मृदु स्वर मे बोले—

'कहिए—कैसे आना हुआ ?'

'हम आपकी खाली पड़ी जमीन पर कब्जा करना चाहते हैं।' वामनराव बोला।

'कब्जा कैसा कब्जा ? मेरे पास उसका पट्टा है।' पटेल बिदका।

'आप हमारा कहने का मतलब नहीं समझे। हम आपसे प्रार्थना करने आए हैं कि अगर आप इजाजत दे दें, तो उस जगह का हम सदुपयोग कर लें।'

'तुम उसका क्या उपयोग करना चाहते हो ?'

'नवयुवकों के लिए एक व्यायामशाला स्थापित करना चाहता हूँ।'

'व्यायाम से क्या होगा ?'

'वे स्वस्थ रहेंगे।'

पटेल हँसा। उन दोनों की समझ मे नही आया कि वह क्यों हँसा।

'मैंने तो कई हट्टे-कट्टे युवकों को दुबले पतले अंग्रेजो से पिटते देखा है। वे ऐसी स्थिति मे, दूसरे देखने वालो पर कितना गलत असर पड़ता है।' वे दोनों खामोश रहे। वासुदेव को लगा कि समुद्र की लहरें उसे खींच कर अपनी अथाह गहराइयो में ले गई हैं। दोनों को चुप देख, पटेल पुनः बोला—'तुम लोगों को मेरी बात बुरी लगी ?'

'नहीं, बिल्कुल नहीं। आपने एक कटु सत्य को उजागर किया है।'

हमारी कमजोरियों को हमे बताने वाले व्यक्ति का मैं आदर करता हूं। मैं तो खुद ऐसे व्यक्तियो की तलाश मे रहता हूं जो मुझे रास्ता दिखा सके। आप कहिए—हमे क्या करना चाहिए ?' वासुदेव बोला।

'मैं तो अब वृद्ध हो चला हूँ। तुम्हारी जगह अगर मैं होता, तो नवयुवकों को व्यायाम के साथ-साथ, अस्त्र शस्त्र-संचालन की शिक्षा भी देता।'

'अपने मेरे मुह की बात छीन ली। मैं यही करने जा रहा था। आपसे इसलिए नही कह सका '

तुमने सोचा, शायद मैं इस बात को पसन्द न करू—क्या ?' मुस्कराते हुए पटेल बोला।

'जी।'

तुम्हारा जसा जी चाहे करो मुझे खुशी है। हो सकता है, मेरी यह जमीन किसी नए शिवा को जन्म दे दे। शरीर के साथ साथ हमारी आत्मा भी मजबूत होनी चाहिए। शिवाजी महाराज कोई लम्बे चौडे नही थे, पर उनकी आत्मा मे अदम्य शक्ति थी।'

वासुदेव और वामनराव विदा लेकर, बाहर निकल आए। वासुदेव हँसते हुए बोला— यार तुमने तो काम खराब कर दिया था। खर ! बात सभल गई। पटेल तो बहुत अच्छा आदमी निकला। मुझ उम्मीद नहीं थी।'

'उम्मीद तो मुझे भी नही थी।' वामनराव बोला।

शाम को वासू घर पहुँचा, तो पत्नी न बम्बई से आया एक पत्र उसे थमा दिया। उसने पत्र खोला। हरवट का था। एक साँस म वह पत्र पढ गया दो बार तीन बार विल्सन का निधन हो गया है। अन्त तक आपको याद करता रहा। आपको बुलाने की सोची, लेकिन उसने इतना समय ही नही दिया।

बार बार उसकी नजर इन शब्दो मे से कुछ ढूंढने का प्रयत्न करती रही, पर अन्त मे सच स्वीकार करना ही पडा। अक्षर अमिट रहे। पत्नी ने उसके उदास चेहरे को देखा तो समझ गई कि कुछ अनहोनी हो चुकी है।

'तुम भोजन कर लो। मेरी इच्छा नही है वासू ने उदास भाव से कहा।

'क्या बात है ?

'विल्सन की मृत्यु हो गई है।'

पत्नी उसकी भावुकता को जानती थी, इसलिए अधिक बात-चीत नही की। एकान्त मे उसकी भावनाएँ जाल बुनने लगीं।

'कितना क्षण भगुर है इसान ! बहुत कुछ दे जाता है, पर जाता खाली हाथ है।'

विल्सन के सवाद उसके हृदय मे प्रतिध्वनित होते रह। उसका मदु स्वभाव,

उसकी हसोड़ प्रकृति हरबट से उसके सवाद वासू के कानो मे गूजते रहे। वह सोच रहा था कि जीना मरना तो मनुष्य के हाथ मे नही है, पर हाँ इतना तो वह कर ही सकता है कि जितना भी जिए, मस्ती मे जिए और इस मामले में विल्सन खरा उतरा था।

वासु काफी देर तक खयालो मे डूबा रहा। नीद लेने की कोशिश की, पर आँखें बन्द करते ही विल्सन सामने आ खड़ा होता था। उसके कानो में स्वर गूजने लगता—नौकरी चल रही है न ?'

दूसरे दिन, वह हरबट से मिलने मैडिकल कालेज गया। हरबट भी उदास था। ठंडे स्वर मे उसने वासुदेव का स्वागत किया।

'यह अचानक क्या हो गया ?' वासु ने रुँधे हुए गले से कहा।

'वह अचानक आया था। मेरे पूछने पर उसने बताया कि सीने में कुछ दर्द है। मैंने उसे अस्पताल मे भर्ती करवा दिया यह सोच कर कि इस बहाने कुछ आराम कर लेगा। रात को काफी देर तक वह मेरे साथ बाते करता रहा। विदा लेते समय उसने मुझसे कहा कि तुम्हें बुलवा दू। मैं चला आया। सुबह मैं जब अस्पताल गया, तो पता लगा कि वह रात मे सोते सोते ही हमेशा के लिए सो गया।' हरबट ने भरे गले से सारा किस्सा सुनाया। वासुदेव काफी देर खामोश बैठा रहा। बातें भी क्या हो सकती थीं ? हरबट से विदा लेकर चला आया। मार्ग में उसके मन मे उथल पुथल मची रही। विल्सन की कब्र तक जाना चाहिए, दूसरा विचार आता—क्या लाभ होगा ? मन और दुख पाएगा। अन्त म निर्णय यही रहा कि रुकने से कोई लाभ नही है। वह कब्र पर आएगा जरूर, पर तब, जब विल्सन के विचारानुकूल किसी निणय पर पहुँच जाएगा। उसका आशीर्वाद पाने वह जरूर आएगा। विचारो मे डूबे ही डूबे उसने सफर भी पूरा कर लिया।

मानव प्रकृति है कि गम चाहे कितना भी बड़ा हो धीरे धीरे कम होता जाता है। शायद यह ईश्वरीय देन, सृष्टि क्रम को जारी रखने के लिए नियत की गई हो। माँ का बच्चा मर जाता है, पर माँ जीवित रहती है। पत्नी का पति मर जाता है तो भी पत्नी जीवित रहती है। पति और पत्नी का विछोह सहन कर लेता है। यह सब विधना का लेख मान कर सह लिया जाता है, भोग लिया जाता है, लेकिन वास्तविकता, जीवन के प्रति मोह है और जब इस मोह

को किसी अन्य वस्तु पर निरूपित कर दिया जाता है तो जीवन के प्रति मोह छूट जाता है।

ऐसा ही कुछ वासुदेव के साथ हो रहा था। उसे लग रहा था कि शनैः-शनैः उसका मोह अन्य चीजों की तरफ से कम होता जा रहा है। रात दिन एक ही धुन देश परतन्त्र है बेडियों से जकड़ा हुआ है—इसे आजादी नहीं मिल सकी, तो हमारा जीवन किस काम का? इस प्रकार दिनों दिन उसका मोह देश के प्रति बढ़ता गया। उसका चाव लगाव झुकाव देश की आजादी की तरफ बढ़ता गया। परतन्त्रता का कारण वह अंग्रेजों को नहीं मानता था, अपितु इसके लिए वह अपने देशवासियों की नपुंसक भावनाओं को दोष देता था।

चिमन भाई वाली जगह को सजा-सँवार कर उसने अखाड़े का रूप दे दिया। वहाँ कुश्ती आदि तो होती ही थी, साथ ही तलवार, भाले और बंदूकें चलाने का प्रशिक्षण भी दिया जाता था। खुद वासुदेव भी पूरी रुचि से इन्हें चलाना सीख रहा था। जितने भी नवयुवक आते, उनसे वासुदेव खुल कर देश की विगत और वर्तमान परिस्थितियों पर चर्चा करता। बहसें छिड़ती आक्रोश की लपटें उठती। एक दिन वामनराव ने एक सुझाव दिया—'सतारा में 'सार्वजनिक सभा' नाम की संस्था शुरू हुई है। मेरा विचार है कि उसे यहाँ भी शुरू किया जाए।'

'तुम्हें अगर कोई खास लाभ दिख रहा है, तो मुझे क्या ऐतराज है?'

लाभ यही है कि नामी नेताओं के प्रवचन सुनने को मिलेंगे।'

'प्रवचन कैसे प्रवचन?'

नवयुवकों में देश धर्म के प्रति नव आस्था उत्पन्न करने के लिए जागरण मंत्र के उद्घोष को प्रवचन समझो। ये अपने प्रवचनों द्वारा, सुना है, नवयुवकों में नई उमंग और आशा का संचरण कर उनमें प्राण फूंक देते हैं।'

ऐसी बात है तो जरूर शुरू करो' वासुदेव ने कहा।

वामनराव नए काम में परिश्रम से जुट गया। वासुदेव भी उसे पूर[illegible] याग दे रहा था कि अचानक एक दिन शिरढोणा से पत्र आया कि माँ गम्भी[illegible] बीमार है। फौरन छुट्टी लेकर चले आओ। यहाँ भी दफ्तर में अंग्रेज अ[illegible] था। वासुदेव ने छुट्टी के लिए आवेदन पत्र दिया। कुछ देर बाद उस[illegible] गया।

अंग्रेज अधिकारी बोला—'सॉरी, मिस्टर वासुदेव—टुमका चुट्टी नाय मिल सकटा।'

'मगर क्यों ? छुट्टी बहुत जरूरी है। यह पत्र देख लीजिए।'

'कल देखेगा। ओ मन, हमारे पास एक्स्ट्रा आदमी नाय हाय।'

'मुझे आज ही जाना है' कह कर वह बाहर निकल आया। साथियों ने समझाया कि यह कल तक रुकने के लिए कह रहा है, तो रुक जाओ।

'आज से छुट्टी देने में इसे क्या तकलीफ हो रही है ?'

'आदत है—साले की तंग करने की।' एक साथी बोला।

'उसने यह कहा है न कि कोई अतिरिक्त आदमी उसके पास नहीं है। चलो, मैं उसे कहता हूँ कि तुम्हारा कार्य मैं संभाल लूँगा।' एक अन्य साथी बोला।

वासुदेव उसे लेकर पुनः अंग्रेज-अधिकारी के पास आया। अंग्रेज अधिकारी ने प्रश्नात्मक मुद्रा में उन दोनों की ओर देखा। वासुदेव बोला—'सर दिलीप कह रहा है कि वह मेरा कार्य सँभाल लेगा।'

'हम टुमको एक बार कह दिया, काल आना मांगटा। नाऊ यू गो एंड डॉंट कम अगेन।'

'साला, हरामजादा जिद्दी है। मेरा विचार है—कल तक रुक ही जाओ। मैं जानता हूँ ऐसे मौके पर एक मिनट भी काम पर दिल नहीं लगता, पर नौकरी का सवाल है, दिलीप बोला।

'कल भी आ जाएगा।'

शाम को घर आकर उसने जाने की तैयारी कर ली और पक्का विचार कर लिया कि कल वह छुट्टी दे या न दे, उसे जाना ही है। बुरे-बुरे ख्यालों में शाम और रात बीती। पत्नी पहले से ही शिरढोणा गई हुई थी। वह भी निश्चित रूप से चिन्तित हो रही होगी कि न जाने किस पचड़े में फँस गया हो। दूसरे दिन वह दफ्तर समय से पहले ही पहुँच गया। अंग्रेज अफसर आया और बिना उसकी ओर देखे, सीधा अपने कक्ष में घुस गया। कुछ देर में वासुदेव भी आज्ञा लेकर उसके कक्ष में घुसा।

'सॉरी मिस्टर वासुदेव टुमको दो चार दिन इन्तजार करना

दूसरा मैन आने के साट ही—टुम जा सक्टा।'

वासुदेव को क्रोध आया, पर वह पी गया। उसने सोचा क्यों इससे माथा लड़ाया जाए। उसे जाना है चाहे यह छुट्टी दे या न दे। वह चला आया। बदह वासी में शिरढ़ोणा पहुंचा लेकिन बहुत देर हो चुकी थी। माँ उसकी प्रतीक्षा नहीं कर सकी। उसने जाते-जाते उसकी निष्ठुरता पर अवश्य अश्रु बहाए होंगे। वह फफक पड़ा। एक बार तरह-तरह की स्मृतियों का दौर आँखों के आगे चलने लगा।

किसी की मौत से अन्य कार्य नहीं रुकते। हाँ, व्यवधान जरूर पदा हो जाता है और फिर स्वतः ही उसी पुरानी लीक पर जिंदगी आ जाती है। पत्नी को शिरढोणा में ही छोड़ना पड़ा, ताकि परिवार के अन्य सदस्यों को असुविधा न हो। वह वापस आ गया।

'आपके कोई मित्र आए हुए हैं।' पड़ोसी ने उसे सूचना दी।

नाम बताया था?'

'जी, जुगल बताया था।'

क्या वह गए हैं?'

वामनराव भी मिल गए थे। उन्होंने उन्हें व्यायामशाला में ठहराया है। हमने अपने यहाँ रुकने के लिए कहा था, लेकिन वे माने नहीं। सुबह ही आए हैं।'

'धन्यवाद— वह तेजी से व्यायामशाला की ओर बढ़ गया। व्यायामशाला के बाहर से ही वह चिल्लाने लगा—

आ गया तू—बड़ी जल्दी मेरी याद आई।'

उसका स्वर सुनकर जुगल फौरन बाहर आकर, उससे लिपट गया। अपने भारी स्वर में वह बोला—'कह ले यार, जो कहना है—कह डाल।'

वासुदेव उसे गौर से देखता हुआ बोला—'तेरा तो स्वर बदल गया, काया बदल गई, रंग-रूप में बदलाव आ गया। लगता ही नहीं कि तू वही पुराना जुगल है।'

'हाँ, बहुत कुछ बदल गया और भी बदलना चाहिए था। तू तो जानता था कि हमारी आर्थिक स्थिति ठीक नहीं थी। इधर-उधर फुटबाल की तरह लुढ़कता रहा। कई घाट देखे। विश्वास और परिश्रम तथा लगन का खून होता देखा और

'अंग्रेजों के प्रति तुम्हारी भावनाएँ नहीं बदली हैं।'

'और तुम्हारी ?' वासुदेव ने प्रश्न किया।

'मेरी भावनाएं तुमसे कोई अलग नहीं थी। विचारों की भिन्नता थी।'

'तुम तो काफी स्थानों पर घूम घाम कर आए हो। क्या देखा ? क्या अनुभव किया ?'

'वासू ! देख, वही पुरानी बात है। लोग आजादी चाहते हैं, पर सक्रिय होने में उन्हें अधिक रुचि नहीं है। मैंने कहीं तटस्थता देखी है, तो कहीं उदासी। तू मुझे एक बात बता। अंग्रेजों ने हजारों लोगों को मारा होगा। उनके सगे सम्बन्धी तो नहीं मरे न ? उनमें तूफान पैदा क्यों नहीं हुआ ? चलो, उस समय वे डर गए, पर बाद के सालों में ठण्डे क्यों पड़ते गए ?'

नेतृत्व नहीं रहा अन्यथा ऐसी स्थिति पैदा नहीं होती।'

खैर ! यह लम्बा विषय है।'

प द्रह बीस नवयुवक आकर उनके चारों ओर बैठ गए। वामनराव बोला—

सभा के मंच से कल जानते हो कौन बोलेगा ?'

सभी उसकी ओर देखने लगे। तभी वासुदेव बोला—'मैं आप सभी लोगों से अपने एक मित्र का परिचय करवाना चाहता हूँ ?' और उसने जुगल का परिचय सब लोगों से करवाया। वामनराव के सम्मुख आते ही जुगल मुस्कराया।

'इनसे मैं मिल चुका हूँ।'

'केवल मिलना ही काफी नहीं है—इनके बारे में जानना भी बहुत जरूरी है। इन्होंने अभी यहाँ सार्वजनिक सभा की स्थापना की है। अब देखें कि ये उसे कितने आगे तक ले जाते हैं। शेष फिर—हाँ, अब बताओ वामन, कल सभा के मंच से कौन बोलेगा ?'

'रानडे साहब आ रहे हैं।'

'अरे भाई, मान गया तुम्हें।

अब तैयारी करनी है।' उठते हुए वामनराव बोला।

हाँ हमें भी तैयारी करनी है।' आज तो खुद भोजन बनाना पड़ेगा।'

वासुदेव, जुगल का हाथ पकड़ कर बाहर आ गया। आखिर जुगल से नहीं रहा गया, तो वह पूछ ही बैठा—'वासु, इसके पीछे तुम्हारा उद्देश्य क्या है ?'

'वही पुराना।'

'उद्देश्य बहुत अच्छा है, बड़ा है, पर साधन हैं ?'

'साधन पैदा किए जाते हैं।'

'हवा में महल बनाने वाली तेरी आदत गई नही है' जुगल बोला।

वासुदेव हँसा। उसने जेब में हाथ डालकर चाभी निकाली।

'ले, तू चाभी पकड़। मैं सब्जी लेकर आता हूँ।'

'मैं भी साथ चलता हूँ।'

'ध्यान रखना, यह न शिरढोणा है और न यहाँ कोई पँचकोणी का बाग है।' दोनों ही हँस पड़े।

'यार, बचपन भी क्या होता है! एक अलग ही दुनिया, सबसे निराली, अपने रीति-रिवाज, अपने नियम उस आनन्द को भूला जा सकता है क्या ? मैं तो एक बार गाँव से क्या निकला कि पीछे मुड़कर देखा ही नही। पँचकोडी जिन्दा है क्या ?' जुगल भावनाओं में बहता हुआ बोला।

'तू अभी चुप कर, सब्जी ले आते हैं। भोजन बना कर, खा कर, तसल्ली से बैठकर बातें करेंगे। वर्षों का लेखा-जोखा है।'

'तू ठीक कहता है यार, भूखे भजन न होत गोपाला, ले-ले अपनी कंठी माला। लेकिन—तेरा पड़ोसी क्या काम आएगा ?

'पड़ोसी ने हमारा ठेका ले रखा है क्या ? सुबह तो मुझे दफ्तर जाने की जल्दी थी, अन्यथा मैं उन्हें तकलीफ नही देता।

तकलीफ कैसी ? अपनी सुविधा देखनी चाहिए।'

तू अपने सिद्धान्त अपने पास रख। भोजन करना है तो खुद ही बनाना पड़ेगा।' वासुदेव मुस्करा कर बोला।

'बनाऊँगा मेरे भाई, बनाऊँगा।'

हँसी मजाक करते हुए दोनों सब्जी लेकर आए। घर आकर, दोनों भोजन बनाने पर जुट गए। वासुदेव बोला—'तू सब्जी काटेगा या आटा '

'नही यार आटा मेरे बस का नही है। सब्जी काट देता हूँ।'

'वासुदेव ने आटा निकाला। जुगल मजाकिया लहजे में बोला—'यार, आटा कम न पड़ जाए। तू कम खाने लग गया है क्या ?'

वासुदेव ने ठहाका लगाया। जुगल भी हँसा।

'सीधी बात किया कर। यह कह कि तेरी खुराक कुछ बढ़ गई है।'

'मैं तेरी समझदारी की शुरू से ही दाद देता हूँ।'

वासुदेव ने परात में कुछ और आटा डाला और जुगल से पूछा—क्यों अब तो ठीक है?'

'क्यों शर्मिन्दा करता है, यार?

'तुम्हें और शर्म!'

हल्की-फुल्की बातें करने के साथ-साथ वे भोजन बनाने का काम भी निबटा रहे थे। भोजन करने के उपरान्त वासुदेव बोला—

अब तू अपनी दास्तान सुना।'

जुगल ने अपनी पूरी कहानी सुनाई। वासुदेव ने भी अपनी बात सुनाई। वासुदेव की आँखें नींद से भारी हो रही थीं। वह बोला—'अब शेष बातें सुबह करेंगे।'

'तुम सो जाओ—थके हुए हो। कुछ देर में दोनों की आँखें लग गईं। सुबह काफी देर से उनकी आँखें खुलीं। नहा धोकर, जुगल बोला— मैं भोजन बना लूँगा।'

मैं तो व्यायामशाला जा रहा हूँ। वामन से भी मिलना है। आज रानडे साहब के भाषण की व्यवस्था भी करवानी है। तुम भोजन बनवा लेना। मैं दोपहर में आ जाऊँगा।'

वासुदेव चला गया। जुगल सोच में डूब गया—

मुझे वासुदेव पर भार नहीं बनना चाहिए। बम्बई चला जाऊँ। वासुदेव जाने देगा क्या?'

दिन में उसने रानडे की दोनों पुस्तकें पढ़ डालीं। वासुदेव दोपहर में नहीं आ पाया। शाम को उसने आते ही जुगल से कहा—'चलो, भोजन वामन के घर कर लेंगे। वहीं से सभास्थल पर चले चलेंगे। व्यवस्था भी देखनी है।'

'यार, तुम्हारे ये रानडे साहब विद्वान नजर आते हैं। मैं उनकी लिखी दोनों पुस्तकें आज पढ़ गया। अच्छी लिखी हैं।'

'अरे! मैं तो भूल ही गया था। चलो, अच्छा हुआ तुमने पढ़ लीं।'

'तुमने पढ़ी या नहीं ?'

'पढ़ने के लिए ही लाया था, पर झंझटों में उलझ गया। पढ़ूंगा, जरूर।'

वामन के घर से वे सभास्थल पर पहुँचे। वासुदेव ने सारी व्यवस्था पर दृष्टि डाली।

वामन बोला—'क्या ठीक है ?'

'वक्ता कितने हैं ?' वासुदेव ने पूछा।

'रानडे साहब और गणेश वासुदेव जोशी तो मुख्य वक्ता हैं। अगर कोई और बोलना चाहेगा, तो उसे समय दे देंगे।'

'ठीक है।'

काफी लोग एकत्रित हो गए थे। वासुदेव और जुगल नीचे श्रोताओं के साथ ही बैठे हुए थे। वामनराव ने उनसे मंच पर आकर बैठने की हठ की, पर वासुदेव साफ मुकर गया। ठीक समय पर सभा की कार्यवाही आरम्भ हुई। वामनराव ने संक्षेप में दोनों मुख्य अतिथियों का परिचय दिया। पहले महादेव गोविन्द रानडे ने बोलना शुरू किया। विषय साधारण था, किन्तु उनकी बोलने की शैली मन-मुग्ध कर देने वाली थी। गणेशजी भी धुंआधार बोले। दोनों के भाषणों का सार यह था कि नवयुवकों को देश के उत्थान, समाज सुधार आदि के लिए आगे बढ़कर काम करना चाहिए। रात को जब वे घर पहुँचे और सोने की तैयारी करने लगे, तो जुगल बोला—

'मैं बम्बई जाना चाहता हूँ।'

'कोई काम है क्या ?' वासुदेव बोला।

'काम तो वहीं ढूंढूंगा।'

'यहाँ तू भूखा तो नहीं मर रहा है ?'

'भूखा ! बहुत खा रहा हूँ—यार बिल्कुल मुफ्त में।'

'अच्छा, अब समझा। देख यार, तू मुफ्त का नहीं खाना चाहता है, तो कोई नौकरी कर ले। दोनों साथ रहेंगे। मैंने जो रास्ता पकड़ा है, उसका अन्त एक ही है—'जीवन का अन्त।' ऐसी दशा में, मैं परिवार को साथ नहीं रखना चाहता। मुझे तेरा सहारा रहेगा।'

जुगल विचारों में खोया हुआ था। वासुदेव के स्नेह को वह ठुकराना नहीं

चाहता था, पर बिना नौकरी के ऐसा कब तक निभता।

'मेरे लिए नौकरी का प्रबन्ध हो जाएगा न?' जुगल ने पूछा।

'बिल्कुल हो जाएगा। कल ही बामन को कह देता हूँ।'

'तो फिर ठीक है अब तू बता कि आज के भाषण तुझे कैसे लगे?' जुगल बोला।

'दोनों सज्जन बोले तो खूब। तुझे क्या लगता है युवक राष्ट्रीय विचार धारा से जुड़ पाएँगे? उनको यह आभास होगा कि गुलामी और आजादी में क्या अन्तर है?'

'वासुदेव, एक बात बताऊँ? जो कुछ होना है, वह स्वतः ही स्वाभाविक ढंग से होगा है। अंग्रेज सरकार आज भी रायबहादुर, सर आदि उपाधियाँ वितरित कर रही है और १८५७ से पहले भी यही कुछ होता था। वह भारत की विभिन्न जातियों में आज भी फूट डलवा रही है और पहले भी डलवाती रही है, लेकिन जब १८५७ की क्रांति धधकी, तो उन्होंने देखा कि हिन्दू मुसलमान सब एक हो गए हैं। हाँ यह जरूर है कि रानडे जैसे व्यक्ति इस स्वाभाविक प्रक्रिया को कुछ गति दे सकते हैं।'

'आज तो तू बड़ी गहरी और समझदारी की बात कर रहा है।'

जुगल मुस्कराया। वासुदेव ने उसे फिर छेड़ा—

'पर हाँ, तू समझदारी की बात वार त्योहार पर ही करता है!'

'हर समय समझदारी की बात करनी ठीक नहीं लगती, लेकिन एक बात है कि मैं सुनता समझदारी से हूँ। सोचते समय गड़बड़ जरूर हो जाती है पर जितना सोचता हूँ, उसे समझदारी से सोचता हूँ किन्तु बोलते समय फिर गड़बड़ हो जाती है और सुनने वाले को लगता है कि कोई बेवकूफ बोल रहा है।'

वासुदेव हँस पड़ा।

'तो मेरे भाई—अपनी आदत सुधारने की कोशिश कर।'

'हर काम स्वतः ही स्वाभाविक'

'ढंग से होता है।' वासुदेव ने उसका कथन पूरा किया।

बात आई गई हो गई। वासुदेव के दिमाग से बात निकल गई, पर जगल नही भूला था। एक दिन उसने वासुदेव से कहा—'तेरा काम हो गया है।'

'कैसा काम ?'

'वही बन्दूक वाला। कल तुझे दो बन्दूकें मिल जाएँगी।'

'अरे! मैं तो भूल ही गया था।'

'देख यार समय तो लगा है पर काम तेरा हो गया।'

'हर काम स्वत ही स्वाभाविक ढग से होता है।' वासुदेव मुस्कराया।

'यह तो मैं बचपन से ही कहता हूँ।

वासुदेव की काया बदल गई। कसरत और कुश्ती से शरीर पहले की अपेक्षा मजबूत हो गया था। वह नित्य अपने अखाड़े मे तीन तीन सौ दण्ड बैठक लगाता था। औसत कद, तना हुआ सीना, कसे हुए भुजदण्ड तेजस्वी मुखमुद्रा, गभीर सोच मे डूबी आँखें, दाढी बढी हुई—कुल मिला कर उसका व्यक्तित्व भव्य था। अग्रेजी मे तो उसने दक्षता प्राप्त कर ही ली थी, साथ ही तीन चार अन्य क्षेत्रीय भाषाए भी सीख ली थीं। जुगल भी कोशिश करता था, पर सुस्त होने के कारण पूरी लगन और रुचि से किसी भी कार्य को पूरा नही कर पाता था। वह कहता था—

'भगवान मेरे जैसे व्यक्तियो का ध्यान रखता है। अब देखो न, तुम्हें अपने शरीर को मजबूत बनाने के लिए कितना परिश्रम करना पड रहा है। जबकि मुझे पहले से ही छ-फुटी काया और सुडौल देह दे रखी है। जब से पुलिस मे भर्ती हुआ हूँ सारे गोरे अफसर मेरे रोब को देख कर खुश हैं। कितनी ही भीड क्या न हो एक घुड़की देते ही पैर सिर पर रख कर भाग खडे होते है। बापू, हमारे ये लोग इतने डरपोक क्यो हैं ? क्या ये अग्रेजो से टक्कर न ले सकेंगे ?'

'जुगल हम लोगो मे आत्मविश्वास की कमी है।

एक दिन बाजार मे किसी बात पर लोगो मे झगडा हो गया। लोगो ने भडक कर लूट मार शुरू कर दी। सूचना मिलते ही अग्रेज अफसर अपने पुलिस दल को लेकर आ गया। आते ही उसने लाठी चार्ज का आदेश दे दिया। जुगल अकेला ही भीड मे घुसकर किसी को लाठी से हल्की चोट लगा कर चिल्लाता—

'इन्हें समझाने ।'

'ये इस समय कुछ नही सुनेंगे ।'

'कोशिश तो कर लूं ।'

फाटक खोल कर वह बाहर आ गया । जलती आंखों से उसने सामने खड़े नारे लगाते व्यक्तियो को देखा।

'तुम इन निरपराधो को क्यों मौत के मुँह मे धकेल रहे हो ?'

'तुम्हे इससे क्या ? हमे लाशें सौंपो ।' वे उसके सामने आकर चिल्लाए ।

'मैं तुम्हें कहता हूँ—चले जाओ । गोरा अफसर गोलियाँ चलवाने की तयारी कर रहा है। बेकसूर मत मरो । जिन्दगी बहुत कीमती है।' जुगल गम्भीर और नम्र स्वर मे बोला । उसकी वाणी मे ममता-दया का पुट था ।

'हम नही जाएगे । तू भी अग्रेजो का कुत्ता है साला ।'

'अबे ! जुबान सभालकर बातकर ।' जुगल क्रोधित स्वर मे बोला ।

'हम बदला लेंगे । खून का बदला खून ।' भीड चिल्लाई ।

'बदला, ऐसी गीदड भभकियो से नहीं लिया जाता है ।'

'इस कुत्ते को मारो । साला धमकी दे रहा है।' आगे खड़ा एक आदमी चिल्लाया । जुगल ने एक ही झटके से उसे अधर मे उठा लिया । फिर न जाने क्या सोचकर उसे उतारा और अपने सामने खड़ा करके तेज आवाज मे बोला—'कुत्ता, कौन नही है ? सब कुत्ते हैं अग्रेजो के टुकड़ो पर पल रहे हैं ।'

उसने उस आदमी को भीड की ओर धकेला । लोग जब तक सकते की हालत से उबरते कि वह वापस जा चुका था । अन्दर से बहादुर के पीछे पीछे, करीब पन्द्रह पुलिस वाले बन्दूक लेकर बाहर निकले । जसे ही बहादुर, जुगल के पास से गुजरा, जुगल धीरे से बोला—'बहादुर गोलियाँ हवा मे चलवाना । ये निर्दोष है, उसका स्वर वेदनापूण था । पुलिस वालो ने फाटक के पास आकर बन्दूकों की नलियो को भीड की ओर किया । कुछ पुलिस वाले चारदिवारी पर चढ गए । भीड भागनी शुरू हो गई । जब तक अग्रेज अफसर बाहर आया, भीड नौ-दो ग्यारह हो चुकी थी । आते ही अग्रेज अफसर बिफर पडा—

ओह ! वह डोर—टोम साला कसा आडमी है ? हम टुमको कहा था गोली चलाना है ।'

लाश को लाकर, उनके सम्बन्धियों को सौंप दिया गया। उनके अन्तिम संस्कार के समय काफी भीड़ थी। शाम को वासुदेव ने प्रतिनिधि-मण्डल को ले जाकर अन्य उच्चाधिकारियों से मुलाकात की, पर उन्हें कोई संतोषजनक उत्तर नहीं मिला। सभी अधिकारियों का एक स्वर में कहना था कि जो कुछ हुआ, बुरा हुआ, पर अन्य कोई उपाय नहीं था। वासुदेव जब घर पहुंचा, तो जुगल आ चुका था।

'तुमने यह काम अच्छा किया, अन्यथा तनाव बढ़ता।' जुगल ने कहा।

'मैं कहता हूँ उसे गोली चलाने की क्या जरूरत थी?' वासुदेव, आवेश में बोला।

'यही बात तो मेरी समझ में नहीं बैठ रही है।'

'यह हमारी कायरता का परिणाम है। हम कायर हैं, डरपोक—नपुंसक। हमने केवल उत्तेजित होना सीखा है।'

'मैं इसमें क्या कर सकता हूँ।'

'शांति स्थापित करने का यह अच्छा तरीका है।' व्यंग्यात्मक सहज में वासुदेव बोला।

भोजन करने के उपरान्त वे दोनों व्यायामशाला गए। वहाँ भी आक्रोश व्यक्त किया गया। इस विषय पर लम्बे समय तक शहर में चर्चा होती रही। मृत नवयुवकों के परिवार के लिए चन्दा एकत्रित किया गया। एक नागरिक समिति ने पूरी घटना की जाँच पड़ताल की और पाया कि गोली अनावश्यक रूप से चलाई गई थी। मरने वाले दोनों नवयुवक निर्दोष थे और बाजार में खरीददारी करने के लिए आए थे। असली अपराधियों को पकड़ा नहीं गया था। यह भी संभावना व्यक्त की गई कि इस काण्ड के पीछे अंग्रेज पुलिस अफसर का हाथ हो सकता है क्योंकि कुछ दिन पहले उसकी कहासुनी एक दुकानदार से हुई थी। सबसे पहले उसी दुकान को लूटकर आग लगाई गई थी।

इस सारी घटना ने जहाँ वासुदेव को लोकप्रिय बना दिया वहीं अंग्रेज अधिकारियों की आँखों में वह खटकने लगा। १८७३ में एक दिन उसे सूचना मिली कि उसकी पत्नी का निधन हो गया। कुछ देर के लिए वह मर्माहत सा

यह अधिकारी अपने मातहतों को लेकर शहर में गश्त लगाने निकला था। इनका असली उद्देश्य यह जानना था कि उस युवक की मौत के बाद जो बवाला खड़ा हुआ था उसका केन्द्र कहाँ है। उस युवक को यन्त्रणाएँ उसी अधिकारी ने दी थी। मैंने अपनी आँखों से देखा था—जी दहल गया था।'

'कुछ भी हो यह बहादुरी का काम है। जिसने भी यह किया, वह बहादुर है।'

और अगर पकड़ा गया तो जानते हो क्या दुर्गति होगी ?'

'मेरी दुआएँ उसके साथ हैं। वह अगर इन राक्षसों के चंगुल में आ भी गया, तो निःसन्देह अपनी किस्मत पर गर्व करेगा कि उसे देश पर कुर्बान होने का मौका तो मिला।'

कई लोगों से पूछताछ हुई। कोई सबूत नहीं मिल पाया। इससे अंग्रेज जहाँ तिलमिलाए हुए थे, वहाँ हिन्दुस्तानी लोग राहत की साँस ले रहे थे। अंग्रेजों की हालत खिसियानी बिल्ली खम्भा नोचे, वाली हो रही थी। 'सार्वजनिक सभा' के कार्यकर्ताओं से पूछ-ताछ की गई, पर कोई संगतिपूर्ण बात नहीं बैठी।

वासुदेव से भी पूछ-ताछ की गई, लेकिन उसका एक ही जवाब था। 'मैं खाना बना रहा था। यह बात आप मेरे पड़ोसियों से पूछ सकते हैं।' जुगल तो उस दिन कोतवाली से आया ही देर से था, फिर भी पूछा तो उससे भी गया था। उसका जवाब था। मेरा तो पेट खराब हो रहा था सो लोटा उठाए साफ करने में लगा हुआ था। अफसर महोदय का आदेश था कि वे जब तक वापस नहीं आ जावें मैं घर न जाऊँ, फिर यह काण्ड घटित हो गया। सब बड़े बड़े अफसर आ गए थे। आधी रात के करीब मुझे घर जाने की आज्ञा मिली।'

शहरवासियों का कहना था कि उसकी मौत ही थी अन्यथा गली से मुड़ते ही पचास कदम के फासले पर कोतवाली थी। कोतवाली के निकट ऐसी घटना हो जाना कमाल ही था। आस-पास के मकानों की गहरी छान बीन की गई पर कोई संदिग्ध वस्तु नहीं मिली। कोतवाली में नया अंग्रेज-अफसर आ गया।

घरवाले वासुदेव पर दबाव डाल रहे थे कि वह दूसरा विवाह कर ले।

पूरी जिंदगी कैसे कटेगी ? उसे बात माननी पड़ी। १८७४ मे उसका विवाह बाई साहब से हुआ। उसे लेकर वह पूना आया। सक्षेप मे उसने पत्नी को अपने सारे क्रिया-कलापो के बारे मे बताया। पत्नी ने उत्तर दिया—

'मेरा कर्त्तव्य आपके कार्यों मे हाथ बटाना है। इससे अधिक मुझ कुछ पता नहीं है।

जुगल अब रहता तो कोतवाली मे था, पर अक्सर वासुदेव के घर आता-जाता रहता था। वासुदेव अब सार्वजनिक सभा से और भी जुड गया। अपने व्यायामशाला के कार्यकर्त्ताओ के साथ मिलकर उसने ऐक्यवर्धिनी नाम की सस्था की नीव रखी। इस सस्था का उद्देश्य समाज-सेवा था। वामनराव के सहयोग से उसने राष्ट्रीय शिक्षा के उददेश्य से एक विद्यालय भी शुरू किया। इन सभी कार्यों की देखभाल वह स्वय करता रहता था। अपनी पत्नी को उसने सस्कृत पढानी शुरू की। एक दिन बातो ही बातो मे उसने पत्नी के हृदय को कुरेदा।

'तुम पर अगर कोई इस प्रकार की विपत्ति पड जाए कि इज्जत जाने का डर हो तो क्या करोगी ?'

आप मेरी रक्षा करेंगे। आपके रहते ऐसी मुसीबत क्यो आएगी ?'

'मान लो उस समय मैं न रहूँ तो ? और मैं चौबीसो घण्टे तुम्हारे पास रह भी कैसे सकता हूँ ?'

'प्राण दे दूगी। हठात् उसके मुह से निकल गया।

'छि छि ! स्त्री अपने को इतनी अबला क्यो बना लेती है ? यह क्यो नहीं कहती हो कि मुकाबला करूँगी। बन्दूक चलाना सीखोगी ?'

'जरूर सीखूगी।'

वासुदेव पूरी लगन से उसे बन्दूक चलाना सिखाने लगा। एक दिन व्यायामशाला के पीछे की खुली जगह मे वह पत्नी को बन्दूक से निशाना लगाने के लिए प्रेरित कर रहा था कि जुगल आ गया। वह चुपचाप खड़ा रहा। बाई साहब के अचूक के निशाने को देखकर उसने खुशी से तालियाँ बजाइ।

'क्यो भाई मानते हो न ?' वासुदेव बोला।

मान गया—भाई। इतना अच्छा निशाना तो शायद तू भी न लगा सके।'

'महिलाओं को भी अस्त्र शस्त्र चलाना सीखना चाहिए। जब तक यह आधी शक्ति निष्क्रिय रहेगी, तब तक स्वाधीन हो पाने की कल्पना बेकार है।'

'इस समाज में पोगा-पंडित लोग बहुत अधिक हैं। उन लकीर के फकीरों को समझाना कठिन है।' जुगल ने उत्तर दिया।

'हर काम स्वतः ही स्वाभाविक ढंग से होता है।' वासुदेव मुस्कराया।

'बिल्कुल बिल्कुल '

लेकिन, कुछ को तो उस काम को करने की पहल करनी पड़ेगी न? खैर! छोड़ तू यह बता, कैसी चल रही है?'

'यार मैं नौकरी छोड़ने की सोच रहा हूँ।'

वासुदेव पत्नी से बोला— तुम चलो, हम आ रहे हैं। जुगल भी अपने साथ ही भोजन करेगा। यह मिष्ठान्न प्रिय है।'

'इस मामले में जरा कमजोर हूँ।'

हाँ, अब तुम बताओ नौकरी छोड़ने की क्या आवश्यकता पड़ गई?'

यार शक के आधार पर पकड़ गए लोगों पर ये कैसे-कैसे जुल्म करते हैं, क्या बताऊँ? ऐसे मौकों पर मैं बहानेबाजी करके टल जाता हूँ। यह नया अंग्रेज अफसर इस बात को समझ गया है। इसी बात पर कभी-न कभी भिड़ंत हो जाएगी।'

मैं तो यही कहूँगा कि अभी समय नहीं आया है। मैं खुद मजबूरी में नौकरी कर रहा हूँ। उचित व्यवस्था हो जाने पर हम दोनों ही नौकरी छोड़ देंगे।'

'कब सर के ऊपर से पानी निकलने लग जाए कह नहीं सकता।'

जब तक निभा सकता है—निभा। मैं शीघ्र ही पूरे देश का भ्रमण करना चाहता हूँ। लोगों को जाग्रत करूँगा कि वे इन गोरों के अत्याचारों के खिलाफ एकजुट हो जाएँ तो ये निश्चित रूप से भाग खड़े होंगे।' इतने में एक नवयुवक आया। तेजस्वी मुख मुद्रा, गम्भीर स्वर। वासुदेव पर नजर पड़ते ही वह ऊँचे स्वर में बोला—

'आप यहाँ बैठे हैं?'

'बातों का सिलसिला शुरू हो गया, सो यहीं बैठे रह गए। आप भी आइए, बैठिए। जुगल—ये हमारी व्यायामशाला के नए सदस्य हैं।' श्री बाल गंगाधर

तिलक और तिलकजी, ये मेरे परममित्र हैं—श्री जुगल।'

'आप कहाँ नौकरी करते हैं ? तिलक ने पूछा।

'पुलिस मे।'

'बाप रे।'

तीनो हँस पड़े। वासुदेव बोला—

'इससे डरने की आवश्यकता नही है। गाय है बेचारा।'

'गाय तो हमारी पूजनीय है। सीग भी मारती है, तो हम सहन करते है।'

एक बार फिर तीनो हा हँस पड़े।

वासुदेव 'सार्वजनिक सभा' से गहरा, और गहरा जुड़ता गया। अब उसे लगता कि वह सार्वजनिक कार्यों का पूरा समय नही दे पा रहा है। गणेश वासुदेव जोशी रात दिन देश कार्यों में सलग्न रहते थे और चाहते थे कि दूसरे नवयुवक भी अधिक से अधिक समय देश हितार्थ दें। वे 'सार्वजनिक काका' के नाम से मशहूर थे। सार्वजनिक सभा में एक दिन उत्तेजक बहस हुई। तिलक बोले—'हम क्या कर रहे हैं ?—कुछ नही लॉर्ड लिटन ने आर्म्स ऐक्ट अधिनियम' लागू किया है—क्यों ? ताकि भारतीय निस्सहाय बने रहे। निःशस्त्र रहे, और अंग्रेजी कारिन्दे अपने हथियारों से हमें कुचलते रहे। यहाँ बैठ रहकर, लच्छेदार भाषण सुनकर कुछ नही होने का कुछ नही।

'काका' का विचार भी यही था। अपनी ओजस्वी वाणी मे वे दहाड़े—केवल पूना में या महाराष्ट्र मे अलख जगाने से क्या होगा ? हम भारत के कोने कोने मे जाकर लोगो को जगाना है उन्हे हिम्मत बँधानी है। ऐसा कोई विरला ही होगा, जिसे आजादी की चाह नही हो, पर वे प्रतीक्षा कर रहे हैं ऐसे व्यक्तियो की, जो आगे आगे चलने के लिए तैयार हो। मैं विश्वास दिलाता हू कि इस देश में अनुयायियो की कमी नही है। आजादी और अखण्डता के लिए सब एक हैं। १८५७ की क्रांति में अंग्रेजो की 'फूट डालो और राज करो' की नीति ध्वस्त हो गई थी। इस नीति को अब वे और भी कारगर ढंग से आजमा रहे हैं, पर मुझे विश्वास है—हम एक रहेंगे, क्योंकि हमारा उद्देश्य एक है। आवश्यकता सम्पर्क की।'

रानडे ने अंग्रेजी सरकार की व्यापारिक नीति की भर्त्सना

'अंग्रेजी सरकार खटमल की तरह हमारा खून चूस रही है। हमारे बच्चे मार के बलबूते पर उन्होंने अपना व्यापार खड़ा कर लिया है। हम गरीब होते जा रहे हैं और वे अमीर होते जा रहे हैं। यह कब तक सहन होगा।' वासुदेव भी धारा प्रवाह वाणी में बोला— मैं तैयार हूँ। गाँव गाँव में अलख जगाऊँगा। तिलकजी और काका का कहना सही है। यहाँ बैठ रहने से कुछ नहीं होगा। अंग्रेजी शासन के खिलाफ हम जनमत खड़ा करना पड़ेगा। देश को अभी रक्त की जरूरत है आजादी इतनी आसानी से नहीं मिलने की। सदियों तक हम, भारत माँ को दासता की बेड़ियों में जकड़ा देखते रहे। यह पाप इतनी जल्दी कैसे धुल जाएगा? अपने पाप का प्रायश्चित हम अपने प्राण देकर करेंगे।'

इन सारी गतिविधियों से अंग्रेजी सरकार अनभिज्ञ नहीं थी। वासुदेव रात भर सभा की कार्यवाहियों में व्यस्त रहता। वह पूरी कोशिश करता कि दफ्तर के काम में ढील न आए, लेकिन वह मशीन तो था नहीं। यदा कदा काम में गलती हो ही जाती थी। गलतियाँ तो पहले भी होती थीं पर अंग्रेज अधिकारी इतना गौर नहीं करते थे। अब शायद वे उसे कोई सबक सिखाना चाहते थे, क्योंकि उन्हें बराबर उसके उग्र भाषणों की सूचना मिल रही थी। उस अंग्रेज अधिकारी अब अपने शासन के लिए खतरनाक मान रहे थे। एक दिन वह किसी फाइल को समय पर नहीं निबटा पाया। अफसर ने उसे बुलाया।

'मिस्टर वासुदेव—यू आर केयरलेस फैलो, टुम नौकरी करना नहीं माँगटा।'

मैं यह काम निबटा कर ही घर जाऊँगा।' वासुदेव ने नम्रता से उत्तर दिया।

हम टुमारा बाप का नौकर नहीं हाय कि फाइल के इन्टजारी करें।'

सभ्यता से बात करिए।

'ओ—टुम हमको धमकी डेटा—मैन टुम जानटा है टुमारा नाम पोलिस के ब्लैक लिस्ट में हाय।'

'मैं जानता हूं। यह मेरे लिए फक्र की बात है।'

'डोनों काम एक साथ में नहीं हो सकटा हाय नौकरी मांगटा या नेटा गिरी?'

'नौकरी की जहाँ तक बात है आप चाहें तो मैं अभी त्यागपत्र दे सकता हूँ। रही नेतागिरी की बात वह मेरा अपना मामला है। मैं नेतागिरी नहीं करता हूँ बल्कि देशसेवा करता हूँ समझे। देशसेवा करने से मुझे कोई रोक नहीं सकता। देशसेवा के लिए नौकरी त्यागना तो छोटी सी बात है।'

'ठीक है—देशसेवा करना मांगटा। ओ० के०, दैन गिव मी योअर रजिगनेशन।'

वासुदेव नौकरी को लात मारकर आ गया। उसने मन में सोचा— चलो झंझट छूटा। इसके कारण मैं अपनी पूरी क्षमता से काम नहीं कर पाता था। जुगल ने सुना तो उसने भी अपनी प्रतिक्रिया जाहिर की—

'तू जी जान से सभा के काम में लग जा। घर का खर्चा मैं चलाऊँगा।'

वासुदेव ने उसे गले से लगा लिया। उस दिन से वह दुगुनी शक्ति से काम पर लग गया। उसके सभी मित्रों ने उसे आश्वासन दिया कि वे आर्थिक रूप से उसे तंग नहीं होने देंगे, लेकिन उसने किसी से आर्थिक मदद नहीं ली। जुगल से वह कभी जरूर मदद ले लेता था। उसका कहना था कि 'हम परिस्थितियों को देखकर चलना चाहिए। दूसरों से पैसा लेकर अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति करने के बजाय हमें अपनी सुविधाओं में कटौती कर लेनी चाहिए। मनुष्य चाहे तो बहुत कम पैसे में अपना निर्वाह कर सकता है।'

काका ने पूना में स्वदेशी भंडार खोला। सार्वजनिक सभा के कार्यकर्ताओं ने एक नया आंदोलन शुरू किया—स्वदेशी व्रत। कार्यकर्ता घर घर जाकर लोगों को शपथ दिलाते कि देश में बनी वस्तुओं का प्रयोग करें। कार्यकर्ताओं ने खुद अपने हाथों से कते-बुने खद्दर के वस्त्र पहनने शुरू कर दिए। आंदोलन काफी सफल रहा। समाचार-पत्रों ने भी इन खबरों को खूब उछाला। इसका परिणाम यह निकला कि सरकार की ओर से प्रेस-अधिनियम को और कठोर कर दिया गया।

अंग्रेजों की दमनकारी नीति चलती रही। लोगों को कोड़े लगाए जाते, झूठे मुकदमों में फँसाया जाता, जेल में बन्द करके यन्त्रणाएँ दी जातीं, पर इससे देशभक्तों की लेखनी नहीं रुकी, उनकी वाणी में कंपन पैदा नहीं हुआ। वासुदेव ने देश के अन्य जिलों में जाने की सोची, तो जुगल बोला— मैं

चलूगा।'

वासुदेव ने गभीरता से उत्तर दिया—'नही, मैं जब तुम्हारी आवश्यकता समझूगा, तब तुम्हें साथ ले जाऊँगा।' पत्नी ने भी निसकोच उसे जाने की आज्ञा दी। शिरढोणा मे कई पारिवारिक सदस्य आए हुए थे और उनका अब वापस गाँव जाने का विचार नही था, अत पत्नी की चिन्ता भी उसे नही थी।

देश भ्रमण के दौरान उसने देखा कि अंग्रेज चाय बागानो के लिए मजदूरो की भर्ती करते थे। अधिकाश मजदूर वही मर खप जाते थे। वासुदेव ने पूरी छान बीन की तो उसे पता लगा कि यहाँ से मजदूरो को छ पैसे दिन भर की मजदूरी के नाम पर ले जाया जाता है लेकिन वहाँ इन्हे पूरी मजदूरी नही दी जाती थी। सुविधाएँ तो दूर रही आधा पेट भले रहकर यन्त्रणाए सहकर ये लोग बीमारी से घिर जाते थे और इस प्रकार दूर आसाम के चायबागान इनकी कब्रगाह बन जाती थी। कई स्थानो पर उसने लोगो को समझाया—

'क्यो कौडी के भाव अपने प्राण देते हो? जब अभी से ये अत्याचारी तुम्हारे शरीरो को कोडो से छलनी किए दे रहे हैं तो सोचो, वहाँ क्या होगा? वहा से तो लाशें भी तुम्हारे घर नही आएगी।

'बाबू उपदेश देना आसान है—भूख कभी सहन की है? पेट की आग पानी से नही बुझती।' मरियल से एक व्यक्ति ने कहा।

इतने म एक कोडा उस व्यक्ति पर पडा और एक दैत्याकार भारतीय चिल्लाया—'भाग वह हरामखोर, शरीर तक से सँभलता नही और चला है आसाम। मुझे लगता है कही आसमान स बुलावा न आ जाए।' उसने फिर कोडा फटकारा।

वासुदेव सूनी आखो स देखता रहा। शाम को वह भर्ती करने वाले ठेकेदार से मिला।

यह पाप का काम आप क्या करते हैं?

मैं नही करूँगा, तो कोई और करेगा। यह कोई पाप नही है, बाबू, हम इन्हें जबरदस्ती तो ले नही जाते हैं।'

'आपको इन्हें, वहाँ की कठिनाइयाँ बतानी चाहिएँ।' वासुदेव बोला।

ठेकेदार वासुदेव की बात को सुनकर हँसा और बोला—'बाबू आप भी कमाल करते हैं। इनके सगे-सम्बन्धी वही मर खप गए हैं। कुछ ने घर आकर खाट पकड़ रखी है। इन सब बातों स क्या इन्हें पता नहीं लगता कि वहाँ इन पर क्या गुजरती है? मैं इन्हें बताऊं?—यह तो कुछ ऐसी बात हो जाएगी, जैसे कि कोई सौदा बेचने वाला, लेने वालो स यह कहे कि भाई मेरा सौदा खराब है—लेना चाहो तो ले लो।'

'चलो—आपकी बात मान ली पर इतना तो आपका फर्ज है कि इन्हें आवश्यक सुविधाएँ तो दिलाएँ। इन पर अत्याचार न हो, इस बात की गारंटी तो मालिकों से लें।'

'मैं समाज सुधारक नहीं हूं व्यापारी हूं। य बातें मरे व्यापार के लिए हानिकारक सिद्ध होंगी।'

वासुदव समझ गया कि इस आदमी म इन्सानियत नाम की चीज नहीं है। उसका आक्रोश उसके स्वर म झलक उठा।

'आपको क्या कहूँ? भारत मे हिन्दू और मुसलमान, दोनों ही भूख से मरते जा रहे हैं, तभी तो वे जीने की अपेक्षा मरना पसन्द करते हैं। अन्यथा क्यों वे आसाम जाते जबकि उन्हें वहाँ साक्षात अपनी मौत दिख रही है। उनकी गरीबी का फायदा आप उठा रहे हैं। अपने ही भाई उनका शोषण करने म तुले हुए हैं, तो अंग्रेजों को क्या दोष दें? मेरे पास अगर २५ भी बहादुर लोग हों, जो अपना घर छोड़कर देश के लिए आगे आ खड़े हो तो अंग्रेजो और तुम्हारे जैसे लोगों का मैं दिमाग ठिकाने लगा दूं।'

आप धमकी दे रहे हैं। मैं आपको जानता नहीं बूझता नहीं—य थानेदारी आप मुझे क्या दिखा रहे हैं?'

यह धमकी नहीं है सच्चाई है। समय की प्रतीक्षा करो। देश के और देशवासियों के दुश्मनों को सबक सिखाया जाएगा। समझ? आजादी आज नहीं तो कल जरूर हासिल होगी तब इस सच्चाई का सामना आप जैसे लोगों को करना पड़ेगा।

वासुदेव दुःखी हृदय से चला आया।

७

वासुदेव कोल्हापुर सांगली, मिरज इंदौर आदि स्थानो पर गया। उसने प्रयत्न किया कि इन स्थानो मे भी ऐसा कोई सगठन बन जाए, जो लोगो मे जागृति उत्पन्न करे। उसका प्रयत्न अधिक सफल नही हो सका। फिर भी कुछ मित्र उसे अवश्य मिले, जिन्होंने उसे आश्वासन दिया कि वे उसकी पूरी मदद करेंगे। वह वापस पूना चला आया। एक नई आशा, उमग और स्फूर्ति लेकर वह फिर से काम मे जुट गया। जुगल कही बाहर गया हुआ था। वापस आते ही वह वासुदेव से मिला।

घूम आए? क्या देखा?'

भूख विवशता और मौत के मुख म जाते इसान देखे है। वासुदेव भीगे स्वर मे बोला।

यह तुमने अब देखा है? मैं तो खुद इस स्थिति से गुजर चुका हूँ।'

'मुझे आश्चर्य इस बात का है कि हम खुद पैसे के लोभ मे अपने भाइयो पर अत्याचार कर रहे हैं। मैंने अपनी आँखो से ऐसे कसाई देखे हैं, जो बडी निर्ममता से भेड-बकरियो सदृश भूखे लोगो का सौदा अग्रेजो से करते हैं।'

'रुपए के लोभ के आगे यह तो कुछ भी नही है—वासू।

इन किस्मत के मारे गरीबो को अग्रेजों के चाय बागानों म भेजा जाता है। ये वहाँ रोटी की तलाश मे जाते हैं और आधे-पेट रहकर स्वग सिधार जाते हैं। इन लोगो के खून पर पलने वाली जोकें मुटिया रही हैं। उनका व्यापार पनप रहा है। खूब तमाशा है—भाई।'

'वासू, सोचता मैं भी हू पर गहराई से सोच नही पाता हूँ। तू जानता है, मैं ऊपर वाले पर कुछ अधिक ही विश्वास करता हू और ऐसी विचारधारा का हामी हू कि जो कुछ होता हैं ठीक होता है। कुछ बातें ऐसी होती हैं जिन्हें हम चाहें भी तो बदल नहीं सकते। अब जैसे लोभ वाली बात है। यह प्रवत्ति कभी समाप्त हो सकती है? तू आजादी आजादी चिल्ला रहा है, लेकिन मुझे एक बात बता कि आजादी मिलने पर क्या राम राज्य आ जाएगा। हो सकता

है कि गरीबों की इससे भी बुरी हालत हो जाए।'

'भविष्य की बातों पर मैं नहीं जाना चाहता हूँ पर इतना कह दूं कि और नहीं तो कम से कम हर व्यक्ति को अपने श्रम की पूरी कीमत तो मिलेगी, कोई भूखा तो नहीं मरेगा सबको बोलने की स्वतन्त्रता होगी।'

'गरीबों की लाशों पर महल बनते आए हैं और मरे यार, यह बनते ही रहेंगे।'

'तू बड़ा निराशावादी है' वासुदेव बोला।

'निराशावादी नहीं हूँ भविष्य को देख पाने की क्षमता रखता हूँ। मुझे लगता है आजादी प्राप्त करने के उपरान्त स्थिति बदतर होगी। लोग अमीर बनने के लिए देश तक को बेचने में संकोच नहीं करेंगे। गरीबों की बात तू छोड़। ऐसी स्थिति में हम कुर्बानी दें मुझ तो कोई लाभ नहीं दिखता। तात्या, लक्ष्मीबाई कुंवरसिंह, मंगल और अन्य सकड़ों लोगों ने अपने प्राण आजादी के लिए ही दिए थे न?'

'बिल्कुल, इसमें कोई शक नहीं।'

'उनके परिवार भी होंगे उन पर आश्रित कई और लोग भी रहे होंगे। इस बारे में कोई सोच रहा है?'

'शहादत देने वाले इन साधारण बातों में नहीं उलझते हैं। आजादी के बाद क्या कुछ होगा, यह बाद की बात है। हम इस समय की सोचनी है। भारत की सम्पत्ति को लूटकर बाहर भेजा जा रहा है, हमारे खून-पसीने के बलबूते पर ये मुट्ठी भर अंग्रेज ऐशोआराम की जिंदगी गुजार रहे हैं। भविष्य की एक काल्पनिक आशंका के आधार पर जैसा चल रहा है, वैसा चलने दें। मैं इससे सहमत नहीं हूँ। आजादी—आजादी है।'

'मैं तुमसे बहस नहीं करना चाहता हूं। मैंने भारतीय स्वाधीनता के लिए शहीद होने वालों के प्रति आज के सन्दर्भ में घटने वाली सच्चाई को तुम्हारे सामने रखा है। तुम भी देख रहे हो परख रहे हो। इससे और कुछ अधिक हो पाने की संभावना मुझे नजर नहीं आती।'

'कुछ पाने की आशा में अगर देश के लिए बलिदान देना हो तो वह तो अपने बलिदान की कीमत वसूल करनी हुई। ऐसे स्वार्थपूर्ण बलिदान से क्या

लाभ है ?'

जुगल हँसा और बोला—'तेरे और मेरे विचारों मे कभी एकरूपता नही आ सकती। छोड मुझे भूख लगी है—कुछ इतजाम करवा।'

'इस समय ?' वासुदेव मुस्कराया।

यार पेट को समय और असमय का क्या पता ? पेट ही तो है जिसने इन्सान को हैवान बना रखा है। विश्व म हो रहे सारे अत्याचार, अन्याय, लूट मार शोषण और हर प्रकार की आपा धापी का जिम्मेदार यही पेट है।'

'अच्छा—भाषण बन्द कर।' कहता हुआ वासुदेव उठकर अन्दर चला गया।

कुछ देर मे वापस आकर उसने कहा—'तेरे पेट का प्रबन्ध कर आया हूँ जरा प्रतीक्षा करनी पडेगी। मैं तो भूल गया था—तू कहाँ घूम आया ? तेरे पुलिस विभाग का क्या हाल है ?

मैं प्रशिक्षण के लिए गया था। दफ्तर मे कुछ उडती खबर सुनी है कि 'सार्वजनिक सभा' के कार्यकर्त्ताओ पर पूरी नजर रखी जाएगी। अंग्रेज अफसरो को खबर मिली है कि सभा के कार्यकर्त्ता अनुचित गतिविधियो मे लगे हुए हैं।'

नजर कौन रखेगा—तू ?'

वासू इस बात का मजाक मे मत ले।'

'वे नजर रखके क्या कर लेंगे ? गिरफ्तारी ? इससे अधिक और क्या हो सकता है ?'

'तू गिरफ्तारी को आसान समझ रहा है और अगर काले-पानी भेज दिया गया तो ?'

'एक नई जगह देखने को मिलेगी। बुरा क्या है ?'

बाई साहब ने आकर कहा कि रोटियाँ तैयार हैं। जुगल चटपट उठ गया।

यार पहले भोजन कर लू फिर बात करेंगे।

'हाँ—तू देर मत कर। वासुदेव हँसता हुआ बोला।

जुगल खा पीकर चला गया। वासुदेव उसकी कही हुई बातो पर विचार करता रहा। उसने मन मे सोचा ऐसे काम नही चलने का। मुझे कोई गुप्त सगठन बनाना पडेगा। छात्रो की मदद लेनी पडेगी। अगले दिन उसने वामनराव

से परामर्श किया।

मैंने एक गुप्त संगठन बनाने की सोची है।

मेरा पूरा सहयोग इसमें रहेगा।'

यह काम इतना आसान नहीं है।'

मैं जानता हूँ, पर दृढ़ निश्चय के सम्मुख हर काम आसान हो जाता है।

ठीक है। मैं स्थान की तलाश करूँगा जहाँ हमारी सभा हो सके। शहर में तो कोई भी स्थान निरापद नहीं है। हाँ, अस्त्र शस्त्र की व्यवस्था करो। दो चार तलवारों और बन्दूकों से काम नहीं चलने का।'

हो जाएगा।

शेष काम मैं कर लूंगा।' वामनराव से विदा लेकर वह व्यायामशाला में आया। वहाँ एकत्रित नवयुवकों पर दृष्टि डालकर उसने उन सबको अपने पास बुलाया। वे सब समझ गए कि आज कोई विशेष बात है। उसके सम्मुख आकर सब खड़े हो गए। उसने उन्हें बैठने का इशारा किया।

मैंने आप लोगों को इसलिए बुलाया है कि हम सब मिलकर विचार करें।'

कहिए। एक नवयुवक बोला।

आप लोगों में से कितने ऐसे हैं, जो मेरे साथ मिलकर देश सेवा का व्रत लेने के लिए तैयार हैं। वासुदेव ने गम्भीर दृष्टि उन पर डाली।

'हम सब तैयार हैं।' सामूहिक उद्घोष हुआ।

घर-बार मोह माया—सब त्यागनी पड़ेगी।

कुछ नवयुवक सोच में पड़ गए। आधे के करीब ने सामूहिक स्वर में कहा—हम तैयार हैं।'

भूख प्यास और अथक कठिनाइयां सहनी पड़ेंगी। रहने तक का ठिकाना नसीब नहीं होगा। बोलो—क्या तुम लोग मेरे साथ जोगी का सा रूप धारण करके दर दर फिर कर आजादी की अलख जगाने के लिए तैयार हो?'

दो चार फिर चुप्पी साध गए। पन्द्रह बीस ने इस बार भी अपनी सहमति व्यक्त की।

'हमारे इस प्रयास में प्राण भी जा सकते हैं। सर पर कफन बांध कर, जो एक बार निकल पड़ेगा उसका लौटना सम्भव नहीं हो पाएगा। सोच लो, और

समझ लो।'

'हमने सोच लिया है।'

'आप लोगो को गहराई से सोचने का मैं मौका दे रहा हूँ। तीन दिन बाद हम फिर मिलेंगे, अब आप जाइए।'

उसने निश्चय कर लिया था कि उसे प्रत्यक्ष रूप से रणागन मे कूदना है। उसने बम्बई जाकर विलसन की कब्र पर श्रद्धा-सुमन चढ़ाने की सोची, ताकि अपने विचारो को दृढता से क्रियान्वित कर सके। वह विलसन की कब्र पर श्रद्धा से झुका। उसे आभास हुआ मानो विलसन सामने खड़ा हो। वासुदेव के अधर हिले—

'मेरे मित्र, मैं जिस मार्ग पर चल पड़ा हू, उससे विचलित न होऊँ, यह आशीर्वाद दो।'

वह धीरे धीरे उठा और बाहर निकल आया।

दो दिन उसने एकान्त और सुरक्षित जगह तलाश करने मे लगा दिए। टगुलटेकडी की शैलमालाएँ, टेढे मेढे और भूलभुलया सदश माग, एक अजीब सा भटकाव पदा करती हुई अस्थायी पगडडियाँ उसे पसन्द आइ। कोसो दूर से आता इन्सान स्पष्ट नजर आ जाता था। उसने घोडा एक वक्ष से बाँध दिया और खुद पैदल ही दूर वक्षो के एक झुरमुट की तरफ बढा। पगडडी इतनी छोटी थी कि एक आदमी बडी कठिनता से चल सकता था। झुरमुट के निकट पहुँचकर उसने देखा कि पानी के प्राकृतिक स्रोत की अखण्ड जल धारा फूट रही है। उसने जी भर कर पानी पिया। कितना शीतल और मीठा पानी है।' उसने अपने चारो ओर देखा। रमणीय स्थान था, उस वृक्षो की ओट म से झाँकती हुई, पत्थरो की एक दीवार नजर आई। वह उधर बढ़ा। जीण शीण मदिर, न जाने कितनी सदियो से प्रकृति की मार झेल रहा था। सधे हुए कदमो से उसन मदिर मे प्रवेश किया। सामने ही भवानी की मूर्ति प्रतिष्ठित थी। उसने श्रद्धा से माँ को नमन किया। एक चक्कर लगाया। उसे आश्चय हो रहा था कि मदिर अन्दर से काफी साफ सुथरा था। उसने मन मे सोचा—'कोई भक्त होगा, जो आकर मदिर की सफाई कर जाता होगा।' बाहर आकर उसने चारो दिशाएँ छान मारीं, पर उसे कोई नजर नहीं आया। हा, मदिर से हट कर कुछ दूरी पर उसे एक गुफा सी जरूर

'जुगल को ले लेंगे वह इसी बात पर तो नाराज होकर गया है।'

'अच्छा।

'आदमी साफ दिल का है।'

'यह विशेषता भी हर व्यक्ति मे नही होती है।' वामनराव बोला।

'ऐसा आदमी लाखो मे एक मिलता है। मुझे उसके पास भी जाना है। तुम एक काम और करना?

'कहो?'

'दो घोडो का इन्तजाम कर लेना, जुगल अपने लिए खुद व्यवस्था कर लेगा।'

'हो जाएगा।

'तो मैं चलूँ। जुगल से भी मिल आऊँ।

वासुदेव पीछे के रास्ते से थाने के रिहायशी मकानो मे पहुँचा। जुगल अपने कमरे मे ही मिल गया।

'अरे! तू आदमी है क्या? यहाँ बैठा है।'

'तो और कहा जाऊँ?'

'तू तो निरा मूर्ख है यार, बात को समझता नही है।'

मैं पुलिसवाला ठहरा। दूसरी बात यह है कि मेरी बुद्धि मोटी है सो तेरी बात नही समझता।'

'अच्छा बकवास बन्द कर। क्या बेकार की बातें लेकर बैठ गया।'

यह बेकार की बातें हैं?

'तू मुझे एक बात बता यार, दोस्ती इतनी छोटी छोटी बातों से हिल जाती है क्या? तू मजाक भी नही समझता। ऐसी बात है, तो पहले की बातो के लिए मैं क्षमा मांगता हूँ और भविष्य के लिए अपनी मित्रता के द्वार बन्द करता हूँ। लेकिन याद रखना, मित्रता के द्वार बन्द तूने किए हैं और बन्द द्वार देख कर मैं वापस लौट रहा हूँ।' वासुदेव दरवाजे की ओर बढा। जुगल तेज आवाज मे बोला, 'यह नाटकबाजी बन्द कर, और यह बता कि तू किस काम से आया था?

कल मैं और वामनराव उस स्थान को देखने जा रहे हैं, जहाँ मैं अपनी गतिविधियाँ शुरू करूंगा।'

धीरे बोल। तू मुझे बेवकूफ समझता है पर यह थाना है यह भी मुझे बताना

पड़ेगा क्या ?'

'कल सुबह हम तेरी प्रतीक्षा करेंगे। घोड़ा ले आना।'

'ठीक है।'

वासुदेव वापस आ गया। अगले दिन वे प्रात ही प्रस्थान कर गए ताकि समय पर वापस लौट आएँ। बातो ही बातो में व उस स्थान पर पहुँच गए, जहाँ से उन्हें पैदल जाना था। उस जगह से उन्होंने चारा ओर दृष्टि डाली।

यहाँ से हर आने वाल पर दृष्टि रखी जा सकती है।' वामनराव न अपन विचार व्यक्त किए।

जुगल भी रुचिपूर्वक इधर उधर दख रहा था।

'क्या यही तेरी शरणस्थली बनेगी ? जँची नहीं।' जुगल बोला।

यह तो पहला पड़ाव है।' वासुदेव बोला।

'प्रशिक्षण दन क लिए जगह उपयुक्त है।' वामनराव ने कहा।

अब हम उधर चलना होगा। पगडंडी छोटी है सो सावधानी से घोड़ की लगाम पकड़कर हम आगे बढ़ना पड़ेगा। मैं तो पिछली बार घोड़ा यहीं बाँध गया था।' वासुदेव न वलो के झुरमुट की ओर इशारा करत हुए कहा। वासुदेव सब से आगे हो लिया। गन्तव्य तक पहुचने म कोई कठिनाई नहीं हुई।

मन्दिर के पास पहुँचकर वासुदेव बोला—

'घोड़ो को पानी पिला कर खुला छोड़ दो।

'इस पेड़ से घोड़ो को बाध दें।' वामनराव ने कहा।

'खुले छोड़ दो यार—ये भी कुछ चर लेंगे।'

'इधर-उधर न निकल जाएँ।'

'नहीं निकलेंगे। आओ।

वासुदेव दोनो को लेकर मदिर मे गया। परिक्रमा करके वे बाहर निकल आए।

'मदिर तो वीरान नजर आता है। तूने साफ सफाई करने म काफी परिश्रम किया है। कुछ भी हो स्थान है बहुत सुन्दर।' जुगल बोला।

'सफाई मैंने नहीं की है। मैं भी यहाँ जब पहली बार आया था, तो मदिर को साफ सुथरा पाकर मुझे बड़ी हैरानी हुई थी।' वासुदेव ने प्रत्युत्तर दिया।

'तो रात को परियाँ आती होंगी। ईश्वर की माया अपरम्पार है।

बेकार की बातें मत कर।' वासुदेव ने उसे टोका।

'मेरी बातें तुझे बेकार की नजर आती हैं।'

यहाँ कोई रहता है आओ छानबीन करें।' वामनराव बोला।

'कौन हो तुम लोग ?' वे तीनों ही चौंके। मंदिर के पिछवाड़े से एक साधु उनकी ओर आता हुआ बोला। लम्बा-तगड़ा, लाल आँखें काषाय वस्त्र धारण किए हुए सिर घुटा हुआ।

'बाबा आप कौन हैं ?' वासुदेव ने निडर होकर कहा।

'पहले मेरे सवाल का जवाब दो। आवाज गूंजी।

'और न दें तो ?' वासुदेव उसी स्वर में बोला।

'यहाँ से चले जाओ अभी।' बाबा ने धमकीपूर्ण स्वर में कहा।

न जाएँ तो ?

तो बहुत कुछ हो सकता है—समझे।'

'आप धमकी दे रहे हैं ?'

'नहीं समझा रहा हूँ।'

यह स्थान आपका खरीदा हुआ तो नहीं है।'

बाबा—आप तो साधु हैं साधु को तो निर्लोभी होना चाहिए।' जुगल बोला।

तू पचास्ती मत कर भड़वे।'

अबे साले, मुझे भड़वा कहता है।'

जुगल ने उसका हाथ पकड़ लिया। बाबा ने अपने हाथ छुड़ाने के लिए झटका दिया कि जुगल ने उसे अधर में उठा लिया।

बोल, कहाँ पटकूँ ?' आवेश में जुगल बोला।

'इसे नीचे उतार दे यार।' वासुदेव बोला।

जुगल ने झटके से उसे अपने सामने खड़ा कर दिया।

बाबा हम आपसे यहाँ लड़ने नहीं आए हैं। वासुदेव नम्र स्वर में बोला।

तुम लोग हो कौन ?'

'आदमी हैं—आदमी, दिखता नहीं है ?' जुगल ने मन की भड़ास निकाली।

'जुगल, तुम चुप रहो। वामन, तुम दोनों जाओ।'

'मैं यहा पहले भी आकर गया हूँ। उस दिन तो आप नजर नही आए।'

'हम फक्कडो का क्या ठिकाना ? लेकिन यह मेरा अस्थायी निवास है।'

मैंने भी यह स्थान अपने अस्थायी निवास के लिए चुना है।'

'शहर से इतनी दूर इन पहाडियो मे तुम्हारे आने का मकसद क्या है ?'

'मकसद देश सेवा का है।

'देश सेवा तो शहर मे भी की जा सकती है।'

'अस्त्र शस्त्र के सचालन के प्रशिक्षण हेतु शहर अनुपयुक्त है, कदम-कदम पर पुलिस नजर रखे रहती है।'

'समझा ! समझा !! 'बाबा ने अट्टहास किया। वासुदेव चुपचाप उसकी ओर देखता रहा। बाबा अपनी हँसी रोकता हुआ बोला—अंग्रेजो से टक्कर लोगे ?

'विचार तो है।'

'तब तो मुझे यह जगह छोडनी होगी।'

'आप चाहें तो यही रहे—हम दूसरी जगह तलाश कर लेंगे।'

'मैं तो अब आस पास भी नही रहूँगा। यहा की तो बात ही छोड दो।'

'ऐसी क्या बात है ?'

'अंग्रेज तुम लोगो के पीछे पडेंगे—यह निश्चित है। गेहू के साथ घुन पिसे, इससे पहले ही अन्यत्र चला जाना ठीक है।'

'आप बिल्कुल ठीक कह रहे हैं।'

'आओ, अपनी कोठरी तुम्हे दिखाऊ।'

वासुदेव बाबा के साथ साथ मदिर के पिछवाडे चला आया। एक स्थान पर पन्द्रह बीस पत्थरो का ढेर था। पास ही कोठरी का छोटा सा द्वार दिख रहा था।

'मैं बाहर जाता हूँ, तो इन पत्थरो से इस दरवाजे को बन्द कर जाता हूँ।' बाबा बोला।

'ओह ! तभी उस दिन मुझे यह जगह नजर नहीं आई।'

'हाँ दूर से यह दीवार ही नजर आएगी। आओ।'

बाबा झुक कर अन्दर चला गया। वासुदेव भी पीछे-पीछे जमीन के नीचे

बनी उस कोठरी में घुसा। कोठरी साफ-सुथरी थी। एक कोने मे चार बन्दूकें दीवार से टिका कर खड़ी कर रखी थी। वासुदेव को आश्चर्य हुआ। उसने बाबा से पूछा—'इन बन्दूकों का यहाँ क्या काम है ?'

मैं अंग्रेजी सेना का भगोड़ा सिपाही हूँ। रामोशी कबीले का हूँ। कबीले म जाकर रह नही सकता। मैं नही चाहता कि मेरे कारण मरे सगे-सम्बन्धियों पर अत्याचार हो, इसलिए वर्षों स यहाँ शरण ल रखी है। एक मेरा मित्र था। वह भी मेरे साथ ही सेना से भागा था। पिछले वर्ष वह चल बसा। आते समय इन बन्दूकों को हम साथ ल आए थे। अब बन्दूकों का तो काम है नहीं, सो पड़ी हैं। मैं समझता हूँ, तुम्हारे काम आ सकेंगी। देख लो।'

वासुदेव को मानो गड़ा हुआ खजाना मिल गया। एक एक करके उसने चारों बन्दूकें देखीं।

'सफाई की आवश्यकता है, काम द जाएँगी।'

चलो किसी के तो काम आइं।'

इतने म बाहर से जुगल की आवाज आई—'वासू! वासू!!'

'आ जाओ, तुम लोग भी अन्दर आ जाओ।'

'दखो बाबाजी ने य बन्दूकें हमे द दी हैं।'

'वाह!' वामनराव बोला।

वासुदव ने संक्षेप म बाबा की कहानी उ ह सुनाई।

'मैं क्षमा मांगता हूँ—बाबाजी।' जुगल बोला।

'क्षमा किस बात की भाई। मैं तुम्हारी जगह होता, तो वही करता जो तुमने किया।

चारों बाहर निकल आए। बाबा बोला—'तुम लोग यहाँ आओ रहो। मैं तो बहुत कम आता हू, घूमने का शौक है, इसलिए अधिकतर बाहर ही रहता हूँ।'

'आपकी कृपा है।' वासुदेव बोला।

वासुदेव बाहर आ गया। वे तीनों आस-पास के स्थान का निरीक्षण करने लगे।

देखा, ईश्वर जब देता है, तो छप्पर फाड कर देता है।' जुगल हँसते हुए बोला।

'लेकिन कई बार छप्पर भी फट जाता है और हाथ भी कुछ नहीं आता।'

वासुदेव ने मजाक के स्वर मे कहा।

ऐसा होता कम ही है। वामनराव बोला।

'आओ—इधर तुम्हें एक अदभुत जगह दिखाऊँगा। जुगल, इन लताओ को हटाओ।' वासुदेव ने जिधर इशारा किया, जुगल ने उधर की लताओ को हटाया।

'अरे! यह तो गुफा है'

'अन्दर चलने का विचार है क्या?' वासुदेव ने पूछा।

'तू पहले गया है क्या?'

'नहीं।'

'तो चलो तीनो ही चलते हैं।'

'ठहर जा—बाबाजी के पास अगर लालटेन हो तो लेकर आता हूँ। गुफा अँधेरी है।'

मैं जाता हूँ।' वामन तेज कदमो से चला गया। थोड़ी देर बाद वह लालटेन लेकर वापस आया।

'चलो जुगल तुम लालटेन पकड़ो।'

मुझे आगे ही चलना था तो रोशनी की क्या जरूरत थी?'

'क्या तू निशाचर है क्या?' वासुदेव हँसा।

'अँधेरे मे खतरा नजर नहीं आता है।'

'रोशनी मे सुरक्षा रहती है।'

मेरी कुछ अलग विचारधारा है। रोशनी मन म भय पैदा करती है। अँधेरे मे तो शेर भी आक्रमण करे तो मै समझू या गीदड है।' जुगल बोला।

तेरी विचारधारा निराली है।'

कुछ चमगादड़ फड़फड़ाई। गुफा कोई खास बड़ी नही थी।

क्या स्थान पसन्द आया?' वासुदेव ने प्रश्न किया।

स्थान तो उपयुक्त है लेकिन शहर से दूर नही पड़ेगा क्या?' जुगल ने राय व्यक्त की और उसका समर्थन वामराव ने भी किया।

'मैं अपने क्रियाकलापो को पुलिस की दृष्टि मे नही आने देना चाहता हूँ। दूसरी बात यह है कि रोज शहर आने जाने की अपेक्षा मैं पाँच-सात दिन के प्रशिक्षण शिविर लगाऊँगा। उस दौरान यही रहना होगा। शहर से

डेढ़-दो घण्टे से अधिक समय नहीं लगेगा।'

'हाँ—पैदल आने में इतना समय तो लग ही जाएगा। जुगल बोला।

'तेरे जैसे को दुगुना समय लग सकता है, मगर मैं ऐसे नवयुवकों को चुनूंगा, जो फुर्तीले और संतुलित शरीर के हों।' वासुदेव हँसते हुए बोला।

'तेरी इच्छा है—यार वसे मैं किसी से कमजोर नहीं पड़ता हूं।'

'भूख से तो कमजोर पड़ता है?'

'अच्छी याद दिलाई। साथ लाया हुआ खाना पड़ा पड़ा सूख गया होगा।'

'वामन तुम यह लालटेन वापस दे आओ और बाबा को भी भोजन के लिए निमन्त्रित कर आओ।'

वामन शीघ्र ही वापस आ गया। लालटेन उसने हाथ में ही पकड़ी हुई थी।

यार बाबा तो खिसक गया।

'आओ हम तो भोजन कर लें।'

तीनों ही मिलकर भोजन करने लगे। साथ ही आगे की योजना पर गहरी बातचीत होने लगी।

'वामन मैं मान लगा कर कह सकता हूं कि अंग्रेज अब कुछ ही वर्षों के मेहमान रह गए हैं।' वासुदेव कौर निगलते हुए बोला।

'कुछ ही वर्ष का मतलब?' जुगल बोला।

याने अधिक से अधिक साठ-सत्तर वर्ष और मान लो। चन्द लोगों को कुछ सुविधाएँ देकर ये कब तक भ्रमजाल में उलझाए रखेंगे?

'लोभ बुरी बला है। एक को देशी साहब बना देख कर और नहीं ललचाएँगे क्या? तुमने तो खुद देखा है कि दफ्तरों में इन देशी साहबों की क्या इज्जत है? हम ही लेलो—हमारे सामने अंग्रेज भारतीयों को गाली निकालते रहते हैं उन्हें अपमानित करते हैं और हम हँसते हैं या अंग्रेज अधिकारी के आदेश पर खुद ही उन पर पिल पड़ते हैं क्योंकि हम चाहते हैं कि जनता हमें भी सलाम करे और साहब कहे। जुगल ने सपाट लहजे में अपनी बात कही।

'तुम ठीक कहते हो, पर सभी समान तो नहीं होते न? अब तुम खुद ही देख लो तुम्हारे अंग्रेज-अधिकारी को किसी ने गोली मारी थी आखिर क्यों?'

किसी की व्यक्तिगत दुश्मनी रही होगी।' जुगल शांत स्वर में बोला।

'नहीं, व्यक्तिगत दुश्मनी के आधार पर ऐसा खतरा कम ही मोल लिया

जाता है। यह किसी उन्मादी व्यक्ति का काम था, जो भारतीयों पर होते अत्याचार को सहन नहीं कर सका। वह अधिकारी इस मामले में बदनाम तो था ही।'

हो सकता है।' जुगल बोला।

ऐसे ही कुछ उन्मादी व्यक्ति 'हम आज़ादी चाहिए' की भावना को जीवित रखते हैं। काले साहबों का हृदय परिवर्तन हो या न हो, पर अन्य लोगों की उनके प्रति घृणा तो बदस्तूर रहती है और गहराई से सोचो, तो यह घृणा अप्रत्यक्ष रूप से अंग्रेजों के खिलाफ भी काम करती है, क्योंकि जनसाधारण यह सोचता है कि अंग्रेज यह काम उनमें फूट डालने के लिए कर रहे हैं। मैं तो चाहता हूँ कि गोरे अधिक से अधिक लो। को खिताब बाँटें, ताकि एक रायबहादुर बनने पर वे हजारों लोगों के मन में अपने प्रति घृणा पैदा कर दें। वासुदेव ने जुगल की ओर देखा।

जुगल मुस्कराते स्वर में बोला— 'यह कोई जरूरी नहीं कि ऐसा होने से लोगों के मन में घृणा उत्पन्न हो ही। इसके विपरीत उनमें ललक भी तो पैदा हो सकती है।'

'ललक भी सबकी तो पूरी हो नहीं सकती। फिर शेष लोगों के मन में ईर्ष्या की आग उत्पन्न नहीं होगी?' वासुदेव का कथन जुगल के असमंजस को खत्म नहीं कर पाया।

वामन ने क्षमा माँगते हुए बीच में हस्तक्षेप किया—'अरे! जुगल भाई, पचासों भूखों के बीच में एक आध रोटी फेंक देने से क्या होगा? वे आपस में गुत्थमगुत्था नहीं होंगे क्या?'

बात समझ में आती है, पर ज़रा देर से आती है।' जुगल खिलखिलाया। वासुदेव काफी देर तक अपनी योजना पर बात करता रहा। जुगल को इसी बीच नींद भी आ गई। दोपहर ढल चुकी थी।

वासुदेव बोला—'इस कुंभकर्ण को उठा यार, चलने का समय हो गया है।'

वामनराव ने जुगल को झकझोरा। आँखें मलता हुआ वह उठ खड़ा हुआ।

'चलो, वापस चलने का समय हो गया है।' वासुदेव बोला।

'मैं तो यहीं रहना चाहता हूँ। क्या शांतिपूर्ण स्थान है? आज जैसी नींद तो कभी आई ही नहीं। तुम्हें मुझे उठाना नहीं चाहिए था।' जुगल बोला।

'वामन, चलो। इस लालटेन को मंदिर में देवी की मूर्ति के पीछे रख कर आ जाओ।' वासुदेव घोड़े की तरफ बढ़ा कि पीछे से जुगल भी बड़बड़ाता आ पहुँचा

'मैं यहाँ अकेला क्या करूँगा। जिन्हें प्रकृति से प्रेम नहीं, वे पत्थर होते हैं तुम लोगों का दिल ऐसी शानदार जगह छोड़ कर जाने के लिए कैसे तैयार हो रहा है?'

मेरे दोस्त, प्रकृति प्रेम से पेट नहीं भरता है।' वामन ने जुगल की बात का उत्तर दिया।

'हाँ भैया पेट ही तो पापी है।'

जुगल के कहने के अन्दाज पर दोनों ही हँस पड़े। हँसी मजाक करते हुए रास्ता पलक झपकते कट गया।

शाम को व्यायामशाला में वासुदेव ने फिर वही तीन दिन पुरानी बात उठाई।

अब मैं अंतिम रूप से पूछता हूँ कि मेरे साथ देश सेवा का व्रत कितने नवयुवक लेना चाहते हैं?' वासुदेव का स्वर गूंजा।

'ग्यारह हाथ खड़े हुए। वासुदेव ने उन लोगों के चेहरों की ओर देखा प्रत्येक नवयुवक के चेहरे पर दृढ़ता झलक रही थी। इसके बाद, वह उनसे एक एक करके मिला। हर दृष्टि से उसने उन्हें तोला परखा। अपने साथ, पहले दल के रूप में चलने के लिए उसने तीन नवयुवकों को चुना। विश्वासराव दौलतराव और कृष्णजी पन्त।

दोस्तो शेष सभी लोग उसी ढंग से व्यायाम और अस्त्र शस्त्रों का संचालन करते रहेंगे। अन्य मित्रों को भी लाइए। इतना कुछ सीखने से आप समय आने पर कम से कम अपनी और अपने परिवार की रक्षा तो कर पाएंगे। वह भी देश सेवा ही होगी। हम लोगों का अन्य कार्य पहले के समान चलता रहेगा। मैं भी समय समय पर आता रहूँगा। अन्त में एक बात कहूँगा। आजादी, आजादी होती है। इन विदेशियों ने हमारा खूब शोषण कर लिया है। हम में आपसी फूट और वैमनस्य के बीज बो दिए गए हैं, पर याद रखें हम किसी जाति धर्म के हों हैं एक माँ की सन्तान और उस भारत माँ के लिए प्राणों का उत्सर्ग करने में भी नहीं हिचकिचाएँगे।'

सब लोग उठ कर चलने लगे कि वासुदेव ने विश्वासराव, दौलतराव और कृष्णजी को रोक लिया। उन तीनो को उसने समझाया कि उन्हें कल किस मार्ग से और कहाँ जाना है तथा साथ मे क्या ले जाना है।

'बात समझ मे बैठ गई ?' वासुदेव ने पूछा।

'अगर हम आपके बनाए सारे सामान को किसी घोडे पर लाद कर ले जाएँ, तो आपको ऐतराज तो नही होगा ?' दौलतराव ने पूछा।

'मुझे कोई एतराज नही है पर मैं चाहता हूँ कि आप सारे सामान सहित पैदल ही पहुँचे, तो ठीक रहेगा। इससे दो लाभ होंगे—एक तो हमारा यह अभियान गुप्त रह पाएगा और दूसरा आप लोगों को अपनी क्षमता का पता लग जाएगा।'

'आपने बिल्कुल ठीक कहा है। घोडे का इन्तजाम इतना सरल नही है और इन्तजाम हो भी जाए तो खामखाह ही शक का एक कारण और बन जाएगा। दौलतराव स तुष्ट होकर बोला।

वासुदेव मुस्कराया और बोला—'अब आप जाकर तैयारी करिए। कल गन्तव्य पर मिलेंगे।'

तीनो चले गए। वासुदेव ने निकट बैठे वामनराव की ओर देख कर कहा—'मैं यहाँ आठ दस दिन रहूँगा। तुम्हे पीछे से यहाँ का कार्य सँभालना है। व्यायाम शाला के क्रियाकलाप पूर्ववत् चलते रहने चाहिए ताकि किसी को शक न हो। यहाँ यह प्रचार कर देना कि मैं गाव गया हुआ हू। यह मत भूलना कि हमारी निगरानी की जा रही है। वैसे यहाँ जगल है ही।'

'यहा की चिन्ता तुम मत करो।'

'एक काम और करना।

बोलो।

'एक घोडे का स्थायी रूप से प्रबन्ध कर दो।'

हो जाएगा।'

'मुझे बीच मे कभी भी कारतूस आदि के लिए आना पड सकता है। समय अधिक खराब न हो, इसलिए घोडा जरूरी है। पीछे से मेरे परिवार का ध्यान रखना। अगली बार आकर इन्हें घर छोड आऊँगा, ताकि एक अनावश्यक चिन्ता

समाप्त हो जाए।'

व्यायामशाला से निकलने के उपरांत वह जंगल से मिलता हुआ, घर पहुंचा। भोजनोपरात पत्नी से चर्चा करते हुए वासुदेव बोला— मैं सोच रहा हूं कि तुम्हें शिरढोणा छोड आऊँ।'

'मगर क्यो ?'

वासुदेव ने पूरी बात उसे समझाई। वह शान्त मन से सुनती रही। वासुदेव के कथन समाप्त करने पर वह बोली— मैं यहाँ से कही नही जाऊँगी।'

'लेकिन तुम्हे पुलिस वाले तग करेंगे।'

मैं अपनी रक्षा करने म समर्थ हूँ।

लेकिन मेरा ध्यान तो इधर रहेगा न ?'

फिर तो हो गई देश सेवा। आप तो अपने कर्म पर जुट जाइए। इधर की चिन्ता छोड दीजिए। मैं अगर यहाँ रहना कठिन समझूगी, तो खुद ही गाँव चली जाऊँगी। शेष परिवार का भार भी मुझ पर छोड दीजिए।'

'वाह ! भई अन्धे को क्या चाहिए—आँख ही न ?'

'आप बिल्कुल चिन्ता मत करिए।'

'अब मुझे चिन्ता नही है।

वासुदेव के सिर से मानो कोई बहुत बडा बोझ हट गया। अगले दिन आवश्यक सामान लेकर उसने प्रस्थान किया। मार्ग मे उसके मस्तिष्क मे नाना प्रकार की योजनाएँ बनती और बिगडती रही। योजनाओ के लिए धन चाहिए और उसके पास धन था कहा ? इतने बडे अग्रेजी साम्राज्य से टक्कर लेने का विचार ही अकल्पित था। खैर ! जब सिर ओखली म दे दिया है तो मूसलो म क्या डर ? घोडे को ठोकर लगते लगते बची थी। विचारो को छोडकर वह सचेत हुआ। पहाडी की जड मे एक सघन वृक्ष के नीचे तीनो साथी प्रतीक्षा कर रहे थे। उन्होने हाथ हिलाकर उसका स्वागत किया। उसने भी प्रत्युत्तर म हाथ हिलाकर अपनी प्रसन्नता प्रकट की।

'आओ—चलें।' वासुदेव घोडे से उतरता हुआ बोला।

तीनो उसके पीछे पीछे चलने लगे। मौसम बडा सुहावना हो रहा था। आकाश में बादल छितराए हुए थे। मद मद शीतल बयार अठखेलियाँ कर रही थीं।

पुलकित स्वर मे वासुदेव बोला—'एक-एक पत्थर, वृक्ष और हर मोड को गहरी दृष्टि से देखते चलो। हमारी गतिविधियो का केंद्र यही पहाडी है। इसलिए हमे यहाँ के चप्पे चप्पे का ज्ञान होना जरूरी है।'

धीरे धीरे वे गन्तव्य पर पहुँचे। वहाँ के प्राकृतिक सौन्दर्य को देखकर सभी अभिभूत हो उठे। बादल कुछ गहरे होते जा रहे थे।

'लगता है वर्षा होगी।' विश्वासराव बोला।

'तुम लोग आराम करो। मैं आस-पास घूम फिर कर आता हूँ। हाँ, घोड़े को दाना पानी दे देना। कहकर वासुदेव चला गया।

वे तीनो वास्तव मे थक चुके थे। मंदिर के प्रांगण मे वे पसर गए। वासुदेव गुफा के सामने से होता हुआ, एक छोटी सी पगडंडी पर आगे बढ़ता गया। कुछ दूर जाने पर एक चौडा सा समतल स्थान आया। इसके बाद पुन पहाडी का उठाव शुरू हो गया था। इस ओर काफी वृक्ष भी थे। वासुदेव उस समतल स्थान पर लौट आया। काफी देर तक वह वहाँ चहलकदमी करता रहा, मानो उस स्थान को नाप रहा हो। मन मे सन्तुष्टि के भाव लिए वह जिधर से आया था उधर ही लौट पडा। आसमान छँट चुका था। वे तीनो अभी तक आँखें मूंदे पड़े हुए थे।

'उठ जाओ भाई लोगो। इस प्रकार निढाल हो जाने से काम कैसे चलेगा? मान लो, कभी पुलिस हमारे पीछे पडी हो तो न जाने इन पहाडियो मे कहाँ-कहाँ भटकना पडेगा। हमे तो चलने फिरने भागने दौडने का कठोर अभ्यास करना पडेगा।'

वे तीनो उठे। वासुदेव उन्हे लेकर लताओ से आच्छादित गुफा के पास आया। उसने लताएँ हटाइं। वे तीनो गौर से उसे देख रहे थे।

आओ भई तुम लोग भी मेरी मदद करो। लताओ को इस प्रकार हटाना कि टूटे नही, ताकि आवश्यकता पडने पर गुफा को पुन ढका जा सके। यह स्थान हमारे सामान रखने के काम आएगा।

चारो ने सम्मिलित प्रयास से लताओ को इस प्रकार हटा दिया कि काफी प्रकाश गुफा के अन्दर जाने लगा। वासुदेव ने नजर दौडाई। उसे लगा कि गुफा मे पर्याप्त प्रकाश नही हो पाया।

'मैं रोशनी का इन्तजाम करता हूँ—जरा ठहरो।' कहता हुआ वासुदेव

मंदिर की ओर गया। देवी की मूर्ति के पीछे से लालटेन तथा अपने सामान में से माचिस की डिबिया और कुल्हाड़ी लेकर वापस आ गया।

लो, लालटेन जला लो। अन्दर पूरा प्रकाश हो जाएगा। गुफा को रहने लायक साफ सुथरा बनाना है। साथ ही एक स्थायी दरवाजा भी बनाना होगा, ताकि अन्दर रखा हुआ सामान सुरक्षित रह सके। विश्वास और दौलत गुफा में सफाई का काम करेंगे और कृष्ण तुम मेरे साथ आओ।'

विश्वास और दौलतराव अपने काम पर लग गए। वासुदेव और कृष्ण जी कुछ दूरी पर एक वृक्ष के नीचे जाकर खड़े हो गए।

पेड़ पर चढ़ना जानते हो ? वासुदेव ने कृष्णजी से पूछा।

जी।

'तो चढ़ जाओ। मैं तुम्हें नीचे से कुल्हाड़ी पकड़ा दूंगा। कुछ शाखाएं काट कर नीचे गिरा देना। उनसे हम गुफा के लिए दरवाजा बना लेंगे।'

कृष्णजी वृक्ष पर चढ़ गया। वासुदेव ने नीचे से कुल्हाड़ी फेंकी, जिसे कृष्णजी ने लपक लिया।

मैं रस्सी लेकर आता हूँ। सावधानी से शाखाओं को काटना। कालिदास वाली बात न हो जाए। हंसता हुआ वासुदेव रस्सियाँ लेने चला गया। कृष्णजी शाखाएँ काटता रहा। जब पर्याप्त शाखाएँ कट गई, तो वह नीचे उतर आया। दोनों ने मिलकर मजबूत दरवाजा तैयार कर लिया। और दरवाजे को उठा कर गुफा के पास ले आए।

हमारा काम तो पूरा हो गया है। आप लोगों का क्या हाल है ?' कृष्ण जी ने दरवाजा गुफा के मुंह पर जमाते हुए कहा।

विश्वासराव और दौलतराव गुफा से बाहर निकल आए।

दौलतराव बोला— हमारा भी काम पूरा हो गया है।'

दरवाजा तो बिल्कुल सही बैठा है।' वासुदेव बोला।

अब दो चार लम्बे भारी पत्थर ले आओ ताकि दरवाजे पर रखे जा सकें। वासुदेव बोला।

वे तीनों पत्थर लाने चले गए और वासुदेव गुफा के अन्दर निरीक्षण करने लगा। गुफा साफ सुथरी हो गई थी। वासुदेव ने तीन बड़े पत्थर लाकर चूल्हे

के रूप मे जमा कर रखे। कुछ ही देर मे वे तीनों भी च र लम्बे लम्बे पत्थर लेकर आ गए।

'अब ठीक है।' वासुदेव पत्थरो का देखकर बोला।

'आपने चूल्हा भो बना लिया पर धुआ कहाँ से निकलेगा ? गुफा मे धुए से दम घुट जाएगा। विश्वासराव बाला।

यह तो आपातकालीन चूल्हा है। वैसे भाजन तो बाहर बनेगा। आओ, अपना अपना सामान उठा लाएँ।'

चारो अपना अपना सामान उठाकर ले आए। एक समय का भोजन वे साथ लाए थे। हाथ मुँह धाकर उ होने भोजन किया।

मदिर के प्रागण म चलकर सोया जाए।'

'बिस्तर तो लाए नही है।' कृष्णजी बोला।

वासुदेव बडी ओर स हसा और बोला—'स्थायी निवास है, तो बिस्तर की जरूरत पडती है। हमन जिस काम को सरअजाम दने का दायित्व लिया है उसम जब हम पुलिस म बिल्ली चूहे वाला खल खेलेंगे, ता तुम देखोगे कि पत्थरो मे भी सुख की नीद आएगी। अभी स उसका अभ्यास कर लेना बेहतर रहेगा।'

आपने लाख रुपये की बात कही है। हम हर प्रकार के अभावा मे जीना सीखना होगा।'

गुफा के द्वार पर दरवाजा लगाकर वे सब मदिर के आगे बने छोटे प्रगाण की ओर रवाना हुए। वासुदेव ने जाकर घोडा खोला और उसे निकट के पेड से बाँध दिया।

घोड को दाना पानी द दिया था ? वासुदेव न पूछा।

जी दे दिया था।' दौलतराव ने उत्तर दिया।

वासुदेव भी बाहर आकर प्रागण म बठ गया। सभी थके-हार थ इसलिए नीद आने मे देर नही लगी। प्रात काल नित्य कम से निबट कर काफी दर तक वे कसरत करते रह।

क्यो ? रात नीद कसी आई ? वासुदेव ने कृष्णजी से पूछा।

पता ही नही लगा सुबह ही आँख खुली।

वासुदेव हँसा। उसने जाकर घोड को खोल दिया।

यह भी घूम फिर लेगा। हम भी अपने काम मे जुट जाएँ। आओ।' उसने उन तीनो को इशारा किया। तीनो उसके साथ, बाबा की कोठरी के पास पहुंचे।

'इन पत्थरो को हटाओ। वासुदेव ने कहा।

जैसे-जैसे पत्थर हटते गए उन तीनो की उत्सुकता बढती गई।

'इस स्थान म तो रहस्य ही रहस्य छिपे हुए हैं।' विश्वासराव बोला।

जब सारे पत्थर हट गए तो वासुदेव बोला— इस कोठरी मे बन्दूकें हैं, उन्हें निकाल लाओ।'

विश्वासराव और दौलतराव जाकर बन्दूकें ले आए।

'बडी पुरानी हैं।' विश्वासराव बोला।

'इनकी सफाई करनी पडेगी। काम दे देंगी।'

वे चारो बन्दूको की सफाई म जुट गए। वे काम म इतना खो गए कि कब दोपहर हो गई उन्हें पता ही नही लगा।

वासुदेव न उन्हे टोका— दौलत और कृष्णजी—तुम भोजन बनाने की तैयारी करो।'

दौलत और कृष्णजी चले गए। वासुदेव ने विश्वास से कहा—

विश्वास तुम कारतूस लेकर आओ। बन्दूको का परीक्षण तो कर लें।'

विश्वासराव कारतूस लेकर आ गया। वासुदेव उसे लेकर एक खुली जगह पर आ गया। एक एक करके चारो बन्दूको का परीक्षण किया गया।

क्यो ? ठीक हैं न ?' वासुदेव ने पूछा।

'जी।'

'लो, तुम भी चलाकर देख लो।

विश्वासराव ने भी बन्दूको को चला कर देखा।

विश्वास तुम अश्व महाराज को ढूढ कर ले आओ। घूमते घूमते न जाने किधर निकल पडे हैं। लगता है, इस प्राकृतिक सौन्दर्य ने उन्हें भी मन्त्र मुग्ध कर डाला है।' विश्वासराव हँसता हुआ सकीर्ण पगडडी पर एक ओर बढ गया। कुछ दूर जाकर एक समतल स्थान पर उसे घोडा मिल गया। इधर वासुदेव भोजन बनाने म मदद करने लगा था।

'मैं भी कुछ सहायता करू ?' कृष्णजी न निकट आकर कहा।

'नहीं यार, यहाँ कौन से पकवान बन रहे है ?' दौलतराव हँस कर बोला।

'कौन-सा भोजन पकवान नही है यार, भूखो के लिए सूखा टिक्कड भी पकवान से बढकर होता है।' कृष्णजी बोला।

हँसी मजाक करते हुए उन्होने भोजन किया। कुछ देर तक आराम करने के बाद वासुदेव बोला—

'सामान अन्दर रखकर गुफा का द्वार बन्द कर दो। लताओ को पूर्ववत् स्थिति मे कर दो। कृष्णजी, तुम घोड़े को लेकर चलोगे। विश्वास और दौलत तुम बन्दूकें उठा लो। कारतूस पूरे ले लेना। मैं निशानेबाजी के लिए स्थान देख आया था। वही चलना है।'

वासुदेव के कह अनुसार उन लोगों ने फटाफट काम कर लिया, फिर चारो उस स्थान पर पहुँचे जिसे कल वासुदेव देख आया था।

'वाह ! स्थान तो खूब लम्बा चौडा समतल है।' विश्वासराव बोला।

कृष्णजी घोड़े को बाईं ओर खुला छोड दो।'

वासुदेव ने उस समतल मदान के अन्तिम सिरे पर पहुँचकर, उपयुक्त स्थान पर, कुछ निशान बना दिए और वापस लौट आया।

उन निशानो पर गोलियाँ लगनी चाहिएँ। चलो अभ्यास शुरू कर दो। लापरवाही नही होनी चाहिए। एक एक कारतूस अमूल्य है।'

श्रीगणेश वासुदेव ने किया। उसने बन्दूक मे कारतूस डाला।

'मैं दाहिनी ओर के सबसे पहले निशान पर निशाना लगा रहा हू। कहते हुए उसने बन्दूक का घोड़ा दबा दिया। गोली ठीक निशाने पर जाकर धस गई। बन्दूक चलने की आवाज सामने पहाड़ी से टकरा कर वापस लौट आई। तीनो साथियो ने तालियाँ बजाई और फिर अभ्यास पर लग गए।

आकाश मे बादल गहरे होते जा रहे थे। उन्हे अभ्यास करते काफी देर हो गई थी। वासुदेव ने आकाश पर दृष्टि डाली।

'चलो लौट चलें। प्रकाश कम हो गया है। कारतूस भी समाप्त हो चुके हैं, और बादल भी बरसने के लिए तैयार है। तुम लोग चलो। मैं घोड़े को लेकर आ रहा हूँ।

चारों के ठिकाने पर पहुँचते ही वर्षा होने लगी। वासुदेव घोड़े को बाँध

बाँधकर, भागता हुआ मन्दिर के प्रागण मे जा खड़ा हुआ। मौसम नए अदाज में बहार दिखा रहा था।

विश्वासराव बोला— ठंडी हवाओ के साथ फुहारो का आनन्द तो एसे ही स्थान पर उठाया जा सकता है। देखो, आस पास की पहाड़ियो का रंग क्षण भर मे बदल गया है।'

'मैं तो कुछ और ही सोच रहा हू।' कृष्णजी बोला।

'तुम भी अपनी कह लो।' वासुदेव मुस्कराया।

शाम का भोजन कसे बनेगा ? अगर बरसात न थमी, तो भूखा ही सोना पड़ेगा। मुझे तो भूखे पेट नीद नही आती हैं। कृष्णजी उदास स्वर मे बोला।

वासुदेव खिलखिला कर हस पड़ा। कृष्णजी के कन्धे पर हाथ रखते हुए वह बोला, 'यार मैंने एक गलती कर दी। जुगल को साथ ले आना चाहिए था। तुम दोनो की जोड़ी ठीक रहती।'

'कृष्णजी, आप चिन्ता मत करिए। मुझे आशा है, बादलो को आप पर रहम आएगा। खिचड़ी बनाने मे देर नही लगेगी।' दौलतराव ने हँसते हुए कृष्णजी को ढाढस बँधाया।

कृष्णजी पहले के से उदास स्वर मे बोला— देखो, ईश्वर जो करेगा, ठीक ही करेगा।'

इस प्रकार, लगभग घंटा भर वे आपस मे मनोरंजन करते रहे। धीरे धीरे बादल छँट गए। चांद निकल आया था। दौलतराव और विश्वासराव ने गुफा मे जाकर भोजन बनाने की तयारी की। कृष्णजी और वासुदेव भविष्य की बात करने लगे। वासुदेव अपनी दाढ़ी पर हाथ फेरता हुआ बोला—

'मैं सोचता हू, युवक तो मुझे मिलते जाएगे, पर रुपया भी तो चाहिए। आज कितने कारतूस लगे। प्रशिक्षण देना है, तो लगेंगे ही। प्रबंध करना ही पड़ेगा।'

'मेरा विचार है कि हम धनिको से सहायता माँगनी चाहिए।'

'वे सहायता देने से इंकार कर दें तो ?'

'सख्त तरीका अपनाया जाए।

'सख्त तरीका ?'

'जी, ऐसी स्थिति मे उनसे जबरदस्ती धन वसूल किया जाए।'

'तुम्हारा कहना ठीक है। हम उनके सामने पहले हाथ फैलाएगे। निराशा हाथ लगने पर इनका विकल्प ढूढना ही होगा।'

'धनिक आर्थिक सहायता देने मे इसलिए सकोच करते हैं, क्योंकि उन्हें अग्रेजी सरकार का भय होता है।'

हाँ, यह भी एक मुख्य कारण है, अन्यथा कई तो बहुत उदार होते हैं।'

दौलतराव ने उन्हें आवाज दी। कृष्णजी ने गुफा तक पहुँचने मे इतनी फुर्ती दिखाई कि वासुदेव को हसकर कहना पड़ा—'यार, भोजन कही भागेगा नही।

खिचडी बनाई गई थी। चारो ने तसल्ली से भोजन किया।

वासुदेव भोजनोपरात बोला—'घोड़े के दाना पानी का ख्याल भी रखना। आकाश मे तारे निकल आए हैं। अब सम्भवत वर्षा नही होगी फिर भी सामान सावधानी से रख देना। यह न हो कि सुबह पानी मे तरता हुआ मिले।'

आप चिन्ता न करें। सारी व्यवस्था हो जाएगी।' विश्वासराव बोला।

'आते समय लालटन ले आना।'

'वह तो गई। मिट्टी का तेल कहाँ है?'

'खैर!' वासुदेव मदिर की ओर चल पड़ा। जब तक वे तीनो नही आ गए, वह टहलता रहा।

दौलतराव निकट आकर बोला—आज तो माँ के चरणो मे सोना पड़ेगा। प्रागण तो गीला हो गया है।'

तीन दिन गुजर गए। चौथे दिन वासुदेव ने पूना जाने की सोची। कारतूस तथा कुछ अन्य आवश्यक सामान भी लाना था। प्रस्थान करने से पहले उसने साथियो को आवश्यक हिदायत दी।

'आप चिन्ता न करें। कृष्णजी बोला।

हाँ, एक बात और ध्यान रखना। इस स्थान का मालिक एक साधु है। वह कभी यहाँ चला आता है। उससे लड झगड मत जाना। बन्दूकें उसी की हैं। वह फौज म सिपाही था। उससे तुम बहुत कुछ सीख सकते हो।'

घर पहुँच कर उसने खोज खबर ली। सब ठीक ठाक था। पत्नी ने कहा—'आप नहा-धो लीजिए। मैं भोजन तैयार करती हूँ।

'तुम भोजन तैयार करो। मैं वामन के पास हो आऊँ। बस, गया और आया।'

वासुदेव का 'गया और आया' काफी लम्बा हो गया। वह शाम को ही वापस आ पाया। भोजन किया और फिर निकल गया। रात उसने व्यायामशाला में पुजारी वामन और जुगल ने भाग-दौड़ करके उसकी माँगों को पूरा किया। भोर होने में देर थी। वह अँधेरे में ही टगुलटेकडी की पर्वतमालाओं की ओर मुड़ पड़ा। अभ्यास क्रम पुनः आरम्भ हो गया।

एक दिन वासुदेव ने अपने साथियों से कहा—'प्रातः तुम तीनों पूना वापस जाओगे। तुम लोगों का प्रशिक्षण पूरा हुआ।'

'लेकिन आप?' दौलतराव बोला।

मैं कुछ ठहरकर आऊँगा।'

हमें वापस आकर क्या करना होगा?' विश्वासराव ने पूछा।

तुम क्या करना चाहोगे?' कुछ खोए हुए वासुदेव बोला।

'आप जो कहें।'

गुरु दक्षिणा देना चाहते हो? वासुदेव मुस्कराया।

प्रयत्न करेंगे। कृष्णाजी ने कहा।

'व्यायामशाला में शेष समर्पित नवयुवकों को अस्त्र शस्त्र संचालन की शिक्षा दो। धनिकों के हृदयों को टटोलो। मैं अनुभव कर रहा हूँ कि धन के अभाव में हम पंगु हैं।'

प्रातः अश्व पर अपना सामान लादकर वे लौट पड़े।

८

वासुदेव नित्यकर्म से निवृत्त होकर, शीतल जल से नहाया। मंदिर में जाकर देवी की मूर्ति के समक्ष वह ध्यानावस्थित होकर बैठ गया। 'ओह! तुम यहाँ बैठे हो। मैं सोच ही रहा था कि यहाँ तुम जरूर मिलोगे।' चौंककर वासुदेव ने पीछे मुड़कर देखा। उसके मुँह से स्वर प्रस्फुटित हुआ—बाबा! आप!!

हाँ, क्या बात है? कुछ चिंतित लग रहे हो।'

'चिन्तित होना तो मैं सीखा ही नहीं। लेकिन यह जरूर सोच रहा था कि जिस कार्य का मैंने बीड़ा उठाया है वह पूरा कैसे होगा ? मुझे धन की आवश्यकता है।'

'महारानी विक्टोरिया की जय जयकार में शामिल हो जाओ, तो पैसा ही पैसा है।'

'बाबा !'

'मैं ठीक कह रहा हूँ—तुम्हारे इस त्याग से, इस चिन्ता से—क्या होना है ? खुद तो खत्म हो ही जाओगे, अपनी आने वाली पीढ़ी को भी बरबादी के कगार पर बिठा जाओगे।'

'मुझे चाटुकारिता करनी होती, तो इस मार्ग को क्यों चुनता ?'

'आज के चाटुकार, कल समाज पर हावी होंगे। आने वाले समय में देश के लिए मर मिटने वाले लोगों की सन्तानें भूखी मरेंगी। अपनी औलाद का अगर भविष्य बनाना चाहते हो, तो इस रोग से मुक्ति पा लो।'

'मेरे सामने भविष्य देश का है। यहां के भूखे-नंगे और विदेशियों के जुल्मों के शिकार होते हुए लोगों के सिवाय मुझे और कुछ नहीं सूझता है। मैं तो कल की भी नहीं सोचता हूँ। आज जो कुछ हो रहा है क्यों हो रहा है ? इसके आगे विचार शक्ति जाना ही नहीं चाहती है।'

'मैं तुम्हारी क्या मदद कर सकता हूं ? धन दौलत मेरे पास है नहीं। यह शरीर है।'

'आपको ऐतराज न हो, तो मदद माँगू ?'

'कहो—कहो, जरूर कहो।'

'मैं आपके साथ रोमोशे कबीलों में चलकर जान पहचान बढ़ाना चाहता हूँ।'

'इसके लिए तो तुम्हें मेरे साथ सह्याद्रि की पहाड़ियों में भटकना होगा।'

'मैं तैयार हूँ।'

'वेश भूषा भी साधुओं की सी रखनी होगी, क्योंकि वे लोग अपरिचितों से अधिक घुलना मिलना पसन्द नहीं करते हैं।'

'इस समय यहाँ गेरुवे वस्त्रों का प्रबन्ध कैसे होगा ?'

'मेरे पास एक जोड़ी अतिरिक्त है।'

'फिर तो काम चल जाएगा।' वासुदेव खुश होकर बोला।'

'आज मैं आराम कर लूं। बस सुबह चलेंगे।'

'मैं भोजन तैयार करता हूँ।'

'भोजन ?'

वासुदेव ने सारी बातें बाबा को बताईं और भोजन बनाने के लिए चला गया। बाबा ने नहा धोकर पूजा पाठ किया। वासुदेव ने आवाज दी।

'अरे! तुमने तो इस गुफा की काया ही पलट दी।'

अगले दिन वासुदेव ने स्नान कर, गेरुवे वस्त्र धारण किए और बाबा के चलने की प्रतीक्षा करने लगा। पक्षी अपने-अपने नीडों में से निकल कर पंख फड़फड़ा कर उड़ने की तैयारी में तत्पर थे। बाबाजी पूजा-कर्म से निबट कर वासुदेव के पास आए। उनके चेहरे पर हल्की स्मित रेखाएँ तैरीं, अधर खुले—

'लगता है, तुम्हें बड़ी व्यग्रता है।'

'हाँ मैं इन पहाड़ियों के चप्पे चप्पे से परिचित होना चाहता हूँ।'

'तो चलो।'

दोनों रवाना हुए। सर्पिल सँकरे मार्ग कभी उतार और कभी चढ़ाव। रुकते-बढ़ते, कभी बोझिल कदम, तो कभी तीव्र चाल से वे मंजिल-दर-मंजिल चलते गए। बाबा लोगों से उसका परिचय करवाते और फिर बड़ी आत्मीयता से कहते—

यह कभी तुमसे सहायता माँगने आए तो मुख मत मोड़ना।'

वासुदेव को बड़ा आनन्द आ रहा था। करीब पन्द्रह दिन हो गए थे। एक दिन बाबा ने कहा—'यह रास्ता तुम्हें पूना पहुंचा देगा। अब मैं विदा लेता हूँ।'

वासुदेव समझ गया कि अब बाबा को रोकना व्यर्थ है। उसका उद्देश्य पूरा हो गया था। प्रसन्नता से उसने बाबा को विदा किया और स्वयं भी बाबा द्वारा इंगित मार्ग पर चल पड़ा। घर पहुँच कर उसे पता लगा कि पत्नी तो गाँव चली गई है। पड़ोसी ने उसे चाबी थमा दी। शाम को तरोताजा होकर वह अपने अखाड़े पर पहुँचा। सबने उसे घेर लिया। वह उनकी उत्सुकता समझता था।

उसने उन्हें बताया कि वह कहाँ कहाँ घूम कर आया था। वामन, कृष्णजी, विश्वास और दौलत ने उसे अपने अपने क्रियाकलापों से परिचित करवाया।

'चन्दे का क्या हुआ ? इस बारे में लोगों की क्या प्रवृत्ति है ?' वासुदेव ने पूछा।

'इस मामले में तो निराशा ही हाथ लगी है।' वामन बोला।

'खैर ! एक बार फिर प्रयास करेंगे।'

'नवयुवकों को प्रेरित करने के लिए, हमने शिक्षण संस्थाओं आदि में गुप्त रूप से सम्पर्क किया, पर इस मामले में भी कोई विशेष सफलता नहीं मिली।' वासुदेव चुप रहा।

विश्वासराव पुनः बोला—'मुझे इसका एक कारण नजर आया है और वह है भय की भावना तथा नौकरी की चाह। अधिकांश नवयुवकों का कहना था कि वे पुलिस की सूची में नामजद नहीं होना चाहते हैं।'

'इस देश का कैसे भला होगा ?' वासुदेव भारी स्वर में बोला।

'देश की परवाह किसे है ही करते हैं। अधिकांश लोग तो ऐसी विचारधारा के हैं कि पेट भरने के लिए दो रोटी मिल रही हैं, तो इससे आगे सोचने का कष्ट क्यों किया जाए।' विश्वासराव बोला।

'खैर ! छोड़ो— हम कल से प्रमुख धनिकों के पास जाकर धन के लिए हाथ फैलाएँगे। एक प्रयास और सही। अब मैं जुगल से मिल आता हूँ।

वासुदेव अपने अखाड़े से निकलने को ही था कि जुगल आता नजर आया। वासुदेव को देखते ही वह दूर से ही चिल्लाया—

'धन्य भाग हैं मेरे। तुम्हारे दर्शन तो हुए।'

मेरा भी सौभाग्य है कि आपने खुद दर्शन दे दिए।'

अबे जा। जुगल ने वासुदेव के कंधे पर हाथ मारते हुए कहा।

मुझे लगता है तू कुछ कमजोर हो गया है।'

'सरकारी माल खाकर कोई कमजोर हो सकता है ? यार ! एक बात है, इस सरकारी विभाग में और चाहे कितने ही झंझट हों, पर खाने पीने की पूरी छूट है।' जुगल खिलखिलाया।

'पर तू कम ही खाया कर।' वासुदेव ने टोका।

'क्यों ? तुझे क्या कष्ट है ?'

'मुझे कष्ट यह है कि तू उसे अग्रजों का माल समझकर डकार रहा है, पर मेरे भाई, गहराई से सोच माल वह अपना ही है। नुक्सान हमारा खुद का हो रहा है।'

'मान गया यार ! मैंने इस ढंग से नहीं सोचा था। खैर ! ईश्वर जो करता है भला ही करता है और जो होता है, अच्छा ही होता है।'

और स्वत ही होता है। वासुदेव मुस्कराया।

'मैं तो खा पीकर आ गया हूँ। तूने अपना क्या प्रबन्ध किया है ?'

'जाकर बनाऊँगा।

'तो चल।' दोनों बाहर निकल आए। मार्ग में वासुदेव ने अपने क्रियाकलापों से जुगल को परिचित करवाया, पर उसने गौर किया कि वह उसकी बातों पर ध्यान नहीं दे रहा है।

वासुदेव ने उसे टोका— मैं क्या कह रहा हूँ तू ध्यान से नहीं सुन रहा है।'

'मेरा मानस ठीक नहीं है यार।'

'क्यों ?' वासुदेव ने दरवाजे पर लगे ताले को खोलते हुए कहा।

'बता भी नहीं सकता। बस, आभास कर रहा हूँ।'

'लगता है तू अपने सिद्धान्त से डिग रहा है जो कुछ होता है स्वत होता है और भला ही होता है। इस सिद्धान्त से विश्वास हटने पर ही मानस आन्दोलित होता है।'

'नहीं, ऐसी बात नहीं है। इस पर तो मैं आज भी पहले जितना ही विश्वास करता कि तू लगता है कि मैंने बेकार ही जन्म लिया है। मेरा अपना कोई अस्तित्व ही नहीं है।

मेरे दोस्त यह विचारधारा बड़ी खतरनाक है। लगता है, तू वैराग्य भावना की ओर बढ़ रहा है।'

तू तो मजाक पर उतर आया है।' वह भोजन बनाने में वासुदेव का हाथ बटाने लगा।

वासुदेव ने मजाक में उससे पूछा— तेरी भी इच्छा हो, तो कुछ ज्यादा बना लूँ।'

'अब तू कहता ही है तो कैसे टालूँ ?'

'साला—पेटू !' दोनों हँस पड़े।

भोजन करने के उपरांत जुगल ने फिर बात छेड़ी।

'मेरी बात को तू गंभीरता से ले यार !'

'तेरी बात कभी गंभीर रहती है ?'

'मैं आजकल मानसिक रूप से बीमार रहने लगा हूँ। ऐसा पहले नहीं होता था।'

'आखिर बात क्या है ?'

'हमारे यहाँ दो कैदी आए हैं।'

'किस जुर्म में ?'

'बड़ा संगीन आरोप है—देशद्रोहियों को मदद पहुँचाना।'

'देशद्रोही ?'

'वे भारत को आजाद करवाने की कोशिश में लगे लोगों की मदद करते रहे हैं।'

'उन्हें तो देशभक्त कहना चाहिए। देशद्रोही तो वे हैं, जो अंग्रेजों की गुलामी कर रहे हैं।'

'तुम्हारे और मेरे कहने से क्या होता है। उन्हें भयंकर यातना दी जा रही है। मैं उनकी प्रशंसा करता हूँ। न जाने किस मिट्टी के बने हुए हैं। आयु भी कोई अधिक नहीं है। उन पर अत्याचार होते देखकर मुझे अपने आपसे ग्लानि हो गई है। मैं भी कोई इन्सान हूँ। मेरी उद्विग्नता का यही कारण है।'

'मैं समझ गया। तू एक बात पर विचार कर। अगर यातनाओं को हम नहीं सहन करेंगे, तो कौन करेगा ? हो सकता है, आने वाले समय में ऐसे लोगों को कोई याद भी न रखे, किंतु उनके मन में तो तसल्ली रहेगी न कि देश की स्वाधीनता में उनका भी योगदान रहा है। अब रही अस्तित्व की बात। अस्तित्व प्रत्येक का होता है। विश्व में ऐसा कोई प्राणी नहीं है जो अस्तित्वविहीन हो और ग्लानि, उद्विग्नता ये सब बेकार के शब्द हैं। हर व्यक्ति की अलग-अलग क्षमता होती है। हो सकता है कोई काम मेरी क्षमता से बाहर का हो। मैं उसे न कर पाऊँ। इसमें ग्लानि कैसी ? ग्लानि वहाँ होती है, जहाँ जानबूझ कर गलत कार्य

किया जाए।'

'खैर! तू थका हुआ होगा। आराम कर। मैं चलता हूं।' जुगल चलने के लिए खड़ा हुआ।

'यहीं सो जा। सुबह चले जाना।'

'आजकल सख्ती हो रही है। बिना आज्ञा रात को बाहर रहना मना है।'

'ठीक है। कल तो आएगा?'

'जरूर।'

'शाम को ही आना। दिन में मैं चन्दे के लिए निकल जाऊंगा।'

'ठीक है।

जुगल चला आया। उसके मस्तिष्क में वे दोनों कैदी घूम रहे थे, पर वह विवश था। उनकी मदद करने की कोई गुंजाइश नहीं थी। जब से वे दोनों इस कारागार में लाए गए थे, तब से उसकी आंखों की नींद उड़ गई थी। दूसरे दिन वह अवसर की तलाश में रहा। दिन में उसे मौका मिला।

अंग्रेज अफसर बोला—

'रूम नम्बर चार के कैदियों को दस नम्बर में शिफ्ट करवा दो।'

जुगल चला गया। ये दोनों वही कैदी थे, जिनके बारे में जुगल सोच रहा था। उसने जाकर चार नम्बर कमरे का दरवाजा खुलवाया। वे दोनों जुगल को देख रहे थे।

जुगल ने सन्तरी को कहा—'इन्हें दस नम्बर कमरे में ले आना है। इनके हाथ पीछे करके हथकड़ियां डाल दो।'

सन्तरी ने आज्ञा का पालन किया।

'चलो।' डगमगाते कदमों से वे जुगल के पीछे चलने लगे।

दस नम्बर कमरा जेल का सबसे सुरक्षित कमरा माना जाता था। रास्ते में एकान्त देखकर जुगल धीमे स्वर में बोला—'भागना चाहोगे क्या?

'क्या मतलब?' उनमें से एक ने आश्चर्य से पूछा।

अगर मैं तुम लोगों की जेल से भागने की व्यवस्था करूं'

'जी नहीं, धन्यवाद।' दोनों ने जुगल का वाक्य पूरा होने से पहले ही उत्तर दे दिया।

'मगर ' जुगल ने चलते-चलते, इधर-उधर देखकर कहना चाहा कि वे दोनो पुन बोल पड़े— आपकी सहृदयता के लिए धन्यवाद । भागकर हम अपने माथे पर कलक का टीका नहीं लगवाना चाहते हैं ।'

इसका अजाम जानते हो ? जुगल ने कहा ।

'अजाम सोचकर ही आए हैं ।'

जुगल फिर कुछ नहीं बोला । उन्हें दस नम्बर कमरे म बद करवा के उसने अफसर को काय पूण कर लेने की सूचना दी । वह अब पहले से भी अधिक उदास हो गया था । छुट्टी होते ही वह अपने कमरे मे आकर लेट गया । विचारो की कड़ियाँ जुड़न लगीं ।

धन्य हैं इनके माँ बाप । वाह ! क्या बहादुरी और हिम्मत है ? इस छोटी उम्र म इतने उच्च विचार । इनका दोष क्या है ? इन पर इतना जुल्म क्या किया जा रहा है ?' विचारो ने पलटाखा या अपना वासुदेव भी कम नहीं है । अगर वह भी कभी इसी तरह इन दरिंदो के पजो मे फँस गया तो ! —उसने विचार झटका । उसे बड़ा बुरा लगा । ऐस विचार उसके मस्तिष्क मे आए ही क्यो ! वह उठ खड़ा हुआ, ताकि विचारो की श्रृखला पुन न जुड़ सके । घर स निकलकर वह बाजार मे आ गया और निरुद्देश्य इधर-उधर चक्कर लगाता रहा । लोग उसे शकित दृष्टि से देखते थे । उनकी दृष्टि मे उसके प्रति घृणा और भय की मिली-जुली भावना होती थी । एक छोटी सी दुकान के आगे आकर वह रुका ।

'क्यो रे रघू ! क्या हाल है ?' जुगल ऊँची आवाज मे बोला ।

अरे ! आप आइए । जमीन पर दरी बिछाते हुए रघु बोला । जुगल दरी पर बैठ गया । उसने इधर उधर दुकान मे पड़ी सामग्री पर दृष्टि डाली ।

'दुकान मे मामान तो काफी भर लिया ।' आह्लादपूर्ण स्वर म जुगल बोला ।

'मालिक, आपकी दुआ है ।' रघु विनीत स्वर मे बोला ।

'अरे मालिक तो ऊपर वाला है । दुआ उसकी चाहिए ।'

'नही मालिक, मैं यह कैसे भूल सकता हूँ कि मैं एक गुडा था । आपने यह दुकान खुलवाकर मेरा जीवन बदल दिया ।'

'अरे, तू सही रास्ते पर आ गया, तो इसमे मेरा क्या अहसान है।'

'असहान तो है ही। अच्छा, आपका आज पधारना कैसे हुआ ?'

'इधर से गुजर रहा था, सोचा तुझे देखता जाऊँ। अच्छा अब मैं चलू।' यह चलन के लिए खडा हुआ।

'जरा ठहरिए।' रघु बोला।

कुछ ही देर म उसने दो सौ रुपये लाकर जुगल को पकडा दिए।

'आपके अहसान का बदला तो मैं चुका नहीं सकता।'

'फिर यह क्या है ?'

'यह आपका ही दिया हुआ था। अब मैं इस लायक हो गया हू कि कर्जा '

'छोड यार, कौन किसको कर्जा दे सकता है। इस लेने देने के वहम से ही तो दुनिया का बेडा गर्क हो रहा है।' झुँझलाकर जुगल बोला।

'मालिक, इन रुपयो को लौटाने के पीछे मेरा यह मकसद है कि आप इनसे किसी और का जीवन सँवार सकेंगे।'

'यह काम तुम भी कर सकते हो।'

'नहीं, यह हर एक के बलबूते की बात नहीं है। इसके लिए गज भर का कलेजा चाहिए और मेरे पास वह है नही। हँसते हुए रघु बोला।

'खैर ! ला।' जुगल वासुदेव के अखाडे (व्यायामशाला) की ओर चल पडा।

रघु के साथ उसका हँसी मजाक चलता रहता था। रघु किसी का सामान उठाने के चक्कर मे फँसा था। थाने म लाने के बाद उसका हाल बेहाल किया जाने लगा। जुगल को उस पर दया आई और उसने उसे छुडा दिया, पर छूटने के बाद वह उसके गले पड गया।

'आपने तो मुझे न घर का रखा और न घाट का।'

'क्या ? क्या बकता है ये मार मार कर तेरी खाल मे भुस भर देते। मैंने सोचा, तू बेमौत क्यो मरे, छुडा दिया। अब भाग जा और फिर ऐसा काम मत करना।

'उपदेश देना बहुत सरल होता है मालिक। पेट भरने के लिए कुछ न कुछ

करना ही पड़ता है।

'करने के लिए यही बचा है क्या ? मजदूर मेहनत क्यों नहीं करता ?'

'मेरा शरीर आपको इस लायक दिखता है ?'

'तू जोंक की तरह चिपका जा रहा है। यह बता कि तू क्या [illegible] है ?'

'दुकानदारी।'

'इस काम को शुरू करने में कितने रुपए लगेंगे ?'

'यही, सौ सौ।'

'दुकान का प्रबन्ध है ?'

'पैसे हाथ में हों तो क्या नहीं हो सकता ?'

'ठीक है—कल ले जाना।'

अगले दिन वह ठीक समय पर [illegible] रुपये उसे थमाते हुए कहा—'एक [illegible] यह कमाई बरबाद नहीं होनी चाहिए।'

'बस ?' जुगल ने आश्चर्य व्यक्त किया।

'शेष आश्वासन मिले हैं। कुछ जगह साफ लहजे मे इन्कार और कहीं विवशता भी व्यक्त की गई। वासुदेव ने हँस कर कहा।

'ले—यह दो सौ रुपए मैं देता हूं।' शान्त स्वर मे जुगल बोला।

'तुझे यह जोश क्यो चढ़ रहा है ?'

'मेरा भी तो कुछ अंशदान होना चाहिए।'

'लेकिन तेरे तो विचार भिन्न हैं '

'विचारों को मार गोली। वह हमारी आपस की बात है।'

'मैं इसे ठीक नहीं मानता। तुझे जरूरत पड सकती है। मैंने निर्णय किया हुआ है कि केवल धनिकों से धन एकत्रित किया जाएगा।'

अरे ! मैं कोई धनिकों से कम हूँ। दिल देख मेरा।'

'मैं मानता हूं। तू तो दिल का कारूँ है—कारूँ।'

'तो फिर इन रुपयो को रख ले। मेरे पास इतने ही हैं। लाख-दो लाख मैं दे नहीं सकता।

'अरे ! जुगल भाई इन दो सौ रुपयों की बराबरी धनिकों के अरबों रुपए भी नहीं कर सकते। हम सब आपको धन्यवाद देते हैं। कृष्णजी बोला।

'अब आप लोग जाइए। सुबह से भूखे प्यासे फिरे, और हाथ भी कुछ नहीं आया। मैं चाहता हूं कल और प्रयास करके देख लिया जाए। सुबह सब यहाँ एकत्रित हो जाएँ यहीं से चलेंगे।'

जुगल और वासुदेव भी चलने के लिए खड़े हुए कि वामनराव बोला—

'घर जाकर अब क्या करोगे ? मेरे यहाँ चलकर गप शप मारेंगे। वहीं भोजन कर लेंगे।' तीनों चल पड़े वामन के घर पहुँचने तक तीनों खामोश रहे। जुगल ने बातचीत शुरू करने के निमित्त प्रश्न फेंका—

'वासुदेव, मैं सोचता हूँ कि तुम्हें एक बार पुनः अपने मार्ग के बारे मे सोच लेना चाहिए। वापस लौट पाना संभव नहीं होगा ?'

वासुदेव खिलखिला कर हंस पड़ा।

'वाह रे मूर्खाधिराज ! यह बात अब उठा रहा है जब मैं उस स्थान पर

पहुँच चुका हूँ जहाँ से लौटने की कल्पना करना भी असम्भव है।'

'मैं मूख नही हूँ। मुझे तुम्हारी चिन्ता है। तुम्हें कही से मदद भी नही मिल रही है।'

'मैं तुम्हारी भावनाओ को समझता हूँ मगर जोखिम क कार्यों म अकेला हा कूदना पडता है। समस्या यह है कि किसी को विश्वास ही नहीं हो रहा है कि प्रयत्न करने पर हम आजाद हो सकते हैं, यही कारण है कि व भयवश हम लोगा की मदद नहीं कर पा रह हैं। अब तुम बताओ, कैसे इन लोगा को विश्वास दिलाया जाए? यही एक उपाय है न कि इ ह कुछ करके दिखाया जाए। मैं जानता हूँ कि बिना साधनो क रणभेरी बजाना मूखता है मृत्यु को निमत्रन करना है, पर यह मान के चलो कि इसके सिवाय कोई रास्ता भी नही है। खतरा है, पर दुस्साहस करना ही पडेगा।

'यह तो आत्मघात है।' विचारो मे खोया हुआ जुगल बोला।

'हाँ—आत्मघात है, पर देश के लिए लोगा को प्रेरित करने के लिए।'

मुझे ऐसे विचारो से घृणा है जो अन्धानुकरण स प्रेरित हा और आँखा के आगे की सच्चाइया को नकारत हो। तात्या भटकता रहा किसी ने उस शरण नही दी। उसे फाँसी पर लटका दिया गया किसी न उफ तक नही की। वह मर गया या समझो मार दिया गया, तो इसस कितने लोग प्रेरित हो गए?'

'ये बेहूदा विचार हैं। तुम्हारे सोच का दायरा सीमित है।'

'यार, एक बात मेरी समझ मे नही बैठती, सामन दिख रहा है कि कुआ है। फिर जानबूझ कर उसमे छलाग लगाने मे क्या समझदारी है? मैंने तुमसे उन दो कदियो का जिक्र किया था न?'

'अरे हाँ, उनका क्या हुआ?'

कौन से कैदी?' वामनराव न पूछा। जुगल ने एक बार फिर से कहानी की पुनरावत्ति की और भर्राए स्वर म बोला—

'आज मैं उन्हें अपने हाथो से कमरा नम्बर दस मे छोडकर आया हूँ। जानत हो कमरा नम्बर दस का मतलब?'

'नहीं।'

'कमरा नम्बर दस यानी यंत्रणाओं का आखिरी पड़ाव। दोनों मारे जाएँगे और चुपचाप उनकी लाश ठिकाने लगा दी जाएगी एक गुमनाम मौत। उन पर भी देशभक्ति का भूत सवार हो रखा है। क्या लाभ है?'

'हाँ, यह भूत ही है, जिस पर सवार हो गया, हो गया, फिर तो मरने पर ही उतरता है।' वासुदेव ने हँस कर बोझिल वातावरण को कुछ हल्का किया।

'खाना तैयार है। आओ जुगल भैया। वामनराव बोला।

'आज भूख नहीं है दोस्त।'

'नखरे मत कर। या तो भोजन कर, अथवा चलता बन।'

'चलना ही ठीक है।'

उन दोनों के रोकते रोकते, वह तीव्र कदमों से अँधेरे में लुप्त हो गया।

'यह क्या पागलपन है? वामनराव बोला।

'भावुक है न? मुझे हद से ज्यादा चाहने के कारण भी ऐसी हरकतें कर बैठता है। तुमने समझा यह ऐसी बातें बार बार क्यों करता है?'

'मेरा विचार है आपको विचलित करने के लिए वह अक्सर ऐसी बातें करता है।'

'हाँ पर, इसके पीछे उसका कोई स्वार्थ नहीं है या कोई बुरी भावना नहीं है। वह मेरा अहित नहीं देख सकता। सम्भवतः कैदियों को नारकीय यन्त्रणाओं में से गुजरता हुआ देखकर वह अपनों के लिए चिंतित हो जाता है कि कहीं उन्हें भी इन्हीं यंत्रणाओं में से होकर न गुजरना पड़े। वैसे उसका तकिया कलाम है कि 'जो कुछ भी होता है स्वतः ही होता है पर परपीड़ा के आगे न जाने क्यों कमजोर पड़ जाता है।'

'स्वभाव है, अपना अपना।

भोजन के साथ साथ बातें होती रहीं।

इस आदमी में एक और भी विशेषता है। यद्यपि इसने कभी नहीं बताया पर मुझे पता है। यह अपनी तनख्वाह अधिकांश ऐसे लोगों पर लगा देता है, जो आदतन अपराधी न हों। बाजार में चले जाओ ऐसे पचासों व्यक्ति मिल जाएंगे जो पहले चोर थे पर अब छोटे मोटे धंधे करते हुए, निहायत ईमानदारी से अपना पेट भर रहे हैं। मैं एक किस्सा सुनाता हूँ। एक दिन मैंने देखा कि यह महाशय

बाजार में एक व्यक्ति पर पिले हुए हैं। मैंने इन्हें अलग किया और बाद मे शान्ति से पूछा कि बात क्या है ? उत्तर मिला—'वह जेबकतरा था। मैंने इसे कोई छोटा मोटा धन्धा करने के लिए पचास रुपए दिए थे, पर आज आस पास पूछने पर पता लगा कि यह अब भी अपने पुराने धन्धे पर जुटा हुआ है और मैं इसे ठीक करने पर लग गया।' वामन और जुगल दोनों ही हँस पड़े।

'आपने खूब किस्सा सुनाया।' वामन अभी भी हसे जा रहा था।

'ऐसे साफदिल आदमी बहुत कम होते हैं।' वामन स्थिर होकर बोला।

भोजन करने के उपरान्त वासुदेव अपने अखाड़े मे चला आया। वह नींद के आगोश म सिमटने से पूर्व आज की बीती घटनाओं पर विचार करता रहा। प्रात ठीक समय पर उसके सहयोगी एक-एक कर पहुँचते गए। सभी के एकत्रित हो जाने पर वासुदेव ने दो दल बना दिए। पहले दल का नेतृत्व वामनराव ने सँभाला और दूसरे दल को खुद वासुदेव लेकर चला। सेठ भीखमचन्द की हवेली मे जसे ही वासुदेव घुसने लगा कि दरबान ने रोक लिया।

'हमे सेठ जी स मिलना है।' वासुदेव मीठे और सहज स्वर मे बोला।

'इतनी सुबह ?' दरबान ने अपनी अहमियत जँचाई।

आप सठजी को सूचित कर दें कि वासुदेव मिलना चाहता है।'

'सार्वजनिक सभा वाला वासुदेव ?'

'जी हाँ।'

'अरे ! वाह भाई, तुम्हें क्या रोकना है।'

वासुदेव, साथियों के साथ हवेली के विस्तृत बगीचे म से होता हुआ मुख्य द्वार पर पहुँचा। वहाँ भी एक दरबान बैठा हुआ था। वासुदेव न वहाँ भी अपना पहले वाला वाक्य दोहरा दिया।

'मैं सठजी को सूचित करवाता हूँ। आप जरा प्रतीक्षा करें।' कहता हुआ भारी भरकम दरबान अन्दर चला गया।

यह हाल है इस गुलाम देश के गुलामों का। आजादी मिले या न मिले, इनकी सेहत पर क्या असर पड़ता है ? दरबानों चौकीदारों नौकरों स घिरे ये अपने आप को शहंशाह से कम नहीं मानते। सही है, गुलामी इनके जीवन मे खलल भी क्या डाल रही है ? अपमान इनके लिए मान है।' वासुदेव बड़बड़ाया।

'ये अंग्रेजों को कर देने के लिए गरीबों का खून चूस रहे हैं। इन्हीं रुपयों के बलबूते पर ये स्वाधीन भारत में भी अपनी पैठ कर लेंगे। पैसा जनता का और ऐश ये करेंगे।' वामन बोलता रहता, तभी दरबान ने आकर सूचना दी—'आप अन्दर चल कर बैठिए।'

'अरे ! फत्तू—' उसकी आवाज पर एक अधेड़ व्यक्ति निकट आया। दरबान बोला— बाबू लोगों को बैठक में बिठा दे।'

उस व्यक्ति के पीछे पीछे वे एक बड़े हॉल में आ गए। हॉल की सजावट देखते ही बन रही थी।

आप विराजिए। कहता हुआ अधेड़ नौकर चला गया।

कुछ ही देर में एक मोटी तोंद वाले व्यक्ति ने बैठक में प्रवेश किया। वासुदेव सहित सभी उसके सम्मान में खड़े हो गए।

'बैठिए बैठिए।' सेठजी घनकते स्वर में बोले और खुद भी एक आराम कुर्सी पर पसर गए। वासुदेव और उसके मित्र भी कुर्सियों पर बैठ गए। सेठजी कुछ देर तक तो उनके चेहरों का निरीक्षण करते रहे। वासुदेव ने अपना परिचय दिया और आने का उद्देश्य बताया। सेठजी ने वासुदेव की तरफ देखकर पूछा—

'मेरे पाँच दस हजार रुपए दे देने से क्या आजादी मिल जाएगी ?

हम दूसरों के पास भी जाएँगे। आपसे हमारा निवेदन है कि इस संग्राम में मदद दें, हमें आप जो पैसा आजादी की लड़ाई के लिए देंगे, उसे हम कर्ज के रूप में मानेंगे और आजादी पाते ही, उसकी पाई पाई आप लोगों को लौटा दी जाएगी।'

वासुदेव के कथन पर सेठजी खिलखिला कर हँस पड़े।

'भैया—मैं तो अपने को आजाद ही समझता हूँ। खूब खा रहा हूँ पी रहा रहा हूँ घूमना फिरना, मौज मस्ती क्या यह आजादी नहीं है ?

'नहीं यह आजादी नहीं है, सेठजी। हमारे अधिकार क्या हैं ? हम अंग्रेजी शासन की आलोचना नहीं कर सकते। अंग्रेजों के विरुद्ध मुकदमा नहीं लड़ सकते। बड़े और ऊँचे पदों पर हमारी नियुक्ति नहीं हो सकती। रेलगाड़ियों में हम अंग्रेजों के साथ यात्रा नहीं कर सकते। उनके बराबर नहीं बैठ सकते। वे

हमारा अपमान कर सकते हैं, पर हमे खून का घूट पीकर चुप रहना पड़ेगा, क्यो कि हम आजाद नहीं हैं।'

वासुदेव का मुख तमतमा गया।

'तुम लोग नवयुवक हो, इसलिए महज जज्बातो मे बह जाते हो। गम्भीरता से सोचो। आजादी हासिल होने से हमे क्या मिल जाएगा? क्या राम राज्य आ जाएगा?'

'रामराज्य तो नही आएगा, पर विदेशियो का शासन तो समाप्त होगा। देश अकाल के जबड़े म फंसा हुआ है और लिटन साहब उपाधियां बाँटने मे लगे हुए हैं। राजदरबार लगाने की घोषणा भी की गई है। एक ओर हमारे लोग भूख से तड़प रहे हैं और दूसरी तरफ अन्न से भरे जहाज विलायत भेजे जा रहे हैं। गेहूँ चना, धान के स्थान पर नील, चाय और पटसन की पैदावार करवाई जा रही है—क्यो? नील चाय और पटसन खिलाकर, वे हमे जिन्दा रखना चाहते हैं क्या? सेठ साहब आप हवेलियो मे बैठे हैं। खुली हवा मे जाइए, तो आपको पता चलेगा कि आजादी की हम कितनी जरूरत है।'

मेरा विचार है कि इन बातो का हम पर कोई प्रभाव नही पड़ता है और न पड़ेगा। हाँ यह जरूर है कि अगर हुकूमत को पता लग गया कि हमने उनके खिलाफ चदा दिया है, तो हमारा राम ही रक्षक है। मेरा ख्याल है कि खुद अपनी कब्र कोई खोदना नही चाहेगा। आपका क्या विचार है?'

आपके विचारो को सुनने के बाद मुझे कुछ नही कहना है। हा, इतना जरूर कहूँगा कि धन्य हैं आपके माँ बाप, जिन्होंने आप जैसी स्वार्थी औलाद को जन्म दिया है।'

'तुम बहुत आगे बढ रहे हो।' सेठजी अविचलित भाव स बोले।

वासुदेव अपने सहयोगियो सहित बाहर निकल आया। कृष्णजी बोला—

'आपने सेठ के मुह पर जबरदस्त तमाचा लगाया है।'

क्या लाभ है? पत्थर हैं इन पर क्या प्रभाव पड़ता है।'

पमे की गुलामी सबस बुरी होती है।' एक अन्य सहयोगी ने विचार प्रकट किए।

'अब तो कहीं जाने का दिल नहीं कर रहा है। हर स्थान पर यही जवाब

मिलेगा।

'इन मृत आत्माओं में प्राण फूंकना बहुत कठिन है।' निराश स्वर में वासुदेव बोला।

'दो चार सेठों से और मिल लें। लौटना तो है ही।' कृष्णजी ने कहा।

वे दोपहर बाद अखाड़े में लौट आए। दूसरा दल भी कुछ देर में आ गया। सभी के चेहरे लटके हुए थे। वामनराव आवश्यकता से अधिक गंभीर था। वासुदेव अपनी स्वाभाविक मुस्कान के साथ बोला—

हिम्मत हारने में कुछ नहीं होगा। मर्द तो वही है, जो हार कर जीतने का प्रयास जारी रखे। मेरे पास दूसरा विकल्प है। वह असफल नहीं जाएगा। सब जाओ, मस्ती में भोजन करके आराम करो, शाम को विचार करेंगे।'

सभी थके हुए कदमों से चले गए। वामनराव वहीं बैठा रहा।

क्या सोचा है तुमने ?' वामनराव ने धीमे स्वर में पूछा।

'डाका डालूंगा। मुझे रुपया चाहिए। अस्त्र शस्त्र चाहिएं। मैं हर हालत में इस अंग्रेजी शासन को उखाड़ फेंकना चाहता हूँ।

वासुदेव अधिक ही उत्तेजित हो गया। वामनराव चुप रहा। वासुदेव पुनः बोला—

'इस काम में मैं रामोशी कबीले के युवकों की मदद लूंगा।'

रामोशी कबीले के युवकों की ? उनसे तुम्हारी जान-पहचान है ?'

'क्यों नहीं इतने दिन मैंने किया ही क्या है ?'

पर लोग क्या कहेंगे ?' वामनराव ने दबे स्वर में कहा।

लोग कुछ भी कहें मुझे इसकी परवाह नहीं है। मैं जानता हूँ कि अब केवल यह रास्ता बचा है और गलत नहीं है। गलत तो तब हो जब मैं अपने स्वार्थ के लिए ऐसा करूँ। धनिक या अंग्रेज के चहेते इस काम को भले ही गलत कह लें, पर किसी भी व्यक्ति के कार्य का सही मूल्यांकन तो आने वाली पीढ़ी करती है न? इतिहास करता है। इतिहास भी न करे तो न करे मुझे इसकी परवाह नहीं है। मेरी आत्मा को तसल्ली होनी चाहिए—बस।'

'हाँ, अगर सही परिप्रेक्ष्य में देखा जाए तो काम गलत नहीं है, सेठों के पास, अंग्रेजों के पास, पैसा किसका है ? हमारा ही न ? अगर उस पैसे को हम वापस

ले लेते हैं तो कोई बुराई नहीं है।' वामन ने वासुदेव की बात का समर्थन किया, पर इससे वासुदेव के विचारों में आया उफान समाप्त नहीं हुआ। वह और भी तेज स्वर में बोला—

मैं एक बात जानता हूँ कि इन लोगों से पैसा लूटना कोई बुरा नहीं है। मैंने इन धनिकों की बात से अनुमान लगाया है कि कई तो खुद लुटना चाहते हैं।

'खुद लुटना चाहते है?' वामन ने आश्चर्य से पूछा।

'कई सेठ आन्तरिक हृदय से हमारे पक्ष में हैं, पर सरकार के भय से खुल कर सामने नहीं आना चाहते हैं। चाहते है कि किसी अन्य तरीके से, उनसे पैसे ले लिए जाएँ अन्य तरीका और क्या हो सकता है?'

'हाँ, इससे उन पर कोई आंच नहीं आएगी। वे यही कहेंगे कि उन्हें लूट लिया गया है।

'अब मैं तुमसे पूछना चाहता हूँ कि तुम मेरे इस काम में किस प्रकार से मदद करना चाहोगे?'

तुम जो काम कहोगे वह मेरे लिए कठिन साबित नहीं होगा। मैं तुम्हारे साथ साथ रहूँगा।

मैं तुम्हारा उत्तर जानता था। लेकिन मैं चाहूँगा कि तुम यहीं अपना काय करते रहो। तुम्हारा यहां रहना हमारे लिए लाभप्रद होगा। कई चीजों के लिए हमें शहर पर निर्भर रहना होगा। उस समय तुम काम आओगे।

'जैसा तुम कहोगे मुझे करना ही होगा।'

'ठीक है—शाम को मिलेंगे। मैं शीघ्र यहाँ से निकल जाना चाहता हूँ।'

'कब तक?'

'शायद सुबह या फिर परसों तक।

वामनराव चला गया। वासुदेव ने घर आकर साथ ले जाने के लिए अत्यावश्यक चीजें बाध ली। दिन भर वह मित्रों से मिला पर कहीं भी उसने अपनी भविष्य की योजना का जिक्र नहीं किया। शाम को अखाड़े में उसने विश्वासराव, दौलतराव और कृष्णजी से अपनी योजना की क्रियान्विति हेतु विचार विमर्श किया। विश्वासराव ने बड़े विश्वास से कहा—

'आप सब कुछ मुझ पर छोड़ दीजिए। मैं पूरी व्यवस्था कर लूँगा।'

'ये दोनों तुम्हारी मदद करेंगे।' वासुदेव बोला।

'ठीक है।'

इतने में वामनराव भी आ गया। मुस्कराते हुए वह बोला—

'तैयारी चल रही है?'

हाँ—इन तीनों को साथ ले जाने की सोची है।'

'और जुगल?'

'नहीं उसे भी यहीं रहना होगा। हमारा एक आदमी पुलिस में है, इससे अच्छी बात और क्या हो सकती है?'

वह स्वीकार करे, तब न?'

'वह मान जाएगा। ज्यादा से ज्यादा कुछ दिन नाराज रहेगा।'

काफी रात तक बातें होती रहीं। उन्हें भोजन तक का ख्याल न रहा, फिर वे वहीं सो गए। सुबह नहा धोकर, वे बाहर निकलने की सोच रहे थे कि इतने में सार्वजनिक सभा का एक कार्यकर्त्ता आ गया।

'आज शहर बन्द रहेगा।' उसने उन्हें सूचना दी।

'क्यों?'

'अभी मामले का पूरा पता नहीं है, पर उड़ती हुई बातें हैं कि रात बाजार में गैरी हाल्ट को चाकू मार कर खत्म कर दिया गया। अपराधी तो पकड़े नहीं गए, लेकिन पुलिस वाले निरपराध दुकानदारों को पकड़ कर ले गए। इसी का विरोध हो रहा है।'

गैरी हाल्ट? अंग्रेज पुलिस-अधिकारी?' वामन ने पूछा।

'जी हाँ।'

'मगर उसकी हत्या के पीछे कारण क्या था? वासुदेव ने पूछा।

'अभी कुछ पता नहीं चल पाया है।'

'ठीक है—हम कारवाई में शामिल होंगे। वासुदेव ने कहा।

बारह बजते-बजते पूना शहर, पुलिस चौकी की तरफ उमड़ पड़ा। अंग्रेज अधिकारी क्रोध से बिफरे हुए थे।

'इदर भीड होना नहीं मांगटा। लाठी चार्ज किसी प्रकार का रहम

नहीं चलो चलो जरूरट हो टो गोली चलाओ।' अंग्रेज-अधिकारी ने आज्ञा दी। मक्खियों सदृश पुलिस वाले निकल पड़े और बिना चेतावनी दिए, आती भीड़ पर टूट पड़े। बुरी तरह भगदड़ मच गई। उसी दिन शाम को सभा हुई। सरकार की कारवाई की भरपूर निंदा की गई। सभा की कारवाई चल ही रही थी कि वहाँ भी पुलिस पहुँच गई। हवा में गोलियाँ दागी गई। लोग भागने लगे। भागते लोगों पर अधाधुंध लाठियाँ बरसाई गई। वासुदेव भी मंच पर ही था। वह बड़बड़ाया—

'लगता है ये पागल हो गए हैं। निरस्त्री भीड़ पर इस प्रकार टूट पड़ने का क्या मतलब है?'

पुलिस ने मंच को घेर लिया। मंच पर सभी लोग शांतचित्त बैठे रहे।

'आप सभी को गिरफ्तार किया जाता है।' पुलिस के एक सिपाही ने रोब जमाया।

'मगर किस जुर्म में?' वामनराव बोला।

'सभा करके लोगों को भड़काने के जुर्म में?' उत्तर मिला।

'सभा करने की मनाही तो नहीं थी।' वासुदेव बोला।

'यह हमें नहीं मालूम।'

'तो जिसे मालूम है—उसे भेजो।'

संवाद चल ही रहा था कि वहाँ एक अंग्रेज पुलिस-अधिकारी आया।

'हमें किस जुर्म में गिरफ्तार किया जा रहा है?' वासुदेव ने उस अंग्रेज-अधिकारी से पूछा।

'टोम लोग गौवर्मेन्ट के खिलाफ मीटिंग करटा है।'

'यह मीटिंग निरपराधों को गिरफ्तार करने और बेवजह लोगों पर डंडे बरसाने के खिलाफ थी। हम इस विरोध को पूरे महाराष्ट्र में फैलाएँगे। असली अपराधी को पकड़ने में पुलिस सक्षम नहीं है और क्रोध मासूम लोगों पर उतारती है।'

'आह! बेकार बाट करना नहीं मांगटा।'

'यह बेकार बात नहीं है। सभाएं रखने पर कोई प्रतिबंध नहीं था, इसलिए इस जुर्म में हमें गिरफ्तार करना आपको महँगा पड़ेगा। हम आप पर मानहानि का

मुकदमा करेंगे।' वासुदेव तीखे स्वर में बोला।

'ऑलराइट, अब तुम लोगों पर चार्ज लगा कर ही अरेस्ट किया जाएगा।' भुनभुनाता हुआ वह अधिकारी चला गया। पुलिस वाले भी मुँह लटका कर चल गए।

'अब यह झूठे आरोप लगा कर हमें गिरफ्तार करेगा।'

'देखी जाएगी। वामन तुम यह तो पता करो कि गैरी की हत्या के पीछे कारण क्या है। जुगल का भी पता करना। मैं अखाड़े में ही मिलूंगा।'

वामन चला गया। वासुदेव भी सहयोगियों सहित अपने अखाड़े की ओर बढ़ गया। वामन काफी देर से लौटा। उसने सारी बातें बताईं। वासुदेव ने व्यग्रता से पूछा—

'जुगल से मिल कर आए?'

'वह बुखार में पड़ा है। तुम्हारे बारे में पूछ रहा था। मैंने उसे तुम्हारे निर्णय के बारे में बताया तो उसने राय दी कि अभी दो चार दिन किसी प्रकार का कदम न उठाया जाए क्योंकि चप्पे चप्पे पर पुलिस लगी हुई है। अगर बुखार उतर गया तो सुबह तक आएगा।'

'कल की क्या सोची है? मेरा विचार है कि सभा एक स्थान पर न करके चार स्थानों पर की जाए। कार्यकर्ताओं की हमारे पास कमी नहीं है।

सभी सहयोगियों ने इस पर अपनी सहमति व्यक्त की।

तैयारी पर जुट जाओ। हमें यह दिखाना है कि अन्याय सहन नहीं होगा। जेलों में इस प्रकार निरपराध लोगों की हत्या की जाएगी, तो उसका बदला लिया जाएगा। अगर सरकार किसी को अपराधी मानती है तो मुकदमा चलाए सजा दे। आजादी की माँग करने का मतलब सजाएमौत पाना नहीं है। जाओ लोगों को प्रेरित करो। वामन, विश्वास और दौलत तुम अलग अलग तीन स्थान चुन लो। कालेज के छात्रों का सहयोग लो और सभा का जोरदार आयोजन करो। गिरफ्तारी की अगर नौबत आती है, तो सामूहिक गिरफ्तारियाँ दो। हिंसा न होने पाए इस बात का ख्याल रखना। चौथे स्थान पर मैं और कृष्णजी सभा का आयोजन करेंगे। माँग यही रखनी है कि गैरी की हत्या के आरोप में जो निरपराध लोग कैद किए गए हैं, उन्हें छोड़ा जाए।'

सभी ने अपना-अपना रास्ता लिया। वासुदेव कृष्णजी से बोला—

'पहले घर चलें। भोजन तैयार करें और तसल्ली से खा-पीकर काम पर लगें। रात्रि जागरण करना पड़ेगा।'

विचार उत्तम है।'

वासुदेव, कृष्णजी के साथ अपने घर की ओर चल पड़ा। भोजनोपरांत वासुदेव ने कहा—'चलो सभा क्षेत्र के प्रमुख लोगों से बात तो कर लें। उनकी प्रतिक्रिया भी जान लें। प्रमुख लोगों से मेरा मतलब पैसे वालों से नहीं है अपितु उन लोगों से है जिनकी जनता में पैठ है।'

वे दोनों रात देर तक लोगों से मिलते रहे। करीब करीब अधिकांश लोगों की प्रतिक्रिया यही थी कि अंधाधुंध लाठी चार्ज का विरोध होना चाहिए और निरपराध लोगों को कैद से छुड़वाना चाहिए। अखाड़े में वापस लौटने तक, वे काफी थक चुके थे। आँखें कब लगी, उन्हें पता ही नहीं चला। अभी दिवाकर-रश्मियाँ पूरी तरह खिली नहीं थी कि जुगल ने आकर उसे उठाया। वासुदेव उठा।

'तू बैठ, मैं अभी आया।' कुछ ही देर में वह नित्यकर्म से निवृत्त होकर आ गया।

'अब बता—क्या बात हुई? वह अंग्रेज अफसर कैसे मरा? क्यों मारा गया?' जुगल, वासुदेव के उतावलेपन पर हँसा। धीरे धीरे रे मना धीरे सब कुछ होय।' कहता हुआ वह पुनः अपने स्वाभाविक अंदाज में हँस पड़ा।

वामन तो कह रहा था कि तुझे बुखार था। लगता तो नहीं है। वासुदेव बोला।

'यार, काया ही ऐसी है। पाँच दस दिन तो बुखार कुछ बिगाड़ नहीं सकता। और लोगों के लिए तमाशा हो जाता है।'

अच्छा—तू छोड़, असली बात पर आ।'

मुझे कुछ पता नहीं है। हाँ, जो सुना है—वह तुझे सुना देता हूँ। गैरी ने मन्त्रणा देकर उन दोनों लड़कों की हत्या कर दी थी। लाशें भी ठिकाने लगा दी गई थी, पर बात बाहर निकल गई। सम्भवतः उसी का बदला किसी ने लिया होगा।'

मेरी समझ में यह बात नहीं बैठ रही है कि उनकी मौत का बदला लेने

वाला यहाँ कौन था ? वे यहाँ के नही थे।'

'यही बात तो मेरी समझ मे भी नहीं बैठ रही है।'

'दूसरी बात यह है कि पुलिस चौकी से बाहर बात कसे पहुँची ?

'इसी बात की छानबीन गुप्तचर करने म लगे हुए हैं।'

'पुलिस महकमा इतना निकम्मा हो गया है कि अपने अफसरों की हत्या का भी पत' नही लगा सकता। कमाल है मुझे लगता,लो है कि इस हत्या की कड़ियाँ भी पीछे वाली हत्या स जुडी हुई हैं—क्यो तुम्हारा क्या विचार है ?'

जुगल के मुखमडल पर हल्की स्मित-रेखाएँ नृत्य कर उठी।

छोड यार तुझे इन गोरो से हमदर्दी है क्या ? देख एक बात याद रख, न कोई किसी की हत्या करता है और न कोई कत्ल होता है। आत्मा अजर-अमर है। यह हमारा भ्रम मात्र होता है कि कोई कत्ल हो गया है। उसका इस ससार मे इतना ही दाना पानी रहा होगा।'

'आप धन्य है महाराज। आपके मुखश्री से तो अमृत-वर्षा होती है।

वासुदेव चाह कर भी गंभीरता न ओढ सका, पर इसका जुगल पर कोई प्रभाव नही पडा।

'सुन, एक बात और सुनाता हूँ। इस ससार मे तू कौन और मैं कौन, कोई किसी का नहीं है। सब उस ब्रह्म के अश है और उसी मे विलीन हो जाते हैं।'

'अच्छा बकवास बद कर। वामन ने तुझे मेरे निणय के बारे मे बता दिया होगा। यह बखेडा खडा न हो जाता, तो मैं इस समय तक निकल गया होता। अब लगता है, जल्दी पीछा नही छूटने का। आज हम नाजायज गिरफ्तारियो के विरोध मे आम सभाओ का आयोजन कर रहे हैं।'

'मुझे लगता है तुम लोग भी चपेट मे आने वाले हो।' जुगल ने अपना शक जाहिर किया।

'सभा एक स्थान पर न होकर चार स्थानो पर आयोजित होगी। हमारी इस योजना का किसी को पता नही है। पुलिस किस किस को गिरफ्तार कर लेगी ?'

'मुझे और कुछ पता नही है पर हाँ तुम्हारी व्यायामशाला पर पुलिस निगाह रखे हुए है। सार्वजनिक सभा के कायकर्ता भी सदेह के दायरो मे हैं।'

'आज सभाएँ हो जाएँगी। एक-दो दिन मे मैं यहाँ से निकल जाऊँगा। जाते समय शायद तुमसे मिलना न हो सके, पर तुम याद रखना कि तुम्हें अधिक से अधिक हथियार और कारतूसो का प्रबन्ध करना पड़ेगा। यही कारण है कि मैं तुम्हें साथ नही ले जा रहा हूँ। मेरे वाला मकान अपने अधिकार में रखना। चाबी वामन के पास मिल जाएगी।'

'सारी बातें ठीक हैं, किन्तु ठीक समय पर मुझे टाल देना ठीक नही है। मैं क्या नही कर सकता ? मैं कायर तो नही हूँ।'

'तू तो मूर्ख है। प्रश्न कायर और बहादुर का नही है। तू पुलिस विभाग म है। दुर्दिन में तू सहायक सिद्ध हो सकता है। मुझ पर विश्वास रख, जब भी तेरी आवश्यकता होगी, मैं तुझे बुला लूगा।'

'ठीक ! तेरी बात माननी पड़ेगी। मन मार कर भी माननी पड़ेगी।'

जुगल का स्वर भर आया। वासुदेव को लगा कि वह भी अपनी भावनाओ पर काबू नही रख पाएगा। अस्तु वह बोला—

'अच्छा अब तू जा। अपना ख्याल रखना। बेकार के लफड़ो मे फँसने की आवश्यकता नही है। तू अपने को उलझा तो लेता है, लेकिन फिर छुड़ा नही पाता है।'

जुगल चला आया। वासुदेव ने कृष्णजी की ओर देखा। वह सो रहा था।

'अरे कुम्भकर्ण भाई, उठ यार। इस हालत म लड लिए स्वाधीनता की लड़ाई। सोते सोते मे कोई फांसी सीने म उतार जाएगा।'

कृष्णजी उठ गया। वासुदेव ने कहा—

'तुम यह चाबी लो। घर जाकर नाश्ते आदि का प्रबन्ध करो। मैं इतने म सभाओ की व्यवस्था का क्या प्रबन्ध हो पाया है, इसकी जानकारी कर आता हूँ।' वासुदेव चला गया। कृष्णजी, वासुदेव के घर की तरफ रवाना हो गया। जब तक वासुदेव वापस आया, कृष्णजी नाश्ता तैयार कर चुका था। वासुदेव ने उसे बताया कि सारी व्यवस्था ठीक-ठाक हो गई है।

अवकाश का दिन था। दिन मे सभाओ का आयोजन बहुत जोरदार रहा। प्रशासन भी चार स्थानो पर अपने विरोध मे सभाओ के आयोजन से बौखला

उठा। किंकर्त्तव्यविमूढ की स्थिति मे प्रशासनिक अफसर उचित निर्णय नही ले पा रहे थे कि उन्हें सूचना मिली कि सभाओ के उपरांत जनसमूह एकत्रित होकर पुलिस स्टेशन का घेराव करने आ रहा है। विवश होकर अंग्रेज अधिकारियों को जन नेताओ के सम्मुख घुटने टेकने पड़े। उन्हें वार्ता के लिए बुलाना पड़ा। इस नाटकोपरांत गिरफ्तार लोगो को बिना किसी शर्त के मुक्त कर दिया गया। यह जनता की प्रत्यक्ष जीत थी। शाम को इस जीत की खुशी मे सम्पूर्ण पूना शहर सभा के रूप में उमड़ पड़ा।

प्रशासन ने जन दबाव के आगे समर्पण तो कर दिया था, लेकिन जन नेताओ को सबक सिखाने की बातें सोची जा रही थी। जन नेता भी इस बात से बेखबर नही थे। वासुदेव ने अपने साथियो से विचार विमर्श किया।

'यह एक छोटा सा उदाहरण है कि एकता बड़ी से बड़ी शक्ति को भी धराशायी कर देती है पर हम केवल शहरो पर निर्भर नही रह सकते। देश की आबादी का विशाल हिस्सा तो गांवो में रहता है। वे दयनीय दशा में हैं। शोषण भी उन का अधिक हो रहा है। वे उत्पादन करने मे लगे हैं। परिश्रम और महेनत मे जुटे हुए है किन्तु भूख से भी वे ही मर रहे हैं। इस स्थिति को सभालना है तो शखनाद गांवो से आरम्भ करना पड़ेगा।'

'यह शहर में रहकर भी किया जा सकता है।' एक साथी ने वासुदेव की बात में हस्तक्षेप किया।

'मेरे विचार मे यह असभव है। १८५७ की आँधी शहरो मे ही उमड़ी थी न? अगर वही तूफान गावो से उठता, तो अँग्रेजी साम्राज्य निश्चित रूप से धाराशायी हो चुका होता। दूसरी बात यह है कि शहरो की अपेक्षा गाँवो में आजादी के लिए चेतना सुगमता से जागृत की जा सकती है। आपने देखा कि हमारे प्रयास करने के बावजूद भी हमे शहर से आर्थिक मदद नही मिल पाई। मेरी योजना है कि मैं ग्रामीणो को अँग्रेजी शासन के खिलाफ खड़ा करूँगा और आप लोग शहरो में प्रयास करिए। मैंने निश्चय कर लिया है कि आजादी या मौत में से एक का वरण करूंगा। मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि जब तक देश स्वतंत्र नही होता मैं माथे पर चदन नही लगाऊँगा न सिर पर पगड़ी रखूगा और न सिर दाढ़ी आदि के बाल कटवाऊँगा।'

वासुदेव के कथन का स्वागत तालियों की गड़गड़ाहट से किया गया। सभी ने उसे पूर्णरूप से आश्वासन दिया कि वे लोगों को जाग्रत करने के लिए हर संभव प्रयत्न करेंगे। विशेष सहयोगियों के सिवाय अन्य लोग अपने अपने घरों को चले गए। आधी रात तक उन लोगों की बातचीत चलती रही। वासुदेव ने निर्णय किया कि कल उसे शहर छोड़ देना चाहिए। तैयारी पूरी थी। दूसरे दिन अँधेरी रात में वासुदेव, कृष्णजी, विश्वास और दौलत को साथ लिए पूना शहर से निकल पड़ा। एक दो दिन की भोजन, सामग्री और घोड़ों के सिवाय साथ में कोई ताम-झाम नहीं था। टगुलटकड़ी की गुफा में पहुँच कर उन्होंने आराम किया और दूसरे दिन नहा धोकर, तरो ताजा होकर, नाश्ता पानी करने के उपरांत वे मुख्य रामोशी कबीले की ओर बढ़े। पूना जिले में इनकी आबादी काफी थी और इलाके में ये लोग अपने दुस्साहस के लिए बहुत प्रसिद्ध थे। किसी जमाने में ये मराठी फौज में हुआ करते थे। संकट के समय इन लोगों की टुकड़ियों को आगे किया जाता था क्योंकि ये मरने मारने की नीति पर चलते थे। इस नीति में संग्राम भूमि में पीठ दिखाना अति लज्जाजनक माना जाता था, पर धीरे धीरे सेनाओं में अव्यवस्था व्याप्त होने लगी खाने के लाले पड़ने लगे, तो ये लोग फौज से खिसकने लगे। अब यद्यपि इनमें से अधिकांश खेती बाड़ी के काम पर जुटे हुए थे। पेशा जरूर बदल गया था, पर जातिगत विशेषताएँ तो वही थीं, प्रकृति वही थी, स्वभाव वही था।

वासुदेव अपने चिरपरिचित गाँव में पहुँचा। सौभाग्य से उनका परिचित बाबा भी वहीं मिल गया। मुखिया ने वासुदेव का स्वागत किया। बाबा बोला—

तो तुम आ ही गए। अब शायद हम लोगों के बीच ही रहोगे?'

'जी यहां सोचकर आया हूं। आपकी गुफा से आते समय, ये बन्दूकें भी ले आए।'

'अच्छा किया। काम आएँगी।'

'काम तो तब आएगी, जब मुझे यहाँ सहयोग मिलेगा।' वासुदेव बोला।

मिलेगा और जरूर मिलेगा। यह जुझारू जाति है। सर पर कफन बाँधकर, तुम्हारा साथ देगी। इन्हें प्रेरित करने वाला चाहिए। शहरों में स्वार्थ अधिक है और स्वार्थ जहाँ होगा, वहाँ लक्ष्मी भी होगी। ये धरती पुत्र हैं गरीब हैं, पर

मान के लिए जान दे सकते हैं।'

'यही सोचकर शहर त्यागा है।'

'मेरी शुभकामनाएँ तुम लोगों के साथ हैं। आराम करो। थक गए होगे।'

मुखिया ने उनके आराम का प्रबन्ध कर दिया। कृष्णजी से नहीं रहा गया। वह बोल ही पड़ा—

'मुखिया साहब आराम का तो आपने प्रबन्ध कर दिया, पर '

कृष्णजी ने मित्रों पर एक दृष्टि डाली और फिर वाक्य पूरा किया—

'कुछ दाना पानी का प्रबन्ध हो सकेगा।'

मुखिया हँसा और बाहर निकल गया।

'अरे ! भाई साहब, जवाब तो दे जाइए।'

'एक से पीछा छूटा तो दूसरा चिपक गया। मैं सोच रहा था कि जुगल को ही अधिक भूख लगती है। वासुदेव बोला।

भूख तो सभी को लगती है। पेट में चूहे कूद रहे हों, तो आराम कैसे हो सकता है ? क्यों विश्वास भाई ?

'बलिहारी है।' विश्वासराव मुस्कराता हुआ बोला।

'मैं समझा नहीं।' कृष्णजी ने भोलेपन से कहा।

—कुछ आ तो रहा है।' वासुदेव ने दूर से मुखिया को आते देखकर कहा।

'भाग्य अच्छा है।' कृष्णजी ने जवाब दिया।

'इस समय तो इसी से काम चलाइए। शाम को आपको अच्छा भोजन मिल जाएगा।' मुखिया ने नम्रता से कहा। दही और कुछ रोटियाँ थीं। कृष्णजी बिना समय गवाए रोटियों पर हाथ साफ करने में लग गया। मुखिया ने मुस्कराकर वासुदेव से कहा—आप लोग भी खाइए न ?'

'पहले थकान उतार लें। शाम को तसल्ली से खाएँगे। अब समय ही कितना है।' वासुदेव ने उत्तर दिया। मुखिया चला गया।

वासुदेव दौलत और विश्वास की आँखें लग गई पर कृष्णजी को आराम कहाँ ? जब तक वे उठें, वह न जाने कहाँ कहाँ चक्कर लगा आया। वासुदेव ने उसे बैठा देखकर पूछ लिया—

'अरे ! भाई, तूने आराम नही किया ?'

'आराम के लिए रात होती है। मैं आस-पास की पहाडियो पर चक्कर लगा आया। कई स्थान ऐसे हैं, जो हमारी शरणस्थली बन सकते हैं।'

'पर हमें गाँव के आस पास नही रहना है। मैं नही चाहता कि हमारी वजह से ये लोग सकट मे पड़ें।'

शाम का भोजनोपरा त, मुखिया, बाबा और वासुदेव सहित उसके सभी साथियो ने विस्तृत चर्चा की। बाबा ने कुछ सुझाव दिए।

'देश की आजादी के लिए प्रयास हर कीमत पर होना चाहिए। ऐसी सरकार का विरोध होना ही चाहिए जो भूखो को अन्न न दे सके। इतना भयकर दुर्भिक्ष पडा हुआ है, पर अग्रजी सरकार तो मौज मस्ती मे खोई हुई है। रामोशी कबीले अग्रेजो से पहले ही खार खाए बठे हैं, तुम्हें उनकी भावनाओ को उभार कर सही दिशा देनी है। क्यो मुखिया इसका साथ दोगे ?'

'अरे बाबा, आपका हुक्म सर आँखो पर। सही बात म साथ क्यो नही दूगा ?

'एसी बात है, तो ऐसे नवयुवक एकत्रित करो, जो वासुदेव के साथ, देश को आजाद कराने के लिए प्राणो की बाजी लगा सकें। इसके साथ कधे से कधा मिला कर मरने मारने के लिए तयार हो। हाँ, ध्यान रहे कि विपत्ति के समय धोखा देने वाले न हो। शेष जसा वासुदेव कहे वैसा करो।'

'साधन एकत्रित करने होगे। धनिको से बलात धन लेना होगा।' वासुदेव बोला।

'इसमे कोई बुराई नही है। यह कोई पाप नही है पर ध्यान रखना होगा कि इसका पैसा पैसा निहित उद्देश्य पर ही व्यय हो। व्यक्तिगत कामो पर या धन-सग्रह के लोभ मे फँसकर व्यवस्था भग न हो, अन्यथा पाप के भागीदार बनोगे।'

मैं हमेशा इस बात का ध्यान रखूगा। वासुदेव बोला।

'कल से मुखिया के साथ पहले सह्याद्रि की पहाडियो के चप्पे चप्पे से परिचित हो लो। अपने दो चार ठिकाने निश्चित कर लो, क्योकि अग्रेजो के साथ चूहे बिल्ली वाला खेल खेलना होगा। गाँव वाले तुम्हारी मदद सामग्री जुटाने मे कर सकते हैं, पर प्राण रक्षा तो सह्याद्रि की कदराएँ ही करेंगी।'

आपका कहना ठीक है। सबसे पहले यही काम करना पड़ेगा।'

'अब तुम लोग बैठकर योजना बना लो। हर पहलू पर विचार कर लेना।' बाबा चले गए। मुखिया ने कई नवयुवकों के नाम बताए, पर वासुदेव भी थकान महसूस कर रहा था, इसलिए उसने यह कह कर बात समाप्त कर दी—अब कल देखेंगे। नए जीवन की शुरुआत सूर्योदय के साथ ही करेंगे। तभी आपके बताए नामों पर विचार करेंगे।'

६

रात कटी दिन हुआ। यात्री पक्षियों का कलरव आरम्भ होने से पूर्व ही अन्यत्र जा चुके थे। यह बात मुखिया ने वासुदेव को बता दी। वासुदेव ने देखा कि बाहर काफी नवयुवक खड़े हैं। वासुदेव के पूछने से पहले ही मुखिया बोल पड़ा—'आपसे मिलने के लिए आए हैं।'

वासुदेव बाहर आया। नवयुवक आपस में फुसफुसाने लगे। वासुदेव का ओजस्वी स्वर गूंजने लगा—

आप अपने बीच में शहर के लोगों को देखकर आश्चर्य अनुभव कर रहे होंगे। हम आजादी की तलाश में निकले हैं। अंग्रेजों ने हमारा तन मन और धन का शोषण करके हमें इस कदर निस्सहाय बना दिया है कि हम अपने ही देश में, अपनी ही मिट्टी में पनप नहीं पा रहे हैं। आओ, अगर तुम चाहते हो कि हमेशा के लिए तुम्हारा दुःख दारिद्रय दूर हो, तो मेरे साथ आओ, और अंग्रेजों से संघर्ष करो। इनका नामोनिशान इस देश से मिटा दो। इनके झण्डे उखाड़कर समुद्र में डुबा दो। बोलो तैयार हो?'

'हाँ—हम तैयार हैं हम तैयार हैं।' गगन गूँज उठा। वासुदेव का चेहरा खिल उठा।

'आप लोग गाँव गाँव जाकर अंग्रेजी सरकार के अत्याचार के खिलाफ लोगों को खड़ा करिए।'

'हमारा नेतृत्व कौन करेगा?' एक नवयुवक बोला।

वासुदेव ने क्षणभर सोचा।

'कृष्णजी तुम्हारा नेतृत्व करेंगे।' कृष्णजी की पीठ पर हाथ रखकर उसने कहा।

'मगर?' कृष्णजी ने कुछ कहना चाहा।

'अगर-मगर कुछ नहीं। गंगापुर तुम्हारा निवास स्थान है। उसे केन्द्र बना लो। आस पास के गांवों के निवासियों को जगाने का उत्तरदायित्व मैं तुम्हें सौंपता हूँ। चिन्ता मत करो। मैं तुमसे मिलता रहूँगा।'

वासुदेव की बात काटने का साहस कृष्णजी को नहीं हुआ, पर उसकी मुखाकृति से लग रहा था कि वह वासुदेव के निर्णय से सहमत नहीं है।

'अब आप लोग जाइए। कल आपको पूरी योजना से अवगत कराया जाएगा।' वासुदेव ने नवयुवकों को सम्बोधित किया। जब सब चले गए, तो वासुदेव ने कृष्णजी से पूछा—

'तब बोलो, तुम क्या कहना चाहते थे?'

'मैं आपके साथ रहना चाहता हूँ।'

'मैं तुमसे दूर नहीं रहूँगा। तुम्हें जो काम सौंपा है, वह बहुत ही महत्त्वपूर्ण है। तुम्हें हर गांव में ऐसे नवयुवकों की टोलियाँ बनानी हैं जो गांव वालों को प्रेरित कर सकें। मुख्य टोली का निर्माण भी तुम्हें ही करना है। यह टोली चुनींदे युवकों की होगी, जो सह्याद्रि की पहाड़ियों से लेकर पश्चिमी घाट तक के गांवों की समस्त टोलियों पर नियन्त्रण रखेगी। हम केवल अंग्रेजों का ही विरोध नहीं करना है, अपितु जमींदारों और सूदखोर साहूकारों के खिलाफ भी लड़ाई लड़नी है। किसानों पर इस समय तिहरी मार पड़ रही है। अकाल, जमींदार और साहूकार, सरकार—इन सबसे किसान घिरा हुआ है।'

कृष्णजी गंभीरता से सारी बातें सुनता रहा।

'तुम लोगों को आवेश में आकर काम नहीं करना है। आवेश वाला काम हम करेंगे। तुम लोगों को हमें सूचित करना होगा कि अमुक जमींदार या साहूकार जनता की इच्छा का विरोध कर रहा है। उसे सही लीक पर लाने का कार्य हम करेंगे। ऐसा करने से तुम लोग सुरक्षित रहोगे। यह सारी योजना गुप्त रूप से चलेगी। हमारा आदमी नियत समय पर तुम्हारे पास आएगा और तुम उसे

सारी रिपोर्ट दोगे।'

'यह सब ठीक है। मैं इस उत्तरदायित्व को लेता हूँ, लेकिन वित्त का प्रबंध कौन करेगा ? कैसे करेगा ?' कृष्णजी ने संशय व्यक्त किया।

'यह बात भी मुझ पर छोड़ दो। तुम्हें वित्तीय कठिनाई नहीं आएगी, किंतु फिर भी, कठिनाइयों को सहने की क्षमता हममें होनी चाहिए। हो सकता है कि भूखा रहना पड़े। इस काम में अधिक कठिनाइयाँ आएँगी। हम उनका मुकाबला करना है।'

इसके बाद वासुदेव ने मुखिया से ऐसे नवयुवकों को बुलाने के लिए कहा जो बंदूक चलाना जानते हों। मुखिया ने चार नवयुवक बुला दिए।

'दौलत तुम इन्हें परखो। हर दृष्टिकोण से देखना है और कृष्णजी, तुम जाकर अन्य युवकों से सम्पर्क करो। भीड़ एकत्रित करने की आवश्यकता नहीं है। विश्वास योग्य कार्यकर्ता छाँटने हैं, और उन्हीं में से दल-नायक का चुनाव भी करना है। दल का नेता सर्वसम्मति से चुना जाए तो उत्तम है। हर गाँव के मुखिया को भी विश्वास में लेना होगा।

'यह काम बहुत जरूरी है। मेरा विचार है, अगर गाँव के मुखियाओं को भी इस कार्य में शामिल किया जाए, तो ठीक है।' मुखिया ने अपने विचार प्रकट किए।

'विचार उत्तम है।' वासुदेव ने अपना समर्थन व्यक्त किया।

'एक बात मैं भी कहना चाहूँगा।' विश्वासराव बोला।

'कहो।' वासुदेव ने अपनी सहमति दी।

'आपका कहना था कि कृष्णजी की समिति हमें अभियान के विरोधी जमींदार और साहूकारों के नाम बताएगी, पर ऐसी भी संभावना हो सकती है कि व्यक्तिगत दुश्मनी के नाते कोई गलत सूचना दे दे।'

'तुम्हारी शंका उचित है। इस बात की छान-बीन कृष्णजी की समिति करेगी, फिर घटनास्थल पर हम भी तथ्यों को देखने के बाद कदम उठाएँगे।

वासुदेव ने विश्वासराव की शंका का निवारण किया। दौलतराव और कृष्णजी अपने काम पर लग गए। मुखिया भी चला गया।

'आओ विश्वास, हम अपनी आश्रयस्थली खोजें।' दोनों ने बाहर आकर अपने

घोड़े खोले और बिना किसी को बताए निकल पड़े। पूरे दिन भर वे भूखे ही भटकते रहे। दो-चार जगहें उन्हें पसंद आईं। शाम को वे वापस आए। दौलत और कृष्णजी को उन्होंने सारी बात बताई। दिन भर के थके माँदे, दोनों ही सो गए। सुबह जब तक अन्य लोग जागें कि वे दोनों फिर अपने अभियान पर निकल गए, फिर शाम को ही लौटे। कृष्णजी ने वासुदेव से कहा—

'मैं अपना काम करने के लिए तैयार हूँ।'

'और तुम?' दौलतराव की तरफ इशारा करते हुए वासुदेव ने पूछा।

'मैंने भी अपना काम पूरा कर लिया है।'

'कितने युवक चुने?'

'चार।'

'उन्हें घुड़सवारी आती है?'

'दो को आती है।'

'शेष दो को सिखानी पड़ेगी। उनके साथियों से कहो कि उन्हें घुड़सवारी सिखाएँ। कृष्णजी का घोड़ा उन्हें दे दो। कृष्णजी, तुमने अपने कितने साथी छाँटे हैं?'

'मैंने भी चार छाँटे हैं।'

'तुम उन चारों को लेकर आस पास के गाँवों में जाकर यह पता करो कि कौन सा साहूकार और जमींदार अधिक पैसे वाला है। ग्रामीणजनों से उनका व्यवहार कैसा है? पूरी स्थिति की जानकारी लेकर आनी है।'

'शाम तक पता करके आपको बता दिया जाएगा।'

इसके बाद वासुदेव ने मुखिया से गाँव की जानकारी हासिल की।

'इस गाँव में कोई बड़ा साहूकार नजर नहीं आया। यहाँ का क्या हाल है, मुखियाजी?'

यह तो बहुत ही छोटा गाँव है। अधिकांश किसानों के पास छोटे मोटे खेत हैं। परिवार का भरण पोषण हो जाता है। हाँ, अब इस वर्ष अकाल के कारण जरूर समस्या पैदा हो गई है। सरकार लगान तो वसूल करेगी ही।'

'आपका और गाँव के क्रांतिकारी नवयुवकों का काम यह है कि लोगों को लगान न देने के लिए राजी करिए। इसी में हमारी सफलता है। सरकार जबरन

वसूली हेतु अत्याचार भी करेगी। उसका सशक्त विरोध करिए।'

'ठीक है। यहा का जिम्मा मैं लेता हूँ।'

अगले दिन पुन वासुदेव और विश्वास पहाड़ी गुफाओ की तलाश मे निकले। आज दौलतराव को भी साथ ले लिया गया। दिन भर भटकते-भटकते तीनों ने एक स्थान पसन्द किया।

यह स्थान ठीक रहेगा। मोर्चाबन्दी की दृष्टि से भी उपयुक्त है।' जनविहीन है ही, और सबसे अच्छी बात यह है कि घोड़े आसानी से आ जा सकते हैं। चारो तरफ सघन वृक्ष कवच का काम करेंगे।' विश्वास ने राय दी।

हा, फिलहाल ठीक है। वैसे मैं पश्चिमी घाट के बीहड़ो को पसन्द करता हूँ।' वासुदेव ने अपना मत व्यक्त किया।

'सुरक्षा तो यहाँ भी पूरी है। पुलिस या फौज झख मार ले, तो भी हमे यहाँ तलाश नही कर सकती। अवसर पड़ने पर हम और भी अन्दर जगल मे घुस सकते हैं।'

'मैं कल से काम करना शुरू कर देना चाहता हूँ। मैं दस पन्द्रह दिन इस इलाके म रहना चाहता हू।'

'काय जितनी जल्दी प्रारम्भ कर दिया जाए उतना ही ठीक है।'

वे वापस लौट पड़े। शाम को कृष्णजी ने सूचना लाकर दी। वासुदव ने प्रश्न किया—

'खबर पुख्ता है न?'

'बिल्कुल। अधिकाश ग्रामीणजन साहूकारो के कजदार हैं। यदि कोई कुछ देता है तो उसे साहूकार बतौर ब्याज की भरपाई के हड़प लेते हैं। जमींदार भी इस मामले मे पूरा सहयोग करता है। आज दो गावो का पता लगा सके।'

'ठिकाने देख आए?'

'देख आया।'

ठीक है।'

'कल सुबह दौलत और विश्वास जरूरी सामान गुफा म पहुँचा आएगे। मैं और कृष्ण जी दोनो गाँवो को देख आएँगे। शाम को अँधेरा होते ही हम अपने अभियान पर निकलेंगे।'

सुबह होते ही वे अपने-अपने कार्य पर जुट गए। शाम हुई। उन्होंने भोजन किया और मुखिया से विदा लेकर अँधेरे में लुप्त हो गए। कुछ ही देर में वे अपने गन्तव्य पर पहुँच गए। गाँव के घरों के दरवाजे बन्द थे। एक बड़े से मकान के बाहर वे रुक गए। मकान से बाहर एक वृक्ष था, जिसकी शाखाएँ घर की छत तक पहुँच रही थीं। वासुदेव उसी वृक्ष के नीचे जाकर रुका। अपना घोड़ा उसने कृष्णाजी को थमाया।

'मैं इस पेड़ पर चढ़कर घर के अन्दर प्रवेश करता हूँ।'

'बन्दूक ?' कृष्णाजी फुसफुसाया।

'चाकू है—काम चल जाएगा।'

वासुदेव सावधानी से वृक्ष पर चढ़ा और छत पर कूद गया। सीढ़ियाँ उतर कर वह नीचे आया। आहट ली। सब गहरी नींद में सो रहे थे। दबे पाँव, उसने आकर, मुख्य दरवाजा अंदर से खोल दिया।

'दौलत, तुम आओ। तुम दोनों बाहर चौकस रहो।' दौलत को लेकर वह अन्दर आ गया।

'अब यह पता कैसे करें कि सेठ किस कमरे में है ?' वासुदेव फुसफुसाया।

'यह तो बड़ा आसान काम है।' दौलत ने वापस आकर दोनों दरवाजों को जोर से भिड़ाया। जोर की आवाज हुई। अन्दर कोई प्रतिक्रिया नहीं हुई। पुनः एक बार दौलत ने वही प्रक्रिया दोहराई। इस बार एक कमरे में से आवाज आई। दौलत, वासुदेव के निकट आकर खड़ा हो गया।

अरे, ओ कल्लू !! हराम की औलाद। बाहर का दरवाजा बंद करना भूल गया क्या ? हे ईश्वर ! क्या हरामी औलाद दी है।'

वासुदेव के निकट का द्वार खुला और एक आदमी बाहर निकला। वासुदेव ने पीछे से अपने मजबूत हाथों से उसका मुँह दबा दिया।

'सभी दरवाजों को बाहर से बंद कर दो जल्दी।' वासुदेव फुसफुसाया। पाँच कमरे थे। दौलत ने पाँचों कमरों को बाहर से बन्द कर दिया। वासुदेव ने सेठ के मुँह पर से हाथ हटा दिया और भर्राती आवाज में बोला—

'सेठ, जान की खैर चाहता है, तो जैसा कहा जाए, वैसा कर। नहीं तो...' वासुदेव ने दौलत की तनी हुई बंदूक की ओर इशारा किया।

'लालटेन तो होगी ?' वासुदेव ने पूछा।

सेठ की घिग्घी बँधी हुई थी। दौलत ने बन्दूक की नली उसकी छाती पर टिका दी।

'है।' घिघियाती आवाज मे उसने उत्तर दिया।

'कहाँ है ?'

सेठ ने अँधेरे मे एक ओर इशारा किया। वासुदेव खुद उधर गया। एक आले मे लालटेन रखी हुई थी। वासुदेव ने निकट ही हाथो से टटोला, तो माचिस भी मिल गई। उसने लालटेन जला दी। पूरे दालान मे प्रकाश फैल गया। लालटेन लेकर वह सेठ के निकट आया।

'तिजोरी कहाँ है ?' वासुदेव ने पूछा।

मेरे पास कुछ नही है। ईश्वर की कसम खाता हूँ।' सेठ रिरियाया।

'अबे चुप। नही तो गोली सीने मे घुस जाएगी। झूठ बोलता है। चुपचाप तिजोरी की तरफ चल।'

मरता क्या नही करता। सेठ जिस कमरे से निकला था उसी तरफ बढ़ा।

'कमरे मे और कौन है ?' वासुदेव ने प्रश्न किया।

'पत्नी है।'

'चलो दरवाजा खोलो।'

सेठ ने काँपते हाथो से दरवाजा खोला। लालटेन की रोशनी मे वासुदेव ने देखा, एक स्त्री खाट पर बेसुध सोई हुई है। वासुदेव के इशारे पर सेठ ने पत्नी को उठाया।

'चीखना मत नही तो दोनो को गोली मार दूगा।' दौलत कर्कश स्वर मे बोला। स्त्री भयवश चुप रही। वासुदेव कमरे का निरीक्षण कर रहा था।

'इधर कोई और कमरा है ?' एक दरवाजे की ओर इशारा करते हुए वासुदेव ने पूछा।

'भडार है।' सेठ बोला।

'तिजोरी किधर है ?'

'उधर है।' सेठ ने कोने की ओर इशारा किया।

'भडार मे क्या है ?'

'अन्न वगैरह है।'

'चलो—तिजोरी खोलो।' वासुदेव ने आदेश दिया।

सेठ हिचकिचाया। वासुदेव और भी कड़क कर बोला—

'सेठ, पैसा प्राणों से कीमती नहीं होता। चाबी कहाँ है?'

सेठ चुप रहा।

वासुदेव ने दौलत को कहा—'इसे गोली से उड़ा दो।'

बन्दूक की नली सीधी हो पाती कि सेठ बोल पड़ा—

'तकिए के नीचे है।'

'निकाल—जल्दी कर। हमारे पास इतना समय नहीं है।'

सेठ ने चाबी निकाल कर चुपचाप तिजोरी खोल दी।

'यह सारा माल किसी थैले में डाल दे। जल्दी कर, जल्दी।'

'थैला भंडार में है।'

'अरे! भंडार कौन सा कालो दूर है। फुर्ती कर।'

सेठ आगे और वासुदेव पीछे। तिजोरी का सारा धन थैले में डाल दिया गया। सेठ अभी सदमे से नहीं उभरा था कि वासुदेव ने दूसरा प्रहार किया—

'किसानों के कर्ज के कागजात भी इसी तिजोरी में हैं क्या?'

'मैं बरबाद हो जाऊंगा।' सेठ रुआंसी आवाज में बोला।

'तू बरबाद नहीं होगा। पाप से बचेगा। सालों से किसानों का खून चूस चूस कर तूने अपने सिर पर पाप का बोझ बढ़ा लिया है। अब तो कुछ हल्का कर ले। जल्दी में कागजात निकाल ले।'

सेठ ने उसी तिजोरी के निचले खाने से कागजों के तीन चार बंडल निकाल कर बाहर रख दिए। वासुदेव ने तिजोरी का निरीक्षण किया।

'चल—यह थैला और कागज बाहर तक पहुँचा दे।' वासुदेव सेठ से बोला।

'इसकी स्त्री ने भी हजारों के जेवर पहने हुए हैं।' दौलत ने कहा।

'उस धन पर हाथ लगाने का हमें अधिकार नहीं है।' वासुदेव ने कहा और दोनों के साथ कमरे से बाहर आ गया।

'तुम शोर मत मचाना नहीं तो हम इसे जान से मार देंगे।'

वासुदेव ने उस स्त्री से कहा और कमरे का दरवाजा बाहर से बद कर दिया। यह सब इतना चुपचाप हुआ कि सेठ के परिवारजन तक नही जाग पाए। घर के बाहर आकर सेठ न देखा, दो और व्यक्ति अपन चेहरो को साफे से ढके हुए खडे हैं। 'सेठ अपनी घुडसाल से घोडा लाओ।' वासुदेव ने दौलत को साथ जान का इशारा किया।

'घला सँभालो।' वासुदेव न विश्वासराव को इशारा किया। कुछ ही देर मे सेठ और दौलतराव एक घोडा लिए आ गए।

मैं मर जाऊँगा।' सेठ अन्तिम बार गिडगिडाया।

यहाँ खडा रहा तो जरूर मारा जाएगा। अब अन्दर जाकर चुपचाप दरवाजा बन्द कर ले। इसी म भला है।

सेठ मरे कदमो से अन्दर चला गया। वासुदेव घोडे पर चढा और साथिया सहित सेठ के मकान क बाइ ओर से होता हुआ अँधेरे म खो गया। अब सेठ मकान क बाहर आकर पागलो की तरह चिल्लान लगा—हाय मैं लुट गया गाँव वालो, मैं लुट गया। घर के अन्दर के सदस्या न सेठ की हाय तौबा सुनकर अपने-अपने कमरों के दरवाजे भडभडाने शुरू कर दिए। आस पास के लोग एकत्रित हो गए। सहानुभूति और दिलासा व्यक्त करन का दौर शुरू हो गया। अपन बेटे को सामने देखते ही सेठ पर दौरा पड गया।

अरे! इस हरामखोर के कारण मैं बरबाद हो गया। मैं तो जीते जी मर गया। इसने दरवाजा खुला छोडा था।' सेठ अपनी छाती पीटने लगा। थोडी देर मे गाँव का जमीदार भी आ गया। आते ही वह रोबीली आवाज म बोला—

'मेरे गाँव म डाका डालने की हिम्मत किसकी हुई? कमाल है। वे गए किधर? कितने थे?'

सेठ ने अपनी हिचकियाँ रोककर जवाब दिया। जमीदार ने उसे दिलासा दिया—

'अरे! औरतो की तरह क्या रोना पीटना मचा रखा है। कल पता लग जाएगा। साले, जाएँगे कहाँ?'

धीरे धीरे लोग अपने घरो को लौट गए। अगले दिन सारे गाँव मे यही चर्चा

चल रही थी। अधिकांश ग्रामीण सुनकर खुश हो रहे थे। जमींदार ने अपने व्यक्ति इधर उधर पता करने के लिए भेजे, पर किसी का पता नहीं लगा। एक दिन गुजर गया।

दूसरी रात चारों ओर नीरवता छाई हुई थी। चार व्यक्ति गाँव की सीमा में दाखिल हुए। वे घोड़ों से उतर गए और धीमे कदमों से गाँव के बीच में से गुजरने लगे।

'सेठ का मकान तो किनारे था, पर जमींदार का मकान बीच में है। कहीं गाँव वाले जाग गए तो आफत हो जाएगी।' एक घुड़सवार ने साथ चलते साथी से कहा।

'चुपचाप चलते रहो। गाँव में भय फैला हुआ होगा। ऐसे में दरवाजा कोई नहीं खोलेगा।'

कुछ ही देर में जमींदार का मकान दिखने लगा। जैसे ही वे एक पेड़ के नीचे से गुजरने लगे कि जमींदार के मकान का दरवाजा खुला।

'यहीं रुक जाओ।' वासुदेव धीमे स्वर में बोला। अँधेरा वृक्ष के नीचे और भी गहरा था। उस व्यक्ति ने मकान का दरवाजा धीरे से बंद किया और बाईं ओर गली में घुस गया।

'तुम यहीं रुको।' वासुदेव तेजी से उसी गली की ओर बढ़ा। कुछ ही देर में, वह एक व्यक्ति को चाकू की नोक पर अपने साथ लेकर आया।

'कौन है यह ?' विश्वासराव ने पूछा।

'जवाब दो' वासुदेव ने कहा।

'जमींदार का लड़का हूँ।'

'इस समय कहाँ जा रहे थे ?'

लड़का चुप रहा। वासुदेव ने चाकू उसकी पसली पर दबाया।

'रज्जो से मिलने जा रहा था।'

'वाह रे मजनू की औलाद। चल अब तेरे घर चलें।' विश्वासराव बोला।

'तुम यहीं रहो घोड़े सँभालो। हम अभी आए।' वासुदेव ने कृष्णजी से कहा।

विश्वासराव और दौलत के पीछे वासुदेव जमींदार के मकान की ओर बढ़ा।

'लो, तुम बन्दूक सभालो। इसे मैं ले चलता हूं। अच्छा रहा, यह हाथ आ गया, अन्यथा दरवाजा खुलवाने मे कठिनाई आती।' वासुदेव ने चाकू उस लडके की पसलियो से लगा दिया। विश्वास ने बन्दूक सँभाल ली।

'घर मे जमीदार के सिवाय और कौन है?' वासुदेव ने पूछा।

'मेरा बड़ा भाई है, बहन है, मां है, और भाभी है।'

'बन्दूकें कितनी हैं?'

'एक है।'

'कहां रखी रहती है?'

'पिताजी के कमरे म।'

'क्या सब नीचे ही सोते हैं?'

'सब नीचे ही सोते हैं।'

'इस समय सब सो रहे हैं क्या?'

'जी हां।'

'तुम दरवाजा खोलकर सभी कमरो के दरवाजे बाहर से बन्द कर दो।'

वासुदेव ने दौलत को इशारा किया। दौलत बिल्ली की तरह अन्दर घुसा और सभी कमरो को बाहर से बन्द कर दिया। उसने इशारा किया। बरामदे मे धीमी लौ से लैम्प जल रहा था। वासुदेव लडके को लिए हुए अन्दर आ गया। विश्वासराव भी उनके पीछे बन्दूक सभाले हुए था।

'जमीदार किस कमरे मे है?' वासुदेव ने लडके से पूछा। लडके ने एक कमरे की ओर इशारा किया। वासुदेव साथियो सहित उस कमरे के आगे रुका। उसने खिड़की से देखा। अन्दर हल्का प्रकाश हो रहा था। वासुदेव के इशारे पर विश्वास ने दरवाजा खोल दिया। चारो अन्दर आ गए।

'अरे जमीदार साहब, उठो।' वासुदेव ने आवाज दी। जमीदार हड़बड़ाकर उठा।

'कौन हो तुम लोग?'

'जानकर क्या करेंगे आप?' वासुदेव मुस्कराया।

'बेटा तुम इन्हें लेकर आए हो?' जमींदार ने अपने बेटे से पूछा।

'नहीं बापू।'

'समझा।' जमींदार दीवार की ओर लपका कि उससे पहले दौलत ने उसे पकड़ लिया। विश्वासराव ने दीवार पर टंगी बन्दूक कब्जे में कर ली।

'अब यह कोई शरारत करे, तो बेहिचक गोली मार देना।' वासुदेव न कड़क कर कहा।

'तुम लोग अन्दर आए कैसे? क्या चाहते हो तुम?' जमींदार ने सहमे स्वर में कहा।

'हमें अन्दर तुम्हारा बेटा लाया है। यह अँधेरी रात में रज्जो से मिलने जा रहा था कि हमने रास्ते में पकड़ लिया। हम चाहते हैं—रुपया।'

'रुपया—ओह! तो सेठ को तुम्हीं लोगों ने लूटा था?'

'तुम अपनी बात करो। रुपया या फिर मौत घर के सभी सदस्य अपने-अपने कमरों में बन्द हैं। हम घर को आग लगा देंगे, कोई भी नहीं बचेगा।'

जमींदार कुछ देर सोचता रहा।

'जल्दी निर्णय करो।'

'बापू दे दो इन्हें रुपया दे दो।' जमींदार का लड़का बोला।

'तुम्हें इसका फल भुगतना होगा।' कर्कश स्वर में जमींदार बोला।

'हम तो जब भुगतेंगे, तब भुगतेंगे, पर लगता है कि तुम इसी वक्त भुगतना चाहते हो।' वासुदेव बोला। उसके स्वर में झुंझलाहट की पुट समझ कर, जमींदार बोला—

'लो चाबी है—खोल लो।' उसने गले में लटकी चाबी निकाल कर वासुदेव की ओर बढ़ाई।

'यह खेल तुम्हें ही खेलना है।' वासुदेव ने कहा। जमींदार ने तिजोरी खोल दी। उसमें कुछ चाँदी के गहने छोड़कर और कुछ नहीं था। वासुदेव के मुँह से निकल पड़ा—

'बस? तुम जमींदार हो या भिखारी। यह ऐसे नहीं मानेगा। इस लड़के को बाहर ले जाकर गोली से उड़ा दो।' उसने लड़के को दौलतराव की ओर धकेल दिया। दौलत लड़के को गर्दन से पकड़कर बाहर ले जाने लगा कि वह

चिल्लाया—

'बापू ! तुम्हें धन मुझसे ज्यादा प्यारा है !' उसका चिल्लाना सुनकर, घर के अन्य सदस्य जाग गए थे। उन्होंने घर के दरवाजे खोलने चाहे पर वे तो बाहर से बन्द थे। उन्होंने भी चीखना चिल्लाना शुरू कर दिया। वासुदेव कमरे से बाहर निकला और बरामदे में आकर तीव्र स्वर में बोला—'चीखना चिल्लाना बन्द करो। अब आवाज आई, तो घर को आग लगा दूंगा।'

आवाजें आनी बन्द हो गई। वासुदेव कमरे में आया। दौलतराव अभी दरवाजे के पास खड़ा था। वासुदेव बोला—

'इस छोकरे को ले जाकर गोली से उड़ा दो इंतजार किसका है?'

बापू ने पलंग के नीचे धन गाड़ रखा है। लड़के ने पोल खोली। वासुदेव सुनकर हंसा।

'जमींदार ! तुझे मान गया। धन के लिए तूने अपने बेटे की परवाह नहीं की। यह धन साथ नहीं जाएगा। चल पलंग हटा नहीं तो कसम से, तेरी दोनों टांगों को बन्दूक की बट से तोड़ दूंगा। क्रोध से वासुदेव ने कहा।

जमींदार ने पलंग हटाया। फर्श खोदा। वासुदेव ने पलंग पर से चादर खींची और उसकी ओर फेंक दी।

'यह सब चादर में बांध?'। जमींदार ने आज्ञा का पालन किया।

वासुदेव ने चादर उठाई और दौलतराव तथा विश्वासराव को इशारा किया। दौलतराव ने लड़के को अन्दर धकेल कर, दरवाजा बाहर से बन्द कर दिया और बाहर आकर छूमंतर हो लिए। जाते हुए वे चिल्लाकर कह गए—

'तुम्हारा जमींदार लुट गया है।' घोड़ों की टापों और वासुदेव के स्वर से गली के लोगों की नींद खुल गई। वे आपस में फुसफुसाने लगे, फिर झोंपड़ियों के दरवाजे खुलने लगे। लोग एकत्रित हो गए और आपस में पूछ-ताछ करने लगे। सभी उनींदे थे। एक बुजुर्ग बोला—

'अरे जमींदार को संभालो। मैंने 'जमींदार' तो सुना बाकी मेरी समझ में नहीं आया।'

लोगों का झुंड जमींदार के मकान की तरफ गया। उन्होंने देखा, मकान के द्वार खुले हैं। अन्दर जाकर, बाहर से बन्द दरवाजे खोले गए। उन्हें देखते ही

जमींदार चिल्लाया—

'हरामजादो अभी तक मर गए थे क्या ? तुम्हारे बाप आए थे और तुम्हें पता नहीं लगा ? तुम्हारी खाल मे भूस भर दूंगा। निकल जाओ, दूर हो जाओ भाग जाओ।'

ग्रामीणजन मुँह लटकाकर वापस चले गए। जाते हुए वे अपनी राय व्यक्त कर रहे थे—

'अच्छा हुआ साला लुट गया।

पता लगते ही सेठ जी मिलने आए। जमींदार यद्यपि अन्दर ही अन्दर जल-भुन रहा था। मन उसका रो रहा था, पर सेठ के सामने उसने अपने को मर्द सिद्ध किया। सेठ ने जब दिलासा दिया, तो जमींदार स्वर साध कर बोला—

'अरे भाई, कोई खास बात नहीं है। पैसा क्या है ? साला हाथ का मैल है। हाँ, यह जरूर हैरानी की बात है कि इतनी हिम्मत कौन कर रहा है ? एक तो दाढ़ी वाला है। दो ने चेहरे पर साफे लपेट रखे थे। आस-पास के इलाके के तो नजर नहीं आ रहे थे।'

'आस पास वाला आप पर हाथ डाल सकता है ?'

'यही मैं सोच रहा हूँ। साले बन्दूक और ले गए। पुलिस से मिलना पड़ेगा और कुछ न कुछ इलाज करना पड़ेगा।'

मेरा भी ध्यान रखिएगा। आप भाई-बाप हैं।'

तुम चिंता मत करो।'

उधर वासुदेव मित्रों सहित अपनी निश्चित गुफा में पहुँचा। बन्दूकें उन्होंने एक ओर खड़ी कर दी। घोड़ों को बाँध दिया। वासुदेव घास और पत्तों के बने हुए बिस्तर पर बैठ गया। शेष तीनों साथी लूट कर लाए माल का निरीक्षण करने लगे। कृष्णाजी बोला—

'क्या सेठ और जमींदार हैं ? माल से तो लगता नहीं। अधिकांश चाँदी है।'

'मेरा एक विचार है।' दौलतराव ने वासुदेव की ओर देखा।

'बोलो बोलो।' वासुदेव ने प्रोत्साहित किया।

'जब तक महिलाओं पर हम हाथ नहीं डालेंगे, तब तक असली माल हाथ नहीं लगेगा।'

'यही विचार मेरा है।' विश्वासराव ने दौलत की बात का समर्थन किया। वासुदेव कुछ देर खामोश रहा और फिर उसने कृष्ण से सवाल किया।

'और तुम्हारा क्या विचार है?'

'जो आपका है।'

चारों हँस पड़े। तीनों साथी लालटेन की धीमी लौ में वासुदेव के मुख की ओर देखकर, उसके प्रत्युत्तर का इन्तजार कर रहे थे।

मैं आप लोगों से असहमत हूँ। स्त्री जाति पर हाथ लगाना ही मैं पाप समझता हूं। अगर ये गहने भी न पहने होती, तो मैं खाली हाथ आ जाता। अब सो जाओ। सबसे पहले पहरा कौन देगा? वासुदेव ने पूछा।

मैं दूंगा।' विश्वासराव बोला।

ठीक है। हम सोते हैं। ठीक समय पर किसी एक को उठा देना।'

विश्वासराव बन्दूक उठाकर बाहर निकल गया। सुबह हुई। पहरे पर वासुदेव था। उसने उन तीनों को नहीं उठाया। नित्य कर्म से निपट कर, उसने घोड़े चरने के लिए छोड़ दिए और स्वयं पूजा पाठ पर बैठ गया। जब वह पूजा पाठ से निवृत्त हुआ, तो तीनों साथी उठ चुके थे। वे भी कुछ देर उसके पास आकर बैठ गए।

'शाम को कृष्णजी और दौलतराव को जाकर यह देखना है कि हमारे इस कार्य की गाँव में क्या प्रतिक्रिया हो रही है। राहगीर के तौर पर एक दो दिन वहाँ ठहर कर लोगों को प्रेरित करना है। साथ में उन कागजों को ले जाना, जो हम सेठ के यहां से लाए थे। सम्बंधित व्यक्ति के सामने उन्हें नष्ट कर देना। मेरा जहाँ तक खयाल है इससे लोग हमारे पक्ष में होंगे। वे गाँवों में, सेठों के कब्जे से अ[illegible]य किसान भाइयों के कागजातों को मुक्त करवाने के लिए स्वतः ही तुम्हारे साथ हो जाएँगे।'

'मैं सोच रहा था कि दूसरे गाँव में कार्य होने के उपरान्त ही इस कार्य को हाथ में लिया जाता, तो ठीक था।' दौलतराव ने अपने विचार प्रकट किए।

'मैं समझता [illegible] कि सेठ और जमींदार के लुटने की बात गाँव वालों को अवश्य पता हो गई होगी पर वे इस घटना को साधारण ढंग से सोच रहे होंगे। मैं चाहता हूँ उन्हें इस बात का पता लगना चाहिए कि यह कार्य उनके हितार्थ

हुआ है।'

'ठीक है। आपका सोचना उत्तम है। हम शाम को वहीं आकर भोजन करेंगे।'

कृष्णजी की बात सुनकर तीनों साथी मुस्कराए बिना न रह सके।

'किन्तु भोजन के चक्कर में कहीं फँस मत जाना। तुम लोगों के पास हथियार भी नहीं होंगे। सावधानी से योजना बना लो। मैं और विश्वास इन गहनों के ग्राहक की तलाश में जाएँगे, ताकि आवश्यक सामग्री का प्रबन्ध किया जा सके। घोड़े चाहिएँ, बन्दूकें और कारतूस भी चाहिएँ।'

वासुदेव और विश्वासराव दिन में भोजनोपरान्त घोड़ों पर निकल पड़े। शाम को दौलत और कृष्णजी भी अपने अभियान पर निकल पड़े। दौलत हँसकर बोला—

'बेचारा सेठ। आकाश से गिरा और खजूर पर अटका।'

'क्या मतलब?' कृष्णजी घोड़े पर सवार होते हुए बोला।

'मतलब यह कि सम्पत्ति तो गई, अब साख और जाएगी। उसने अभी लोगों को यह हवा नहीं लगने दी होगी कि उनके कर्ज़े के कागजात भी उसके अधिकार से जा चुके हैं। अपने कर्ज़े को वसूलने के लिए वह कई तरकीबें सोच रहा होगा।'

'और तरकीब तो क्या है, फर्जी कागज़ात तैयार करेगा।'

'लेकिन हमारे इस अभियान के बाद करने के लिए क्या बचेगा?'

'दौलत, वह बनिया है। बनिया कभी मार नहीं खाता। कर्ज़े की तो गरीबों को जरूरत पड़ती ही रहती है, वह कुछ ही महीनों में इन्हें फिर लपेट में ले लेगा।'

'लोगों को यही बातें समझानी हैं।'

इधर उधर घूमते घामते शाम के धुँधलके में उन्होंने गाँव में प्रवेश किया। लोग उन्हें देखकर पहले तो सहमे, पर जब उन्होंने बताया कि वे व्यापारी हैं और उन्हें रास्ते में लूट लिया गया है, तो एक परिवार ने उन्हें शरण दे दी। रात को खाना खाने के बाद वे बातचीत में व्यस्त हो गए। मकानमालिक बोला—

'हम गरीब आदमी हैं, न जाने भोजन आपको पसन्द आया या नहीं।'

'भाई, हमने तुम्हारा नाम तो पूछा ही नहीं।' कृष्णजी बोला।

'मेरा नाम सुखिया है।'

'सुखिया भाई, तुम इस बात की बिल्कुल चिन्ता मत करो। प्रेम से जो मिल जाए, वही अमृत है। जमाना खराब आ गया है। एक तो वे थे, जिन्होंने हमें रास्ते में लूट लिया, और दूसरे तुम हो, जिसने हमें शरण दी। हम तुम्हारे आभारी हैं।' दौलत ने बात आगे बढ़ाई।

'अरे! भैया हमारे गाँव के सेठ और जमींदार को भी लूट लिया गया है। मुझे लगता है, आप लोगों को लूटने वाले भी वही रहे होंगे।'

चार-पाँच ग्रामीणजन आकर सुखिया के निकट ही बैठ गए। सुखिया ने साथियों को सारी बातें बताईं।

'इसका मतलब यह हुआ कि अब राह चलते भी खतरा है?' एक ग्रामीण ने पूछा।

'हाँ भाई, हम पहली बार लुटे हैं। अभी सुना है कि आप लोगों के सेठ और जमींदार भी लुटे हैं।' दौलत बोला।

'ठीक ही हुआ।' एक गाँव वाले ने अपनी भावना व्यक्त की।

'क्यों भाई, ऐसी क्या बात है?' कृष्णजी ने भोलेपन से पूछा।

'पाप का घड़ा एक न एक दिन भरता ही है।' सुखिया बोला।

'पाप? कैसा पाप?' दौलत ने पूछा।

'पीढ़ियों से सेठ का कर्जा चुकाते चले आ रहे हैं, पर आखिरी सिरा नहीं दिख रहा है।' वे समवेत स्वरों में बोले।

'द्रौपदी का चीर हो गया—क्यों?' कृष्णजी ने द्रौपदी के चीरहरण वाली कथा सुनाई।

'वाह! भाई, वाह!!!' गाँव वालों ने उसकी उपमा को सराहा।

काफी देर गए तक ग्रामीण लोग अपनी दुःख गाथा उन्हें सुनाते रहे।

'अब इन लोगों को सोने दीजिए।' सुखिया बोला।

वे सो गए। अगले दिन धीरे धीरे पूरे गाँव में चर्चा हो गई कि रात को दो व्यापारी सुखिया के यहाँ ठहरे हैं उन्हें भी रास्ते में लूट लिया गया है। जमींदार के कानों में भी बात पड़ी। उसने फौरन उन्हें बुला लिया। सुखिया भी साथ में था।

'क्यों? किस चीज का व्यापार करते हो?'

'यही जी, कपड़े की गाँठें लाते थे, सो बिक जाती थीं, पर अब क्या हो सकता है?'

'अरे गाँठें ही तो गई हैं।'

'गाँठें और गाँठ दोनों ही गईं।' लम्बी साँस लेकर दौलत ने कहा।

'तुम दो थे। मरना मारना माँड देते।'

'मरना मारना! ऐसे में तो भागने की लगी रहती है।' कृष्णजी बोला।

जमींदार हँसा—

'इस कायरता के कारण ही तो लुटे हो।'

'मगर हमने सुना है कि आप और यहाँ के सेठ साहिब भी लुट लिए गए हैं।'

दौलतराव के कथन में छिपे हुए व्यंग्य को जमींदार समझ गया। वह तुरन्त बात घुमाकर बोला—

'उनका हुलिया पहचाना?'

'एक दाढ़ी वाला था शेष आठ-दस मुँह लपेटे हुए थे।'

'आठ-दस?'

'जी।'

इसका मतलब है कि उन्होंने पूरा गिरोह बना रखा है। उस दिन तो तीन-या चार थे।'

'इनका कोई इन्तजाम नहीं हो सकता?' दौलतराव बोला।

'होगा क्यों नहीं होगा? मैं जल्दी ही पूना जाकर अफसरों से मिलूंगा।

'आपको तुरन्त मिलना चाहिए।'

'आपकी काफी हानि हुई होगी?'

'वह मेरे लिए कोई विशेष मायना नहीं रखती।

कुछ देर बातचीत करने के उपरांत वे अपने ठिकाने पर वापस आ गए।

'सुखिया भाई, पेट में चूहे कूद रहे हैं। कृष्णजी बोला।

'आप बैठिए, मैं कच्ची पक्की तैयार करवाता हूँ।' सुखिया चला गया।

दौलत ने सेठ से लाए गए प्रोनोट, दस्तावेज और कर्ज के कागजात आदि देखे। सुखिया की जमीन गिरवी रखी हुई थी। कुछ कर्ज के कागजात भी मिले।

'इसी से शुरू करें। इसके कागज सामने जला देते हैं।' दौलतराव बोला।

'आगे की योजना क्या रहेगी ?' कृष्णजी ने पूछा।

एक एक करके सम्पर्क करना पड़ेगा।'

'सावधानी जरूरी है।'

कुछ देर मे भोजन आ गया। भोजन के बीच मे ही दौलत ने बात शुरू की—

मुखिया भाई तुम्हारे पिताजी का नाम रामदास था ?'

'अरे ! आपको कैसे पता लगा, ?'

तुम्हारी जमीन सेठ के पास गिरवी रखी हुई है ?'

'नही।'

यह देखो अँगूठा निशान तुम्हारा है। गवाहो के अँगूठा निशान भी है। ये तुम्हारे कुछ और कर्जे के कागजात है।'

दौलतराव ने कर्जे और गिरवी के कागजो की भाषा पढ़कर सुनाई। मुखिया अकुला गया।

'क्या भाई—क्या ये गलत हैं ?

नही गलत तो नही है पर जमीन का कर्जा मैंने चुका दिया था। और सेठ ने कागज मेरे सामने फाड दिए थे। मुखिया ने आश्चर्य से कहा। दौलत हँसा—

'पीढी-दर-पीढी इस प्रकार कर्जा चलता है समझे ?'

'लो इन्हे आग के हवाले कर दो। अब तुम्हारा कोई छोटा-मोटा कर्ज बही-खाता मे दर्ज होगा तो मुझे पता नही, शेष कर्ज तो समझ लो तुमने चुकता कर दिया।' मुखिया को मानो कारूँ का खजाना मिल गया। उसने जाकर कागज चूल्हे के हवाले किए और पुन लौटकर उनके निकट बैठ गया।

ये कागजात आपके हाथ कैसे लग गए ?'

तुम्हे आम खाने से मतलब है। यह बात बाहर न जाए, ध्यान रखना।'

मैं इतना बेवकूफ नही हूँ।

दौलतराव और कृष्णजी ने भोजनोपरान्त हाथ धोए। मुखिया ने अपने लड़के को आवाज दी। वह थालियाँ उठा कर ले गया।

आपने हमें नया जीवन दे दिया। मुखिया गद्गद् स्वर मे बोला।

अच्छा, अब तुम यह बताओ कि तुम्हारे खास खास मित्र कौन हैं ? क्या वे भी सेठ के कर्जदार हैं ?'

'करीब-करीब सभी है। उसने नाम बताए।

एक एक करके उन्हें बुला सकते हो ?'

क्यो नही।'

खयाल रहे अभी बात बाहर न फैले।'

सारा मामला दो दिन म निपट गया। लोगो की जिज्ञासा को यह कह कर शात किया गया कि कर्जे के कागजातो का थैला उन्हे रास्ते मे पडा मिला था। लोगो ने इस बात पर सहज ही विश्वास कर लिया। इसी दौरान उन्होने तीन नवयुवको का चयन किया और उन्हे सारी परिस्थिति से भिज्ञ कराया।

'वास्तविकता हमने तुम लोगो को बता दी है। शोषण स मुक्त होने का यही उपाय है। गोरी सरकार किसानो को क्या सुविधा दे रही है ? यही कारण है कि अधिकाश किसान गरीब है और धनिको के चगुल म फँसे हुए हैं। बेचारे किसान दोनो तरफ से लुट रहे हैं। हमारा कहना है कि गोरी सरकार को लगान देने की कोई आवश्यकता नही है। आप लोग इस काम म हमारा साथ देने के लिए तयार हैं ? दौलतराव ने तीनो नवयुवको की ओर देखकर प्रश्न किया।

हम आपके साथ है। तीनो एक स्वर मे बोले।

'ठीक है। आप लोग गाँव वालो को प्रेरित कीजिए। जिन लोगो क पास जमीन नही है, उन्हे जमीन वाले श्रमिको क रूप मे काम दें, ताकि सेठजी और जमीदार को मजदूर न मिल सके।

'आप यह काम हम पर छोड दीजिए।'

'यह काम आप के गाँव तक ही सीमित नही रहेगा। हमें अन्य गाँवो मे जाकर भी प्रयास करना है। हम दो-चार दिन म आएँगे। आप हमारे साथ चलने के लिए तैयार रहे।'

दिन ढलने के उपरात वे दोनो वापस अपने ठिकाने की ओर रवाना हो गए।

वासुदेव और विश्वासराव भी आ चुके थे, उनके साथ चार नवयुवक और बठे हुए थे। दौलतराव पहचान गया। ये वही चारो नवयुवक थे, जो घुडसवारी सीख रहे थे और जिन्हें दौलतराव ने अपने साथ के लिए चुना था। दौलतराव ने अपनी सारी कारगुजारी वासुदेव को बताई।

'बहुत अच्छा, ऐसा ही करना चाहिए था। मैं सोचता हूँ, एक-दो दिन में परिणाम का पता चल जाएगा। गाँव वाले निश्चित रूप से बेगारी का विरोध करेंगे। बातें आगे जाएगी, यही हम चाहते हैं। मैं इन चारों को साथ ले आया हूँ। कृष्णाजी का भी आगे के काम के लिए कुछ रुपया मिल सकता है। तुम कब रवाना होना चाहोगे ?' वासुदेव ने प्रश्न किया।

'मैंने जो चार युवक छाँटे थे, आप उन्हे भी ले आते ?' कृष्णजी बोला।

तुम जाओगे ही, उन्हें उधर से साथ ले लेना। हमे व्यर्थ की भीड़ खड़ी नहीं करनी है इस बात का ध्यान रखना। चार पाँच पूर्ण समर्पित कार्यकर्ता, हजार की भीड़ से कही अधिक अच्छे होते हैं।'

'मैं तीन दिन बाद रवाना होना चाहूँगा।'

मैंने कार्यक्रम मे एक छोटा-सा परिवर्तन किया है कि अब कृष्णजी के साथ कुछ दिनों के लिए दौलत भी जाएगा।' वासुदेव कृष्णजी की ओर देखकर मुस्कराया।

'क्यो मुझ पर विश्वास नही है ?' कृष्णजी बोला।

'एक और एक ग्यारह होते हैं। तुम्हें अकेला भेज कर मुझे चिंता रहेगी। जमे ही काम ढर्रे पर आएगा यानी तुम्हें अच्छे कार्यकर्ता मिल जाएंगे, मैं दौलत को वापस बुला लूगा।'

साफ मतलब है कि आप खाएँगे और सोएँगे, इसके सिवाय आप कुछ नहीं कर सकेंगे। दौलत ने हस कर कहा।

मतलब यह हुआ कि तीर आप ही मार सकते हैं।' कृष्णजी झुंझला कर बोला।

तुम लोग बच्चो के समान उलझ जाते हो।' वासुदेव ने कहा।

'अब तुम भोजन की व्यवस्था करो।' विश्वासराव बोला।

हमारे पास तो भोजन है। चलते समय गाँव वालो ने रोटियाँ बाँध दी थी।' कृष्णजी रुष्ट स्वर मे बोला।

'अरे! लाल बुझक्कड़, हम नहीं हैं क्या ? वासुदेव ने कहा।

सबने आपस मे हँसी मजाक करते हुए भोजन तयार किया और फिर खा पीकर सो गए। सुबह वासुदेव ने कार्यक्रम बनाया—

'कृष्णजी, तुम और दौलत, यशवन्त को साथ ले जाकर उन चार नवयुवकों से सम्पर्क करो, जिनका तुमने चयन किया था। अपनी कार्यनीति तय कर लो। नियम बना लो। मैं तो इतना ही चाहूँगा कि स्त्रियों पर अत्याचार न हो और बेवजह किसी की हत्या न हो। हमारा उद्देश्य हत्याएँ करना नहीं है, अपितु गरीबों का शोषण बन्द करवाना है तथा अंग्रेजी सरकार के विरुद्ध जनमानस जागृत करने का है।'

'हम आपकी बातों को नजरअन्दाज नहीं करेंगे।' दौलत बोला।

'विश्वासराव, तुम इन तीनों को ले जाकर हथियार चलाने का और गहरा प्रशिक्षण दो।'

'और आप?' कृष्णजी बोल पड़ा।

'मैं भी खाली नहीं बैठूँगा। मैं आवश्यक काम से जा रहा हूँ और शाम को मिलूँगा। कल तक तुम्हारे लिए कुछ धन की व्यवस्था भी करनी है।' वासुदेव मुस्कराया।

'अकेले, खतरा नहीं होगा?' विश्वास ने आशंका प्रकट की।

'असली काम रात को ही तो होगा। इस समय मैं टोह लेने जा रहा हूँ।'

वासुदेव चला गया। विश्वासराव ने कृष्णजी और दौलतराव को नए लाए गए हथियार दिखाए।

'जितना भी धन प्राप्त हुआ था, वह सब हथियार, घोड़े आदि खरीदने में खर्च हो गया। इस अभियान के लिए तो जितना भी मिले कम है।'

सभी ने नये हथियारों का परीक्षण किया। दिन में दौलत, यशवन्त और कृष्ण जी रवाना हुए। मार्ग में यशवन्त बोला—

'आप इस प्रयास में कब से लगे हैं?'

कृष्ण जी और दौलत ने एक दूसरे की ओर देखा। उत्तर कृष्ण जी ने दिया।

'क्या मतलब! क्या तुम्हारा दिमाग इतना भी काम नहीं करता? देख रहे हो, अभी तो तैयारियाँ चल रही हैं।'

'वह तो मैं समझ गया।'

'तो अब क्या समझना चाहते हो?'

'मेरा मतलब कि बाबा ने कभी जिक्र नहीं किया। इस इलाके पर बाबा का

बहुत प्रभाव है। आप लोग बाबा के सम्पर्क में कसे आए, कब आए ?'

'बेकार के सवाल मत पूछो यार। थोडी देर में तुम मेरा इतिहास पूछना शुरू कर दोगे।

यशवन्त का मुख उतर गया। वह चुप हो गया। दौलतराव को लगा कि वह बुरा मान गया। उसे तसल्ली देने के लिए दौलतराव बोला—

यार बुरा मत मानना। इसका स्वभाव जरा टेढा है। हमने यह प्रयास यहीं से शुरू किया है। अब देखें सफलता कितनी मिलती है।'

हमें निश्चित रूप से सफलता मिलेगी। हम वर्षों से पिस रहे हैं। हमें तो कोई रास्ता दिखाने वाला चाहिए था।

ऐसी भावना सबकी हो तब बात बने।'

मुझे लगता है कि कृष्णजी को मेरा साथ पसन्द नहीं है।'

'मैं बातें कम करना पसन्द करता हूँ।' रूखे स्वर में कृष्णजी बोला।

'बातें करते हुए रास्ता आराम से कट जाता है।'

'कटता होगा।'

गाँव दिखने लगा। कृष्ण जी ने तो यशवन्त के व्यक्तित्व के बारे में निचोड़ निकाल लिया पर यशवन्त उसे समझ पाने में सफल नहीं हुआ। वे सीधे मुखिया के पास पहुँचे। मुखिया उन्हें देखकर प्रसन्न हुआ। वह काफी देर तक, उन्हें अपनी कारगुजारियों से परिचित करवाता रहा। दौलतराव और कृष्ण जी ने उसके द्वारा किए गए प्रयत्नों की सराहना की। कृष्ण जी उन चारों नवयुवकों से मिला उसने उनसे सीधा सवाल किया—

तुम लोग मेरे साथ चलने के लिए तैयार हो ?'

बिल्कुल तैयार हैं।

कल गाँव के पश्चिम में लगभग तीन मील पर जो मन्दिर है वहीं मिलो। वहीं से हम चलेंगे।'

किस समय ?'

हम वहाँ से दिन ढलते ही निकल पड़ेंगे। साथ में एक-आध जोड़ी पहनने के वस्त्र ले लेना।'

'ठीक है।' चारों नवयुवकों ने उत्तर दिया।

वे वापस लौट पड़े। ठिकाने पर पहुँचते अँधेरा हो चुका था। विश्वासराव अपने नए साथियों के साथ कहीं बाहर जाने के लिए तैयार खड़ा था। वासुदेव गुफा के अन्दर से बाहर निकला। दौलतराव और कृष्णजी को देखते ही वह बोला—

'चलो अच्छा है, तुम लोग आ गए। भोजन रखा है, खा लेना। चलो।'

उसने साथियों को इशारा किया। कुछ ही देर में वे आँखों से ओझल हो गए।

'कहाँ गए हैं?' कृष्णजी ने दौलत से पूछा।

'कहीं भी गए हों, काम से गए हैं।'

'खैर! भाई यशवन्त, हाथ मुँह धो लो। सबसे पहले पेट पूजा, फिर काम दूजा।'

खाना खा लेने के बाद दौलतराव ने बातों का सूत्र शुरू किया ही था कि कृष्णजी बोला—

'खाने के बाद आराम बहुत जरूरी है।' और वह घास के [illegible] पर लम्बा हो गया और थोड़ी ही देर में खर्राटे लेने लगा। वासुदेव [illegible]—

'यह हाल है क्रान्तिकारियों का।'

आधी रात को घोड़ों की टापों की आवाज सुनकर [illegible] की नींद खुल गई। उसने यशवन्त को उठाया। [illegible] कृष्णजी [illegible] तीनों बन्दूकें सँभालकर, गुफा की बगल में [illegible] कुछ ही देर में घुड़सवार गुफा के प्रवेश द्वार [illegible] उभरा— दौलत।

बढे। वासुदेव ने अपनी बन्दूक एक कोने पर टिकाई। साथियो ने भी साथ लाया हुआ एक थला और अपनी बन्दूकें वहो रखी और लेटन की व्यवस्था करने लगे।

प्रात वासुदेव ने कृष्णजी और दौलत को कुछ रुपए देते हुए कहा—

'इस समय तो इतने से तुम्हारा काम चल जाएगा। समय समय पर मैं और भिजवाता रहूँगा। तुम्हारा काम किसानो को सेठो और जमीदारो के चगुल से मुक्त करवाना है। व्यथ की हिंसा न हो, इस बात का ध्यान रखना।'

'आप निश्चिन्त रहें।' दौलत बोला।

मैं यह बात बार-बार इसलिए दोहरा रहा हूँ कि अक्सर देखा जाता है कि हम आवेश मे आ जाते हैं। हमे आवेश मे नहीं आना है। सेठो और जमींदारो से बहस हो सकती है। वे अपने कब्जे से कागजो को इतनी आसानी से नहीं देंगे। हमे उन्हें छीनना पडेगा, लेकिन धैय और सयम से।'

लेकिन कभी परिस्थितियाँ ऐसी हो जाती हैं कि हिंसा के सिवाय अन्य कोई रास्ता ही नहीं बचता।' कृष्ण जी न टोका।

'वह एक अलग बात है।' वासुदेव ने उत्तर दिया।

दोपहर मे वासुदेव तथा अन्य मित्रो ने दौलत और कृष्ण को विदा दी।

'चिन्ता मत करना। हम तुम्हारे आस पास रहेंगे।' वासुदेव न पीछे से चिल्ला कर कहा। प्रत्युत्तर मे दौलत और कृष्ण न हाथ हिलाए।

उन दोनो के घोडे जब मन्दिर के पास पहुँचे, तो उन्होन चारा नवयुवको को अपनी प्रतीक्षा म खडा पाया।

'घोडे दो हैं जबकि हम ' दौलत वाक्य पूरा नहीं कर पाया कि उनम से एक नवयुवक बोल पडा—

'हम घोडों से तेज चल सकते हैं।

''अरे वाह! मेरे शेर।' कृष्णजी न उसकी पीठ थपकी।

बातें करते हुए वे पैदल ही चल पडे। दिन ढलने तक, वे एक बार फिर उस गाँव मे पहुँच गए, जहाँ उन्होंने कर्जों के कागजात लोगो को वापस किए थे। मुखिया तो उन्हें देखते ही बहुत खुश हुआ। आदरभाव से उसन उन्हें बिठाया।

'भई मुखिया—क्या हाल है? दौलत ने पूछा।

'बस पूछो मत भैया—सारा गाँव एक ओर हो गया है। सेठ और जमींदार

हाथ पर हाथ धरे बैठे हैं। पहले तो सेठ फलफनाया, पर जब पचायत मे, उससे सबने अपने-अपने कर्ज के कागजात मांगे तो वह बोला कि पहले भरपाई करो।'

'अच्छा।' कृष्णजी ने अपनी प्रसन्नता व्यक्त की।

'हम लोगो ने आपस में सलाह-मशविरा करके सीतू के कर्ज की रकम पहले ही एकत्रित कर रखी थी। सेठ के कहते ही उसने रकम पचायत के हवाले कर दी। पचायत ने सेठ को उसके कर्ज के कागजात लाने के लिए हुक्म दिया। सेठ आज तक तो आया नहीं।

'आता कैसे बेचारा!' दौलत ने कहा।

सुखिया ने आगे की बात बताई—

'फिर तो हर दिन, उस एक ही रकम को लेकर बारी बारी से पाँच-सात लोग उसके पास जाते और अपने कर्ज के कागजात मांगते। अन्त मे तग आकर उसने कह दिया कि उसके कागजात चोरी हो गए हैं।'

'फिर तुम लोगो ने क्या किया?'

'सेठ ने हमे कहा कि हमे अपने मान ईमान को ध्यान मे रखते हुए उसकी रकम वापस करनी चाहिए। हमने जवाब दिया कि हिसाब से तो कर्जा कभी का पूरा हो चुका है। अब हम एक धेला नही देने के।'

'अब तो ग्रामीण शेर हो रहे होगे।' कृष्णजी ने पूछा।

'आप लोगो की मेहरबानी है, अन्यथा हम तो पिसते रहते।' ग्रामीण एक स्वर मे बोले।

'मेहरबानी किसी की नही है। अन्याय और जुल्म के खिलाफ तुम खड़े हुए, सो जीत तुम्हारी होनी ही थी।'

इधर बातें चल रही थी और उधर एक आदमी जमींदार के सम्मुख खड़ा इधर की बातें उगल रहा था।

'तुमने अपने कानों से सुना है?' जमींदार ने आश्वस्त होना चाहा।

बिल्कुल।'

'अच्छा तो ये हैं हमारी मुसीबत की जड़।' जमीदार के जबड़े भिच गए।

प्रात सूर्य की रश्मियो ने धरती का स्पर्श किया ही था कि जमींदार अपने आदमियो को लेकर सुखिया के निवासस्थान पर आया।

'सुखिया, मैं तुम्हारे मेहमानो से मिलना चाहता हूँ।' जमीदार गुर्राया।

सुखिया असमजस म पड गया। वह कोई उत्तर दे पाता कि जमीदार पुन गुर्राया—'तुमने सुना नही।' इतन म अन्दर से दौलत निकल आया।

कहिए कौन हैं आप? सुखिया के महमान हम ही हैं।'

'तुम हमारे खिलाफ हमार गाँव म लागो का भडका रहे हो?

'यह गलत है।' कृष्णजी न बाहर आकर कहा।

'मुझे लगता है—लूट मार मे भी तुम्हारा हाथ है।' जमींदार तीखे स्वर म बोला। वाद विवाद सुन कर इनके साथ के अन्य चारो नवयुवक भी बाहर आ गए। इधर-उधर लाग भी एकत्रित होन लगे। जमीदार को लगा कि मुकाबल की स्थिति नही है पर उसका अहम् उस वहाँ से जाने भी नही दे रहा था।

आप हम पर सरासर गलत आराप लगा रहे हैं—श्रीमानजी। कृष्णजी दबग स्वर म बोला।

तुम हमारे आदमियो को भडका रहे हो।' जमीदार खिसियाए स्वर म बोला।

'जमीदार साहब यह तो भेडिए और मेमन वाली बात हो गई। भेडिए का दरअसल मे ममने का हजम करना था इसलिए उसने उसे फन्दे मे फँसाने के लिए कहा कि पिछले वष उसने, उसे यानी भेडिए को गाली दी थी।

मेमने न उत्तर दिया कि वह तो पिछले वष पदा ही नही हुआ था।

भेडिए ने उत्तर दिया— तूने नही तो तेरे बाप न गाली दी होगी।' यह कह कर वह मेमने को खा गया। एसा ही कुछ आप हमारे साथ कर रहे हैं।' दौलत ने हँसत हुए कहा।

'तुम लोगो का यहाँ क्या काम है?' जमीदार कुछ नम्र होकर बोला।

हम व्यापार करत हैं।' कृष्णजी ने उत्तर दिया।

अब तुम यहाँ से चलते बनो। दिन छिपने के बाद यहाँ नजर आए तो जीवित नही छोड़ूगा।

'जमीदार साहब ये लोग मेरे मेहमान हैं।' सुखिया बोला।

तो ठीक है, फिर रात तक रोक कर देख लेना। तुम्हें भी तुम्हारे मेहमानो के साथ ठिकाने लगा दूगा। जलता भुनता जमींदार चला गया। एकत्रित लोगो

में से कुछ उत्तेजित होने लगे।

'हम देखेंगे हमारे घर में अब यह धमकियाँ नहीं चलेंगी।'

आप शांत रहिए। हमें अपने काम से मतलब है। वैसे भी हम शाम को जाना ही था। हमें एक गाँव से दूसरे गाँव जाना है उन्हें भी जगाना है आप में से हमारे साथ कितने लोग तैयार हैं?' दौलत ने बात सँभाली। लगभग सभी ने हाथ खड़े कर दिए। शाम होने से पहले उन्होंने गाँव छोड़ दिया। अब वे छः से दस हो गए थे। गाँव की सीमा पर अपने दो लठैतों के साथ खड़ा जमींदार इन्हें जाते देख रहा था।

गोविन्दा, तुम इनका पीछा करो। ये करना क्या चाहते हैं? पता तो लगे।' आदेश देकर जमींदार वापस लौट गया। अपने साथियों से हँसी मजाक करते हुए दौलत और कृष्णजी चले जा रहे थे। गोविन्दा भी इनके पीछे लगा हुआ था। अँधेरा होने से पूर्व ही ये लोग पड़ौसी गाँव में प्रवेश कर गए।

यहाँ आप लोगों की जान-पहचान तो होगी?' दौलत ने नए साथियों से प्रश्न किया।

उनमें से एक ने उत्तर दिया— यहाँ हमारी रिश्तेदारी है।

'वाह! मजा आ गया। खातिरदारी अच्छी होगी।' कृष्णजी हँसते हुए बोला। साथ आए नवयुवकों ने ग्रामीणों को प्रेरित किया। दूसरे दिन भी तैयारी चलती रही। साहूकारों और जमींदारों के चुंगल से कौन मुक्त नहीं होना चाहता था। दौलत और कृष्णजी ने निर्णय किया कि समस्त ग्रामीणों को दो भागों में बाँट दिया जाए। आधे जमींदार के चुंगल से कर्ज के कागजात छीनेंगे तथा शेष लोग उसी समय साहूकार के यहाँ धावा बोलेंगे। योजनानुसार कार्य हुआ। जमींदार और साहूकार को स्वप्न में भी यह विश्वास नहीं था कि ऐसा हो सकता है, पर समस्त कर्ज के कागजातों की राख उनकी आँखों के आगे अभी भी पड़ी थी। लोगों द्वारा लगाए जा रहे नारों का स्वर अभी भी उनके कानों में गूँज रहा था—

'हम लगान नहीं देंगे। खेत हमारे हैं।'

दौलत और कृष्णजी की टोली में दो सदस्यों की वृद्धि हुई, और वह आगे बढ़ गए। बेचारे मुसीबत के मारे जमींदार और साहूकार, एक संकट से उबर भी नहीं पाते थे कि दूसरे जंजाल में फँस जाते थे। साधु के वेश में वासुदेव मंगल-वल्ल

आता और गाँव के किसानों को बधाई देता—

'जब तक हम अपनी मान-मर्यादा की रक्षार्थ खड़े नहीं होंगे, जो नहीं हमें कोई जीने नहीं देगा, चाहे वे गोरे हों या काले। लूटनेकी इच्छा रखने वाले कौन नहीं लूटना चाहेगा। सब मिलकर एक साथ खड़े हो जाओ। साहूकारों ने ब्याज के नाम पर आप लोगों के खेतों को हड़पा है, उन्हें वापिस ले लो। तुम्हारे हैं। डरो मत।' लोगों में नया उत्साह उमड़ पड़ता। उनकी लगान देने की भावना और भी दृढ़ हो जाती। इसके बाद जमींदार और साहूकारों का धन छीनकर वासुदेव आगे प्रस्थान कर जाता। किसानों में वह 'मुक्तिदाता' नाम से प्रसिद्ध होता जा रहा था, तो दूसरी ओर जमींदार और साहूकारों की दृष्टि में 'लुटेरा' समझा जा रहा था। वासुदेव इसके प्रत्युत्तर में कहता—

'ये लोग खुद लुटेरे हैं। अंग्रेज इन्हीं लोगों के बलबूते पर शासन कर रहे हैं। ये गरीब किसानों को लूटकर, गोरों का खजाना भर रहे हैं। इनसे धन छीनना पुण्य का काम है।'

१०

गोविन्दा ने लौटकर सारी बात जमींदार को बताई। जमींदार सोच में पड़ गया। वह यद्यपि अपनी पुश्तैनी दुश्मनी के कारण साहूकार से खार खाता था, पर इस समय कुछ और ही सोच रहा था।

'मुझे उससे मिलना ही चाहिए।' निर्णय करके वह रवाना हो गया।

हवेली के बाहर पहुँच कर उसने आवाज लगाई—

'सामंत जी! ओ भाई सामंत जी!!'

सामंत के अनुचर ने दत्ता को बाहर खड़े देखा तो उल्टे कदमों से लौट पड़ा।

'मालिक, बाहर दत्ता खड़ा है।'

'क्या काम है उसे? जा, बुला ला।'

दत्ता ने अनुचर के पीछे पीछे कमरे में प्रवेश किया। सामंत कुछ न कहकर केवल उसे घूरता रहा।

'मुझे दु ख है।'

'बैठो—कैसा दु ख ?' सामत ने औपचारिकता निभाई।

'दरअसल दुखी तो मैं खुद भी हूँ।' दत्ता दबे स्वर मे बोला।

मेरे पास क्यो आए हो ?'

'आप देख रह हैं, हमारे विरुद्ध सगठित रूप से षडयन्त्र रचा जा रहा है। ऐसी स्थिति मे क्या हम एक नही होना चाहिए ?'

सामत को विचारो मे डूबा देख, दत्ता पुन बोला—

'शत्रुता तो चलती रहती है, पर अस्तित्व को रक्षार्थ मित्रता कर लेने मे लाभ है। आपका गोरो पर अच्छा प्रभाव है। मैं समझता हू कि पूना चलकर गोरे अधिकारियो से मिल लेना बेहतर रहेगा।'

' धन गया इसका कोई गम नही है, किन्तु जो टटपुजिए लोग हमेशा हमारे सामने नजर झुकाए रहते थे, वे शेर हो रहे हैं—यह सहन नही होता।' आक्रोशपूर्ण स्वर मे सामत बोला।

'यह हमारी बरबादी की शुरूआत है। जिनके बाप दादा हमारे गुलाम रहे हैं व ही आज हमारे विरुद्ध खडे हो रह हैं। इससे अधिक दुर्भाग्य और क्या होगा ?

'हम जाकर मिल तो लेते हैं, पर अगर उन्होन सहायता करने स इन्कार कर दिय तो ?'

इन्कार का प्रश्न ही नहीं उठता। उनका स्वार्थ हमसे जुडा हुआ है और हमारा उनसे। उनकी मदद मिलत ही हम इन सिरफिरो को बुरी तरह कुचल देंगे।'

'ठीक है।

अगले दिन दोनो रवाना हो गए। इधर वासुदेव की गतिविधियां क्रमश बढती जा रही थी। दौलत और कृष्णजी का अभियान भी पूर्ण यौवन पर था। वासुदेव से उन्हे निरन्तर आर्थिक सहयोग मिल रहा था। दोनो का दल क्रमिक वृद्धि पर था। नए हथियार खरीदे जा रहे थे। गाँव के गाँव बागी होत जा रहे थे। पूना और बम्बई म अग्रेज अधिकारियो के पास लगातार सूचनाएँ पहुँच रही थी। सशस्त्र बल भेजे जाने लगे, पर वे बढते दायरे को सीमित नहीं कर पाए।

को छू नहीं पाई। किसानों पर दमन चक्र चलाया गया, पर किसान दबने के बजाय और अधिक भड़कते गए। धीरे धीरे किसान विद्रोह अहमदनगर तक फैल गया। लगभग ६७ गांव बागी हो चुके थे।

किसानों का मनोबल बनाए रखने के लिए वासुदेव गांवों के चक्कर लगाता। उनकी आर्थिक मदद करता। इसी दौरान, एक रात को उसने अपने साथियों के साथ बैठकर योजना बनाई।

हमारे अभियान में निकट का कौन सा गांव अछूता रह गया है?' वासुदेव ने पूछा।

धामारी बचा है। विश्वासराव ने उत्तर दिया।

उसे भी मुक्त करवा लिया जाए?'

सुना है वहां पुलिस फोर्स काफी है। उन्हें भी तो पता है कि अब हमारा निशाना यह गांव बनेगा। यशवंत बोला।

दौलत का क्या जवाब आया है?'

उन्होंने भी यही लिखा है कि वे धामारी को मुक्त करवाने में सफल नहीं हुए।'

उन्हें संदेश भिजवाओ कि वे अपने विश्वस्त साथियों को लेकर यहीं आ जाएं। शेष लोगों को वापस अपने अपने गांव जाने को कह दिया जाए। मैं समझता हूँ कि अब उन्हें अनुभव हो गया है। वे अपने-अपने गांवों में जाकर ग्रामीणों का उत्साह बढ़ाएं।

यह रणनीति ठीक रहेगी। विश्वासराव ने अपना विचार व्यक्त किया।

आधी रात के बाद तैयार रहना।'

कहाँ चलना है? विश्वासराव ने पूछा।

'धामारी गांव के आस-पास चलकर जानकारी लेनी है।'

'ठीक है।'

ठीक आधी रात के कुछ उपरांत, वे अपनी शरणस्थली से लगभग एक मील दूर आए थे कि एकाएक एक आकृति उन्हें कुछ दूर खड़ी नजर आई। विश्वासराव ने अपनी बन्दूक की नली सीधी की ही थी कि एकाएक वासुदेव बोल पड़ा—

'अरे! यह तो बाबा हैं। बाबा इस समय?'

निकट पहुँचते ही बाबा का स्वर सुनाई दिया—

'मैं तुमसे ही मिलने आ रहा था।'

'आओ।' निकट की एक चट्टान की ओर बाबा ने इशारा किया। वासुदेव और विश्वासराव बाबा के साथ चट्टान पर बैठ गए।

'तुमने बड़ा अच्छा खेल खेला। अंग्रेजों में दहशत फैल चुकी है। किसानों में जोश है। इस समय धामारी जा रहे हो क्या ?'

'इस गाँव को मुक्त करवाना जरूरी है। सुना है, किसान काफी अत्याचार सह रहे हैं। साहूकार तो मुझे खुली चुनौती दे रहा है।'

'भावावेश में उठाया गया हर कदम गलत पड़ता है। तुम जानते हो, वहाँ पुलिस-बल पड़ा हुआ है। सुना है पूना से घुड़सवार पलटन और तोपखाना रवाना हो चुका है। मेरी राय है कि तुम्हें और तुम्हारे दल को कुछ दिनों के लिए निष्क्रिय हो जाना चाहिए।'

'मेरा एक एक साथी प्राणोत्सर्ग के लिए तयार है। सेना के बल पर गोरे कब तक भारतीयों को दबाकर रख सकेंगे ? पूरा रामोशी कबीला मेरे साथ है।'

'अभी समय नहीं आया है। मैं यही बताने के लिए तुमसे मिलना चाहता था।'

'चलिए, आपको अपने ठिकाने पर ले चलूं।' वासुदेव बोला।

'इस समय नहीं, फिर कभी। जाओ वापस लौट जाओ।

वसुदेव बाबा की आज्ञा नहीं टाल सका। वापस ठिकाने पर पहुंच कर उसे शेष रात नींद नहीं आई। विचारों का मंथन चलता रहा। प्रात पूजा-कर्म से निवट कर, वह जब साथियों के बीच में आया, तो प्रसन्नचित्त था।

'आज शिवरात्रि है।'

जी। पास बैठे विश्वासराव ने अधर हिलाए।

'शिवरात्रि कभी अशुभ नहीं हो सकती। हम आज रात को धामारी को मुक्त करवाएँगे। वासुदेव ने अपना निर्णय सुनाया। दिन भर योजना बनती रही, पर हर बार विश्वासराव असंतुष्ट नजर आता था। आखिर झुंझलाकर वासुदेव बोला—'तुम चाहते क्या हो ?'

'आप गाँव में जाकर क्या करेंगे ?'

'क्या मतलब ?'

'मैं चार साथियों के साथ दिन ढलने से पहले ही धामारी मे घुस जाऊंगा। सारा काम मुझ पर छोड दीजिए। आप तो इतना काम करिएगा कि सकटकाल के लिए गाँव की सीमा पर खडे रहिएगा। अगर आपको फायर की आवाज सुनाई दे, तो आप गाँव पर धावा बोल दीजिएगा।'

वासुदेव समझ गया कि विश्वासराव उसे खतरे मे नही डालना चाहता।

'तुम्हारे साथ गए साथियो का अगर अहित हुआ, तो मैं जीवन भर खुद को क्षमा नही कर पाऊँगा।'

'शिवरात्रि कभी अशुभ हो सकती है ?' विश्वासराव मुस्कराया।

खैर ! तुम्हारी इच्छा।' वासुदेव ने समर्पण कर दिया।

विश्वासराव ने चार साथी चुने। उसने विचार विमर्श किया। दोपहर ढलते ही व अपने अभियान पर निकल पड़े। अधाधुध घोड़े दौड़ाते, दिन ढलने से पहले ही वे धामारी गाव जा पहुँचे। विश्वासराव के एक साथी के मित्र के यहाँ वे पहुँचे। गाँव मे एक पुलिस टुकडी ठहरी हुई थी। सूचना मिलते ही वे आ पहुँचे। उन दिनो पुलिस वालो का रौब ही कुछ और था।

'इन्हें अपनी मित्रता के बारे मे कुछ नही बताना, अन्यथा बाद मे ये तग करेंगे।' विश्वासराव ने साथी के मित्र से कहा।

'अरे ! बाहर आओ।' एक पुलिस वाला चिल्लाया।

विश्वासराव साथियो सहित बाहर आ गया। पुलिस वाले ने रौब गाँठा—

'कौन हो तुम ?'

'हुजूर, वासुदेव के सताए हुए हैं।' विश्वासराव बोला।

'वासुदेव !!' पुलिसवाला चौंका।

'पिछले सप्ताह उसने हमारा गाँव लूटा। मेरे बच्चे की हत्या कर दी। मैं जब तक इसका बदला नहीं ले लूँगा, चैन मे नहीं बठूंगा। ये चारो मेरे साथी हैं। अँधेरा हो रहा था सो इस घर मे शरण लेने की सोची। वैसे हमे सूचना मिली है कि यह कुछ देर पहले इधर से गुजरा है। खैर ! जाएगा कहाँ ?'

'वाह रे ! तीसमार खाँ—बिना हथियार तुम उससे मुकाबला करोगे, जो

इतनी सारी पुलिस को नाकों चने चबवा रहा है। हा हा हा' पुलिस वाले ने उसकी खिल्ली उड़ाई। दूसरे पुलिस वाले ने सलाह दी—

'रात को आराम करके सुबह वापस लौट जा। क्या प्राण देता है?'

'हुजूर मैंने सुना है उसके सिर के लिए लाट साहब ने इनाम लगा रखा है। हमारे पास बन्दूकें भी हैं।' विश्वासराव निःसंकोच बोला।

'अबे! साले—बन्दूकों से क्या होगा? तोप लेकर आओ। चल यार, पागल पल्ले पड़े हैं।' पुलिस वाले ने अपने साथी की बाँह पकड़कर खींचते हुए कहा। पुलिस वाले चले गए। जैसे ही वे एकांत में पहुँचे, उन्होंने आपस में बातचीत शुरू की।

'यार, इनकी बातों में दम नजर आता है। उसे यह पता लग गया होगा कि यहाँ तो दाल गलेगी नहीं सो आगे के किसी गाँव में धावा मारने गया होगा। तुम कहो तो पीछा करें। हजारों रुपये का सवाल है।'

'कोतवाल साहब से पूछना पड़ेगा।'

उन्होंने जाकर सारी बात अपने अफसर को बताई। अफसर ने आदेश दिया—

'उन्हें यहाँ लेकर आओ।'

पुलिस वाले विश्वासराव को बुला लाए।

'क्यों रे! तुम्हें कैसे पता लगा कि वासुदेव इधर से गुजरा है।'

'हुजूर हमारे मुखबिर ने बताया है।' नम्र स्वर में विश्वासराव बोला।

'तुम भी मुखबिर रखते हो?'

'हुजूर उसने मेरे कलेजे के टुकड़े को मेरी आँखों के सामने मारा है। उसके शरीर से बहता हुआ खून—ओह! वह दृश्य मैं कैसे भूल सकता हूँ। मैं जब तक बदला नहीं ले लूँगा। चैन से नहीं बैठूँगा। मैंने किराए के आदमी उसकी टोह में लगा रखे हैं। उन्हीं से मुझे पता लगा।'

कोतवाल वासुदेव की लच्छेदार भाषा के बहाव में बह गया। कुछ देर विचार कर वह बोला—

'जाओ—लौट जाओ। वह तुम्हारे बस का नहीं है। सुबह तुम यहाँ नजर आने चाहिएँ। समझे।' विश्वास लौट आया। काफी देर बाद उसने अपने साथी

के मित्र को कहा—

'आप जानते हैं पुलिस वालो ने पडाव कहा डाल रखा है ?'

'जी, साहूकार के घर के निकट ही ठहरे हैं।'

आप जाकर यह पता कर सकते हैं कि इस समय वहाँ कितने पुलिस वाले हैं ?'

'अभी जाकर पता कर आता हूँ।'

कुछ ही देर मे उसने आकर सूचना दी कि केवल दो हैं। शेष वासुदेव की ढूढ मे गए हैं।

'मुझे यही आशा थी। हम जा रहे हैं। आपका धन्यवाद। कल आप गाँव वालो को सूचना दे देना कि अब वे साहूकार के कर्जदार नही रहे हैं। उससे दबने की कोई जरूरत नही है।'

अपने साथियो को लेकर वह साहूकार की हवेली के पास आया।

'तुम दोनो पुलिस के सिपाहियो को दबोच लो। उनकी बन्दूको पर कब्जा करना मत भूलना।' अपने साथियो को उसने निर्देश दिया और खुद आगे बढ कर सेठ की हवेली का द्वार खटखटाया।

'कौन है ?' अन्दर से आवाज आई।

'कोतवाल साहब हैं।' विश्वासराव ने भारी स्वर मे कहा।

हवेली का द्वार खुल गया। विश्वासराव ने एक साथी ने दरवाजा खोलने वाले के सीने पर बन्दूक की नली रख दी। उनके सौभाग्य से वह साहूकार ही था।

'कौन हो ? क्या करते हो ?' साहूकार हडबडाकर बोला।

'आज तक जो करते आए हैं। वही कर रहे हैं। रुपया और कर्ज के कागजात चाहिएँ।

सेठ सीने पर रखी बन्दूक की नली की परवाह न करके, मुडकर अन्दर की ओर भागा। वासुदेव ने भागते साहूकार के कधे पर बन्दूक के बट से प्रहार किया।

इसके सारे परिवार को एकत्रित कर लो। सभी को एक साथ खत्म करना है।' विश्वासराव ने घायल साहूकार के एक लात जमाई। कुछ ही देर में सारे परिवार के सदस्यो को एक पक्ति में लाकर खडा कर दिया गया।

'हमारे पास समय बहुत कम है। परिवार को जीवित रखना चाहते हो, तो किसानो के कर्ज के कागजात और जमापूंजी कहाँ रखी है, फौरन बताओ।' विश्वासराव तीव्र स्वर मे बोला।

साहूकार ने अवश और असहाय दृष्टि से परिवार के सदस्यो की ओर ताका। परिवार के सदस्यो की दीन दृष्टि उससे सहन नही हो पाई।

'चलो।' विश्वासराव ने उसकी पीठ पर बन्दूक की नली लगा दी।

निस्सहाय साहूकार चल पडा। विश्वासराव को उसकी तिजोरी से पूंजी समेटने मे अधिक देर नही लगी। कर्ज के कागजो का बडल उठाकर वह हवेली से बाहर लाया और उन पर आग लगा दी और जोर से चिल्लाया—

धामारी के किसानो, सुन लो अब तुम साहूकार के कर्ज से मुक्त हो। जिन कागजो के बल पर तुम बंधे थे उन्हें हमने जला दिया है।'

आस-पडोस के किसानो ने जलते कागज देखे। विश्वासराव ने साथियों से कहा— चलो।'

हवेली का द्वार बाहर से बन्द कर दिया गया। सभी घोडो पर चढकर छूमतर हो लिए। गाँव की सीमा पर उन्हें दल सहित वासुदेव मिल गया।

'काम हो गया।' विश्वासराव ने वासुदेव के बराबर घोडा लाते हुए कहा।

'शाबास। कहते हुए वासुदेव और पूरा दल अपने ठिकाने की ओर रवाना हो गया। प्रात होते-होते किसानो को अपनी मुक्ति का अहसास हो गया। पुलिस वाले बौखलाए हुए थे। उन लोगो ने ग्रामीणो से पूछ ताछ करनी चाही, पर उन्हें कोई सहयोग नही मिला। अगले दिन अग्रेज पुलिस अधिकारी मिल ने पहुँचकर भारतीय पुलिस सिपाहियो की धुनाई की और जुगल को आदेश दिया—

टोम इन कुटनो को लेकर उनको सच करो। हरी अप, आल यू डम स्वाइन।'

जुगल को गुस्सा तो बहुत आया, पर वह पी गया। वह कपित स्वर मे बोला—

'हुजूर हम डर लगता है।'

'ओह! ' गोरे अफसर ने भद्दी गाली निकाली।

'कम यू ब्लॉडी लडी फौलो मी।' गालियाँ निकालता हुआ वह आगे हो

लिया।

'तुम यहीं ठहरो।' तीन चार सिपाहियों को जुगल ने इशारा किया और शेष को लेकर गोरे अफसर के पीछे हो लिया।

'हरामजादा, साला बहादुर बनता है।' जुगल बड़बड़ाया।

'दूर से बन्दर नजर आता है।' पुलिस का एक अन्य सिपाही बोला।

'गधे की औलाद है।'

प्रत्येक अपने अपने मन का गुब्बार निकाल रहा था। गोरे अफसर के पीछे-पीछे वे दिन भर भटकते रहे। मार्ग में जो भी गाँव पड़ा, उसके निवासियों से पूछ-ताछ की गई पर उन्हें कोई सहयोग नहीं मिला। साहूकार और जमींदारों ने जरूर पलक पाँवड़े बिछाकर उनकी आवभगत की। सह्याद्रि के पहाड़ वासुदेव की रक्षा कर रहे थे।

दिन ढल रहा था। पैरों को घसीटते हुए पुलिस के सिपाही निकट के गाँव से उठते हुए धुएँ के बादलों को लक्ष्य बनाकर चल रहे थे कि एकाएक मिल की नजर एक साधु पर पड़ी। वह तेजी से गाँव की ओर बढ़ रहा था। मिल को शक हुआ, क्योंकि वासुदेव भी साधु के वेश में रहता था।

'ऐ हाल्ट, मिल चिल्लाया। जुगल सहित सभी सिपाही चौकन्ने हो गए। साधु ने मिल के स्वर को सुनकर कदम और तेज कर लिए। मिल का शक दृढ़ हुआ। उसने बन्दूक सीधी की और गोली चला दी। जुगल सहित सभी अचम्भित थे। जुगल के पैर, मानो मन-मन भर के हो गए थे। अगर वह वासुदेव हुआ! मिल भागता हुआ साधु के पास पहुँचा। उसे हिलाया डुलाया। गोली छाती के आर पार हो गई थी। पीछे से आता पुलिस दल भी वहाँ पहुँच गया था। जुगल ने सहमती दृष्टि साधु के चेहरे पर डाली।

'ओह! बाबा।' उसके मुँह से निकला।

'टोम इसको जानटा हाय?' मिल ने पूछा।

'नहीं, हम साधुओं को 'बाबा' कहते हैं। आपको इन्हें गोली नहीं मारनी थी।'

'डॉंट सजैस्ट।' मिल ने आँखें तरेरीं।

'हम साधुओं को पवित्र मानते हैं।' जुगल पुनः बोला।

'शट अप चलो, आगे बढो।'

'हम मृत शरीर का सम्मान करते हैं। इस शरीर को छोडकर आगे नहीं बढ सकते।'

उनमे बहस चल ही रही थी कि गाँव की ओर आने वाले मार्ग पर की छोटी सी पहाड़ी पर कुछ व्यक्ति नजर आए। मिल और उसकी टुकडी सभल पाती कि उधर से गोलियों की वर्षा होने लगी।

'टेक पोजीशन एण्ड स्टार्ट फायर' दोनो ओर से गोलियाँ चल रही थीं। सूर्य की अन्तिम किरणें भी विदा लेने को थी। मिल ने गोलियाँ चलाने के लिए मना कर दिया। दोनो तरफ शाति थी। सामरिक दृष्टि से मिल की स्थिति खतरनाक थी। वे पहाडी के नीचे थे। अगर इन्हें साधारण सी आड नही मिलती, तो अभी तक य ठिकाने से लग चुके होते। मिल अभी मोर्चेबन्दी की सोच रहा था कि पहाडी के ऊपर एक आकृति उभरी। जुगल ने देखा कि वह भगवा वस्त्रधारी है। उसका माथा ठनका। मिल के साथ वाली टुकडी की बन्दूकों ने निशाना साधा। मिल की बन्दूक से पहली गोली निकली और साथ ही स्वर गूँजा 'फायर।' उधर से भी धुन गोलीबारी शुरू हो गई। जुगल की टुकडी मिल से कुछ पीछे थी। मिल ने उन्हें दाहिनी ओर से आगे बढने का सकेत किया और खुद बाँई ओर को बढा। एक स्थान पर उसकी टुकडी रुक गई। आगे दूसरी ओट लेने के लिए उन्हें खुले म आना पड रहा था। रेंग कर वहाँ पहुचने म समय लगता, इस लिए मिल ने फुर्ती से भागकर वहाँ पहुँचने का निर्णय लिया। पहला सिपाही तीर की तरह निकला। उधर पहाडी के ऊपर से गोलियो की बौछार आई। सिपाही सौभाग्यशाली रहा, वह बच गया। जुगल की टुकडी एस स्थान पर पहुँच गई थी, जहाँ से वे सामने पहाडी पर फायर करने वालो पर अच्छा निशाना साध सकते थे। मिल ने उन्हे फायर करने का इशारा किया। इधर से फायर हुए, उधर मिल ने एक और सिपाही को ओट की ओर दौडाया। अन्त में मिल निकला, पर दुर्भाग्य ने उसका काम तमाम कर दिया।

अधेरा हो चुका था। दोनो ओर से गोलियो का आदान प्रदान रुक गया। जुगल अपनी टुकडी के पास आ गया।

'अब क्या करें?' पुलिस के एक सिपाही ने पूछा। वरिष्ठता के हिसाब से अब

जुगल उनका नायक था। उसने आदेश दिया—

'बाबा की लाश उठा कर यहाँ ले आओ।'

कुछ ही देर मे बाबा की लाश लाकर मिल के मृत शरीर के पास रख दी गई।

'हम गाँव की ओर जाते हैं। पाँच आदमी यहीं रहेंगे।'

जुगल अपनी टुकड़ी को लेकर गाव की ओर बढा। वह बिल्ली की सी सतर्कता से आगे बढ रहा था। गाँव निकट आता जा रहा था। उसने उस पहाड़ी पर दृष्टि डाली। पहाड़ी की ढलान पर ही गाँव बसा हुआ था। वह समझ गया कि गोलियाँ चलाने वाले लोग गाँव मे रहे होंगे। बाबा शायद उन्हें सचेत करना चाहता था। गोली चली बाबा मारा गया गोली की आवाज सुनकर, वे लोग पहाड़ी के ऊपर आकर गोलियाँ बरसाने लगे। अब या तो वे गाँव मे ही होंगे या सह्याद्रि की पहाड़ियों मे गहरे धंस गए होंगे। गाव मे प्रवेश करते ही जुगल बोला—

सावधान रहना। हर कदम पर मौत है। किसी भी घर से गोलियो की बाढ आ सकती है। अगर वे गाँव मे हुए तो निश्चित रूप मे हमारी ताक मे होंगे।'

पहले घर का द्वार उन्होंने खटखटाया। एक पुरुष ने द्वार खोला।

घर मे जितने भी पुरुष हो बाहर आ जाओ।'

'हमारा क्या कसूर है?' पुरुष ने साहस से कहा।

हम पुलिस के सिपाही है। हम पर गोलियाँ चलाई गई हैं। हमे लगता है, गोलियाँ चलाने वाले यहीं छिप हैं। हम हर घर की तलाशी लेंगे। चुपचाप बाहर निकल आओ।' जुगल ने प्रश्नकर्ता को धमकाया।

घर से चार पुरुष बाहर आ गए। वे भय से काँप रहे थे।

'जाओ अन्दर देखो कोई और तो नहीं है।' जुगल ने दो सिपाहियों की ओर इशारा करते हुए कहा। थोड़ी ही देर में वे बाहर आ गए। लगभग आठ घरों की तलाशी हो चुकी थी कि एकाएक कड़कती आवाज आई—

अपने हथियार फेंक दो। तुम चारो ओर मे घिरे हुए हो।'

'अरे जा ऊपर आकाश तो बचा है।' जुगल ऊँचे स्वर मे बोला। प्रत्युत्तर मे स्वर उभरा—

'अरे ! जुगल।' भगवा वस्त्रधारी, बढ़ी हुई दाढ़ी, हाथ में बन्दूक लि वेखौफ आकर जुगल से लिपट गया। जुगल ने उसकी पीठ थपथपाई औ बोला—

'मेरे दोस्त हर काम स्वत ही '

'और स्वाभाविक ढग से होता है।' हँसते हुए वासुदेव ने कथन पूरा किया।

'यह है—वासुदेव, देख लो। मैंने तुमसे कहा था कि उससे मिलवाऊँगा।'

जुगल ने गर्वित स्वर में अपने साथियों से कहा। गाँव वाले भी धीरे धी एकत्रित हो रहे थ।

वासु दो लाशें पड़ी हैं, उनकी व्यवस्था करनी है।' जुगल बोला।

'दो लाशें !'

'हा, एक तो बाबा की है। हमारे अफसर ने शायद तुम्हारे भ्रम म उ गोली मार दी। दूसरी लाश हमारे अफसर की है। वह तुम्हारी गोलीबारी म मार गया।'

'कौन बाबा ?'

'अपने वाला।'

'ओह ! भगवान। उन्होंने हमारे लिए प्राण दे दिए।'

वासुदेव के साथी दोनो लाशो को लेकर आ गए। रात भर वासुदेव औ जुगल बातें करते रहे। दूसरे दिन बाबा के मृत शरीर की सम्मानपूर्वक अन्त्येष्टि कर दी गई।

'शहीद होना अपने आप म गौरव की बात है। देश के लिए प्राण देने से बड़ा पुण्य और कोई नही है। वासुदेव भारी स्वर म बोला।

जुगल ने मिल के मृत शरीर को मुख्यालय ले जाने का आदेश दिया। करीब आधे से ज्यादा पुलिस वाले वासुदेव से इतने प्रभावित हुए कि वे उसके साथ शामिल होने की हठ करने लगे। वासुदेव ने नम्रता से उन्हें समझाया।

'मैं नही चाहता कि आप और आपके परिवार सकट म पड़े। पुलिस महकमे में भी मेरी पैठ हो सके, इसलिए वहाँ भी मुझे आप जसे दोस्त चाहिए।'

वे मान गए। हा जाते समय अपने हथियार वासुदेव को सौंप गए। जुगल ने भी अन्त मे विदा ली। वासुदेव मुस्कराकर बोला—

'अब तू अकेला है एक बात कहनी है।'

'कहो।'

'मैंने मिल की लाश देखी थी।'

'इसमें मैं क्या कर सकता हूं ? मैंने तो उसे कहा नहीं कि तू लाश में बदल जा।'

'उसकी पीठ में गोली लगी थी।'

'छोड़ यार, हर काम स्वत ही और स्वाभाविक ढंग से होता है।'

हाथ हिलाता हुआ, जुगल चला गया। मिल की लाश जब मुख्यालय पहुंची तो हड़कम्प मच गया। वासुदेव के सिर के लिए निर्धारित की गई रकम को दुगुना कर दिया गया। वासुदेव के पास जब यह सूचना पहुँची तो वह मुस्करा कर बोला— मेरा महत्त्व बढ़ रहा है।'

'मूर्ख हैं—इस प्रकार देशभक्त समाप्त नहीं होते।' विश्वासराव बोला।

'चलो, वापस अपने ठिकाने पर चलो। यहां अब किसी समय भी बड़े पैमाने पर वे धावा बोल सकते हैं। वासुदेव ने साथियों को चलने का इशारा किया। जब वे अपनी गुफा में पहुँचे, तो दौलत और कृष्णजी को अपने चार विश्वस्त साथियों के साथ प्रतीक्षा करते हुए पाया। वासुदेव ने उन्हें धामारी की मुक्ति की खबर दी और साथ ही बाबा के निधन की।

'जुगल अभी मिला था।' वासुदेव ने सारी घटना सुनाई। कुछ देर आराम करने के उपरान्त उसने साथियों को एकत्रित किया।

अब हमें आगे क्या करना है, सुनो। पूना से करीब-करीब सारी पुलिस और सेना मेरी तलाश में निकली हुई है। मौका अच्छा है। वे सह्याद्रि की पहाड़ियों में भटक रहे हैं। हमें कोंकण में कोई बड़ा हाथ मारना चाहिए।

'अंग्रेजों की तो नाक ही कट जाएगी।' दौलत बोला।

'अभी भी उनकी नाक बाकी है क्या ? किसान खुले आम कह रहे हैं कि वे सरकार को लगान नहीं देंगे। हम उन्हें नाकों चने चबवा रहे हैं। शेष क्या बचा है ?

तुम ठीक कह रहे हो, पर मैं एक काम और करना चाहता हूँ। पूना में मैं इश्तिहार लगाना चाहता हूँ कि जो व्यक्ति बम्बई के गवर्नर टेम्पिल का सिर काट

कर लाएगा, उसे मैं पाच सौ रुपए पुरस्कार दूगा।'

'अरे वाह! मैं तैयार हूँ। आप कहें, तो इश्तिहार मे टेम्पिल का सिर लपेट कर आपको भेंट कर सकता हू।'

'मक्खी के पर निकल रहे हैं।' दौलतराव बोला।

'आजमा कर देख लो।'

बेकार की बहस नही मैं क्या कह रहा हू, उस पर ध्यान दो। मैं और विश्वासराव पूना जाएग। दौलत और कृष्णजी कोकण जाएँगे। वे चाहे जितने साथियो को ले जाए, कुछ यहा की देखभाल के लिए रहेंगे।'

ठीक है।' सबने अपनी सहमति व्यक्त की।

'आज आराम करो सुबह हम अपने अपने अभियान पर निकलेंगे। साव धानी से योजना बना लो।' वासुदव ने कहा।

आराम तो क्या करना था। दौलत किस्से सुनाता रहा। साथी लोट पोट हो रहे थे। वासुदेव विश्वास दौलत तथा दो तीन अन्य विश्वस्त साथियो के साथ योजना बनाने म लगा हुआ था। विश्वासराव बोला—

'मैं समझता हूँ कि आपको पूना जाने की जरूरत नही है। आप जो काम करना चाहते है वह वामनजी आसानी से वहा करवा देंगे।'

'विश्वास, इस क्षणभगुर जीवन स इतना मोह नहीं होना चाहिए।'

यह मोह नही सावधानी है।'

मैं पूना जरूर जाऊगा। परिचिता से मिले महीनो हो गए हैं।'

विश्वासराव ने हथियार डाल दिए।

'तुम लोग कोकण से सफल होकर आ जा गे। मैं सगठन बढाना चाहता हू। मैं रुहेले और पठानो की सवतन भर्ती करना चाहता हूँ, ताकि पूरे देश म अग्रेजा से सघप छेडा जाए।'

'आपकी हर योजना मे हम आपके साथ हैं।' विश्वासराव और दौलत ने उसे यकीन दिलाया। प्रात दोनो दल अपने अपने अभियान पर प्रस्थान कर गए। विश्वासराव और वासुदेव ने वेषभूषा बदल रखी थी। पहली दृष्टि मे उन्ह पह चान पाना कठिन था। फिर भी वे पूण सचेत थे। उन्होने रात्रि म शहर मे प्रवेश करना उचित समझा, अत शहर के निकट के एक गाँव मे अपने परिचित के

यहा घोडे छोड दिए और पैदल रवाना हो गए। वामनराव स्वाध्याय मे लगा हुआ था। बाहर अंधेरा छाया हुआ था। द्वार पर खटखटाहट की आवाज हुई। वामनराव ने दरवाजा खोला। लालटेन की रोशनी वहा तक नही पहुच पा रही थी। द्वार पर खडो दो आकृतियो को देखकर वह असमजस मे पडा हुआ था कि स्वर उभरा—

किस कल्पना मे खाए हो भाई ? हम थके हुए हैं।'

'खूब छद्म रूप बनाया है ! आओ आओ।' वामनराव ने शीघ्रता से उन्हे अन्दर कर द्वार बन्द कर दिया। तीनो मित्र एक दूसरे के गले मिले।

'मुझे जुगल ने बताया था। वह मिल की लाश लेकर आया था। खूब हडकम्प मचा। अग्रेज बौखलाए हुए है।'

'अब उन लोगो की क्या योजना है ?' वासुदेव ने पूछा।

'सुनने म आ रहा है कि एक दो दिन मे किसानो को राहत देने के लिए नई नीति की घोषणा होने वाला है।

'चलो यह भी प्रत्यक्ष मरी जीत होगी।

'तुम्हारी तलाश म गोरी सरकार आकाश पाताल एक कर रही है। व्यायाम शाला बन्द हो गई है पर स्कूल जरूर चल रहा है। काका का स्वदेशी भडार' ठीक चल रहा है। वसे गोरी सरकार तुमसे सम्बंधित हर चीज पर दृष्टि रखे हुए है।'

डर तो नही रहे हो ?' वासुदेव मुस्कराया।

वामन और भय !' कहता हुआ वह उठकर अन्दर चला गया।

मेरा विचार है कि इश्तिहार आज ही लगा दें, ताकि सुबह से पूर्व वापस निकल जाएँ।' विष्णुमराव ने अपना विचार व्यक्त किया।

'ठीक है। वासुदेव ने सहमति प्रकट की। वामनराव ने आकर कहा।

'तुम लोग हाथ मुँह धो लो और भोजन करो।'

'रात रात म बहुत बडा काम निपटाना है।' वासुदेव वाला।

'हो जाएगा। चिन्ता मत करो।'

वामनराव ने दोनो को प्रेम से भोजन कराया और फिर पूछा—

'अब बताओ क्या काम है ?'

वासुदेव ने नाम बताया। वामनराव ने परामर्श दिया—

'इश्तिहार लिखकर तैयार कर लेते हैं। मुख्य स्थानों पर उन्हें चिपकवा दूंगा।'

'तुम प्रतिक्रिया देखना चाहोगे?'

'मैं नहीं चाहता कि मेरे परिचित संकट में पड़ें। हो सकता है पुलिस इधर-उधर छापे मारे।'

'वह तो वैसे भी पड़ेंगे ही तुम अपनी इच्छा बताओ, ताकि वैसा प्रबन्ध किया जाए।'

'प्रतिक्रिया देख तो क्या पाएंगे। पर हां, सुनना जरूर चाहूंगा।'

'इसमें खतरा है। अगर शहर की नाकेबन्दी कर ली गई तो न जाने कितने दिन यहीं फंसा रहना पड़ेगा।' विश्वासराव ने आशंका व्यक्त की।

'तुम क्या प्रबन्ध करोगे?' वासुदेव ने वामनराव से पूछा।

'मैं आप लोगों के ठहरने का प्रबन्ध ऐसे स्थान पर करूंगा जहां पुलिस के छापे का डर नहीं होगा। उस व्यक्ति का गोरों पर अच्छा प्रभाव है। मेरा बहुत ही विश्वासी है।'

'मैं इस पक्ष में नहीं हूं।' विश्वासराव ने पुनः विरोध किया।

'जाने दो, हम सवेरे से पहले यहां से निकल जाएंगे। प्रतिक्रिया देखने के लिए, मैं अपने आदमी भेजूंगा।' वासुदेव ने निर्णय दिया।

'तो इश्तिहार तैयार कर लें?' वामनराव ने पूछा।

'बिल्कुल तुम लेई तैयार करो। हम इश्तिहार तैयार करते हैं। तुम्हारा लिखना ठीक नहीं है।'

दोनों ने करीब पचास इश्तिहार तैयार किए। विश्वासराव बोला—

'अब इन्हें मुख्य स्थानों पर चिपकाना है।'

'यह काम मैं करवा दूंगा।'

'नहीं, यह हमें करना होगा। मैं नहीं चाहता कि कल तुम संकट में पड़ो। तुम्हारे आदमी कितने ही विश्वासी क्यों न हो, पर पुलिस की चपेट में आने के उपरान्त अगर बक गए तो?' वासुदेव बोला।

'आप ठीक कहते हैं।' विश्वासराव ने वासुदेव की बात का समर्थन किया।

में ढूढ़ रहे होंगे।' वासुदेव हँसा।

'पैदल जाओगे ?' वामनराव ने पूछा।

'तुम घोड़े तो रखते न्ही हो। हमारे घोड़े कोई दूर नही है। आध घण्टे की बात होगी। शहर स निकलत ही गाँव आएगा और हम छूमतर हो जाएँगे। जुगल से नहीं मिल पाया।'

'उसे तो उसी दिन, दूसर अफसर के साथ तुम्हारी तलाश मे भेज दिया गया है।'

अच्छा तो विदा फिर मिलेंग।

'अब की बार मिलोगे तो घोडे तैयार रहगे। कम स कम दो।

'ध यवाद।

विश्वासराव को साथ लकर वासुदेव लौट पड़ा। घने बीहड़ म, अपने चिर-परिचित रास्ता से गुजरते हुए वह शहर में लगाए गए इश्तिहारों के बारे मे, सोच रहा था।

'लोगो की भीड़ जुटी हुई होगी। व उचक उचक कर इश्तिहार पढ रहे होंगे। कल्पनाओं म डूबा वासुदव बोला।

'पुलिस अपना सर धुनेगी।' विश्वासराव मुस्कराया।

'सर धुनती रहे भले ही सह्याद्रि की पहाड़ियो और बीहडों म वासुदेव को पाना असभव है।

'शिवाजी ने भी यही रणनीति अपनाई होगी, तभी व औरगजेब को नाच नचाने मे सफल रहे थे।

'बिल्कुल।'

ठिकाने पहुचने पर पता लगा कि दौलतराव और कृष्णजी अभी तक वापस नहीं लौटे थे। दोनो ने भोजन किया और रात की थकान उतारने लग। दिन ढल रहा था। दूसरा दल अभी तक नही आया। वासुदेव व्यग्रता से इधर उधर घूम रहा था।

'अभी तक उन्हें लौट आना चाहिए था।'

'आ जाएँगे।' बिन्दो बोला।

'तुम दस साथियो को लेकर जाओ सावधानी से '

वासुदेव की दृष्टि दूर मोड़ पर लगी हुई थी। उसे कुछ लोग आते दिखाई दिए। दूर पहाड़ी के ऊपर सफेद वस्त्र लहराया। निगरानी करने वाले की ओर से यह इशारा था कि आने वाले मित्र हैं।

'आ गए।'

'वही लगते हैं।'

'हम सफल रहे।' दूर से ही कृष्णजी चिल्लाया।

'शाबाश बहुत अच्छे।' वासुदेव चिल्लाया।

'हम करीब एक लाख रुपए लाने में सफल हुए हैं।' दौलतराव ने घोड़े से उतरते हुए कहा। साथियों की सफलता की कहानी सुनने के उपरांत वासुदेव बोला—

हम भी काम में सफल रहे हैं।'

गोरी सरकार को खूब झटके लग रहे हैं।' दौलतराव बोला।

'यशवन्त, तुम प्रातः एक साथी को लेकर पूना जाओगे। विश्राम बाग बाड़ा और बुधवार बाड़ा की स्थिति को देख कर आना है। गोरों ने वहाँ की सुरक्षा-व्यवस्था कैसी रची हुई है शहर में क्या हलचल है? यह सब पता करना है।'

'मैं सुबह रवाना हो जाऊंगा।'

'तुम, दौलत और कृष्ण के साथ विश्राम बाग बाड़ा और बुधवार बाड़ा में चल रही अंग्रेजों की अदालत को राख करने की योजना बनाओ।' विश्वासराव ने कृष्णजी की ओर देखा और हँसते हुए बोला—

तुम्हें भूख लगी है?'

'यह भी कोई पूछने की बात है।'

'भोजन व्यवस्था हो रही है।' वासुदेव बोला।

'खाते सब हैं बदनाम मैं होता हूँ। क्या मैं भूखा रह कर काम नहीं कर सकता?'

'कर सकते हो क्यों नहीं कर सकते? मैं जुगल और तुम्हारा नाटक जानता हूँ। मुझे मालूम है तुम दो तीन दिन भूखे रह कर भी काम पर जुटे रहे।' वासुदेव ने गंभीर स्वर में कहा।

'मैं तो मजाक कर रहा था। भूख तो सभी को लगी हुई है।' विश्वासराव

ने कहा।

'हाँ, और ऐसे मे योजना क्या बनती ?' दौलतराव ने कहा।

'जल्दी नहीं है। भोजनोपरात आराम करो। कल शाति से बता लेना। मैं सुबह कुछ साथियों को लेकर हथियारो का प्रबंध करने जाऊँगा। इस अभियान के लिए पर्याप्त मात्रा मे हथियार और कारतूसों का प्रबंध करना होगा।'

अपना-अपना काय पूरा करने मे उन्हें दो दिन लग गए। तीसरे दिन प्रात वासुदेव ने साथिया को एकत्रित किया।

दो दिन अच्छे गुजरे। कुछ आराम भी मिल गया। अब हमें नए काम पर जुटना है। मैंने पर्याप्त हथियारो का प्रबंध कर लिया है। अंग्रेज सरकार हडबडाई हुई है। मैं चाहता हूँ कि हमारा यह अभियान पूर्ण भारत मे फैले, ताकि अंग्रेज अपना बोरिया बिस्तर समेट कर भाग खडे हो। सह्याद्रि की पहाडियो की ओर से हर अंग्रेज पुलिस आफीसर कतराने लगा है। यह आपकी जीत है। मैंने पिछली बार पूना मे इश्तिहार लगवाए थे कि जो भी व्यक्ति बम्बई के गवर्नर टेम्पिल का सर काट कर लाएगा उसे पाँच सौ रुपए पुरस्कार के दिए जाएँगे। दूसरी ओर आपने कोंकण म करिश्मा दिखाया। इन गतिविधियो की क्या प्रतिक्रिया हुई यशवंत से सुनिए।'

वासुदेव बैठ गया। यशवंत ने पूना का हाल बताना शुरू कर दिया—

'सबसे पहली प्रसन्नता की बात यह है कि अंग्रेजी शासन ने 'दक्षिण कृषक राहत अधिनियम बनाने की घोषणा की है। इस कानून के बन जाने से साहूकार और जमींदार किसानो का शोषण नही कर पाएँगे। इश्तिहार लगाने और कोंकण की घटना से अंग्रेज घबराए हुए हैं। पूना-बम्बई-क्षेत्र के ग्रामो म रहने वाले सभी अंग्रेजो और उनके परिवारो को सदेश भेजा गया है कि वे तत्काल पूना चले आयें, ताकि वासुदेव के हमले की चपेट म न आ सकें। पूना म लोग इन घटनाओं से बहुत खुश हैं। अंग्रेज अधिकारियों की हेकडी कम हुई है। वे भयभीत और शकित हैं।'

साथियों ने तालियाँ बजाई। वासुदेव उठ खडा हुआ।

'यह जीत हम सबकी है हमारे किसान भाइयों की है। आप सभी गाँवो

का सहयोग निरन्तर इसी प्रकार मिलता रहा, तो मैं विश्वास दिलाता हूँ कि हम अपने देश को आजाद करवा लेंगे। हम तक्लीफें भुगत रहे हैं, प्राणोत्सर्ग के लिए तत्पर हैं, ताकि हमारी आने वाली पीढ़ियाँ दासता की सजा न भुगतें। यह न कहें कि हमारे पूर्वजों ने इस बावत कुछ नहीं किया।'

'हम आपके साथ हैं।' समवेत स्वर गूँजा।

'विश्वास, योजना तयार है ?'

बिल्कुल तयार है।

'हम आज रात को पूना पर धावा बोलना है। अंग्रेजों की कचहरी को राख करके, यह व्यक्त करना है कि हम आपकी न्याय-प्रणाली पर कोई विश्वास नहीं है। आप अपने-अपने हथियारों का साज-सफाई कर लें।'

वासुदेव ने विश्वासराव और यश के साथ बैठ कर सारी योजना पर विचार-विमर्श किया।

यश का कहना है कि कचहरी पर कोई विशेष पहरा नहीं है। वासुदेव बोला।

'मैंने तीन दल बनाए हैं। पहला दल प्रहरियों को काबू में करेगा। दूसरा दल बाहर की स्थिति पर निगाह रखेगा। तीसरा दल अदालत के कागजातों को आग के हवाले करेगा। तीनों दलों में साथियों की संख्या बराबर होगी।'

'उनकी अधिकांश पुलिस तथा सेना तो हमारी तलाश में लगी हुई है। शेष कुछ अंग्रेजों और उनके परिवारों को पूना लाने में लगे हुए हैं। सुना है, अन्य स्थानों से पुलिस बल पूना मँगाने पर कारवाई चल रही है। लेकिन इस समय पूना में जितनी पुलिस है, वह हमारे मुकाबले बहुत कम है। लोगों की सहानुभूति हमारी ओर है ही। मेरा विचार है पहले और दूसरे दल के अनुपात में तीसरा दल बड़ा होना चाहिए, ताकि काम जल्दी और व्यापक रूप से हो सके।' यशवन्त ने अपने विचार प्रकट किए।

वासुदेव ने उसका समर्थन करते हुए कहा—

यश ठीक कह रहा है। दो साथियों को पहले रवाना कर दो। एक तो मिट्टी के तेल का प्रबन्ध करेगा। दूसरा, प्रहरियों को किसी बहाने, एक स्थान पर एकत्रित कर सके तो पहले दल का काम आसान हो जाएगा।'

'यशवन्त यह काम मैं तुम्हें सौंपता हूँ। एक साथी छाँट लो और रवाना हो जाओ।' विश्वासराव बोला।

'मैं तैयार हूँ।'

'हम सीधे कचहरी ही पहुँचेंगे।' वासुदेव ने कहा। यशवन्त उठ कर चला गया। वासुदेव भी उठकर बाहर आया। सभी लोग आपस में हँसी मजाक करते हुए अपने अपने हथियारों की जाँच परख में लगे हुए थे। भोजनोपरांत, विश्वासराव ने पाँच साथियों को छोड़कर, शेष समस्त दल को तीन भागों में बाँट दिया।

पहले दल का नायक कृष्णजी को बनाया गया। दूसरा दल वासुदेव और विश्वासराव को सौंपा गया। तीसरा दल दौलतराव के अधीन किया गया। पाँच साथियों को शरणस्थली पर ही रहना था।

ठीक समय पर सभी रवाना हुए। तीनों दलों को विभिन्न मार्गों से आकर शहर की सीमा पर निश्चित स्थान पर मिलना था। विश्वासराव ने अपना घोड़ा थपथपाया और जैसे ही उस पर चढ़ा कि वह भड़क गया।

'अरे बेटे, आज ही यह नखरे क्या?' उसने लगाम खींचकर, उसे पुचकारा कुछ ही देर में वह काबू में आ गया। वासुदेव काफी आगे निकल गया था विश्वासराव के निकट आते ही उसने पूछा—

क्या हो गया था ।'

'आज न जाने चढ़ते ही घोड़ा क्यों भड़क गया। मुझे गिरा ही देता, पर अब रास्ते पर आ गया है।'

विश्वास भरी मानो तो तुम चलकर क्या करोगे? मैं तो हूँ ही दोनों क्या करेंगे?

विश्वासराव ने अट्टहास किया।

'मैं आपकी आशंका समझता हूँ। ईश्वर हमारे साथ है।

पूरे रास्ते भर वासुदेव चुप रहा। वह न जाने किन खयालों में खोया हुआ था। मार्ग में कुछ देर विश्राम करके वे पुनः लक्ष्य की ओर बढ़े। अँधेरा हो चुका था। श्याम पक्ष होने के कारण निशीथ की छाया कुछ अधिक ही काली हो रही थी। निश्चित स्थान पर दोनों दल पहले ही पहुँच चुके थे। वासुदेव ने प्रश्न

किया—

'सब तयार हैं? ध्यान रखें, तूफान की तरह आना है। वापसी पर यहीं मिलेंगे, पर अगर परिस्थिति अनुकूल न हो, तो दल नायक अपने विवेक से किसी भी मार्ग से ठिकाने पर पहुँच सकते हैं। हाँ यह ध्यान अवश्य रखें कि बिखरें नहीं। कृष्ण तुम दाहिने तरफ से और दौलत बाईं ओर से तथा मैं बीच में से होकर कचहरी पहुंचेंगे। बिल्ली की तरह पहुँचना है।'

वासुदेव के निर्देशानुसार सभी अपने अपने दलों को लेकर, शहर में घुस गए। लोग चैन की नींद सो रहे थे। कृष्णजी अपने दल सहित कचहरी के निकट पहुँचा। सभी साथी सजग और सावधान थे। कृष्णजी के इशारे पर पाँच साथी घोड़ों से उतर कर, कचहरी के मुख्य फाटक पर आए। सभी ने बन्दूकें पीठ के पीछे कर रखी थीं।

'कौन है भाई, इस वक्त?' एक ओर से आवाज आई। कृष्णजी स्वर पहचान गया। यशवन्त था। कृष्णजी ने फाटक पर हाथ रख कर जरा सा जोर लगाया कि फाटक खुल गया। वह समझ गया कि यशवन्त ने सारा प्रबन्ध कर रखा है।

'इधर आ जाओ' कचहरी के प्रांगण के दाईं ओर से आवाज आई। कृष्णजी साथियों सहित उधर ही बढ़ा। पाँच-छः आदमी बैठे गपशप मार रहे थे। अपनी बन्दूकें उन्होंने निकट ही रखी हुई थीं।

'क्या है?' एक प्रहरी ने प्रश्न किया।

'रामकृष्ण का समाचार देना था। गाँव से आए हैं। कचहरी का पता बताया था।' कृष्णजी ने प्रत्युत्तर दिया।

'यहाँ न कोई राम है और न कृष्ण। यह यशवन्त भाई जरूर है नौकरी की तलाश में आज ही आया है।'

'सब यहीं हैं भाई, और इनमें रामकृष्ण कोई नहीं है।' यशवन्त बोला।

कृष्णजी इशारा समझ गया। उसके संकेत करते ही साथियों ने प्रहरियों को बन्दूकों पर कब्जा कर लिया।

'आ जाओ अन्दर।' कृष्णजी ऊँचे स्वर में बोला। बाहर जो [redacted] साथी थे, घोड़ों सहित अन्दर आ गए।

'आओ, दो तीन साथी मेरे साथ आओ।' यशवन्त कचहरी से निकल कर तेजी से एक ओर बढ़ा चला जा रहा था। कुछ दूर आकर एक विशाल वृक्ष की ओर इशारा करते हुए उसने कहा—

'माधव तेल के टीनो सहित वहाँ इन्तजार कर रहा है।'

वृक्ष की ओट में रखे मिट्टी के तेल के टीन उठा कर वे वापस कचहरी में आ गए। कृष्णजी ने साथियों की मदद से प्रहरियों को घेर रखा था। दौलतराव भी पहुँच गया। प्रहरी घबराए हुए थे। उनकी समझ में नहीं आ रहा था कि यह क्या हो रहा है।

'कचहरी की चाबियाँ कहाँ हैं?' दौलत ने प्रहरियों से प्रश्न किया, पर वे चुप रहे। दौलत पुनः बोला—

हमारी भारतीयों से कोई शत्रुता नहीं है। हम अंग्रेजों को सबक सिखाना चाहते हैं। चाबी दे दो, अन्यथा

एक प्रहरी ने चाबियों का गुच्छा दौलतराव को थमा दिया। एक एक दरवाजे को खोलकर उन्होंने सरकारी कागजात, फाइलों और दस्तावेजों पर मिट्टी का तेल डालना शुरू किया। उधर, वासुदेव ने भी पहुँच कर बाहर अपनी स्थिति सँभाल ली थी। अन्दर आग लगा दी गई। प्रहरियों के हाथ-पैर बाँध दिए गए थे।

'काम हो गया चलो वापस।' वे आते समय बिल्लियों की तरह आए थे, पर जाते समय घोड़ों की टापों से शहर गूंज रहा था। वे जिन रास्तों से आए थे, उन्हीं रास्तों से वापस हो लिए। वासुदेव और विश्वासराव घोड़ों पर अपने दल के पीछे थे। अभाग्यवश, उसी मार्ग पर सामने से अंग्रेज पुलिस-अधिकारी हॉग आ रहा था। इन्हें आते देख कर वह अपने दो सहयोगियों सहित एक मकान की आड़ में हो गया। वह रात को गश्त पर था और इतने घोड़ों को अंधाधुंध जाते देख कर हैरान था। उसने सोचा कि इनका पीछा करना बेकार है क्योंकि मात्र अपने दो सहयोगियों के साथ, इनसे उलझने में पार पाना मुश्किल है। अतिरिक्त बल लाने के लिए भी समय नहीं है। क्षण भर में उसने निर्णय ले लिया।

'फायर' तीनों ने एक साथ बन्दूकें चलाईं।

वासुदेव बच गया, पर विश्वासराव के कंधे में गोली घायल कर गई।

'पीछे मुड़ो गोली चलाने वाले बच के न जाने पाएँ।' वासुदेव चिल्लाया। गोलियों की आवाज से सारा इलाका काँप गया। हॉग और उसके दोनों सहयोगी, घोड़ों से सरपट भागते हुए, नौ दो ग्यारह हो गए।

'उनका पीछा बेकार है। शीघ्रता से निकल चलो।' विश्वासराव अपने कंधे को दबाए हुए चीखा। वासुदेव ने भी इस समय उनका पीछा करना बेकार समझा।

'तुम कहो तो वामनराव के यहाँ चलें।' वासुदेव बोला।

'नहीं नहीं।' इस समय यहाँ से निकलने की सोचिए। ऐसा न हो, हम खतरे में पड़ जाएँ। वे जरूर लौटेंगे।'

'चलो।' वासुदेव का स्वर गूंजा। घोड़े तूफानी गति से भाग चले। दोनों दल उनकी प्रतीक्षा कर रहे थे। काफी दूर निकल आने के उपरांत वासुदेव ने कहा—'विश्वास रुको।'

'नहीं, चलते रहिए अभी हम सुरक्षित नहीं हैं। गोली कंधे पर लगी है, कोई विशेष बात नहीं है।'

,अरे ! खून निकल रहा होगा।'

'नहीं नहीं। सब ठीक है।'

वे चलते रहे। विश्वासराव की आँखों के आगे अँधेरा सा छा रहा था। वासुदेव उसकी बगल में चल रहा था। उसे लगा कि विश्वासराव से घोड़ा नहीं संभल रहा है।

'रुको।' विश्वासराव के घोड़े की लगाम पकड़ते हुए वासुदेव बोला। वासुदेव घोड़े से उतरा और उसने सहारा देकर विश्वासराव को भी नीचे उतार लिया। सभी साथी भी रुक गए।

'क्या हुआ ?' दौलत, यशवन्त, कृष्णजी आदि ने एक साथ पूछा।

'वापस आते समय किसी ने पीछे से गोली चलाई थी। विश्वास के कंधे पर लगी है। लगता है काफी खून बहने के कारण कमजोरी महसूस कर रहा है।' वासुदेव बोला।

'कुछ ही दूर पर गाँव है, वहाँ वैद्य भी है।' कृष्णजी बोला।

'घोड़े पर बैठ पाओगे धीरे धीरे चलेंगे।' वासुदेव ने पूछा।

'हाँ।'

'आओ।' वासुदेव ने सहारा देकर उसे अपने घोड़े पर बिठाया। लगाम पकड़ कर, वह चल पड़ा।

'दौलत ध्यान रखना गिर न जाए। यशवन्त तुम साथियों को लेकर चलो।' वासुदेव बोला।

'मगर 'यशवन्त ने कुछ कहना चाहा।

'आठ-दस साथी हमारे साथ छोड़ दो।' वासुदेव पुन बोला। यशवन्त शेष साथियों को लेकर चला गया। गाँव में पहुँचकर, कृष्णजी ने एक घर का दरवाजा खटखटाया।

'कौन है?' अन्दर से आवाज आई।

'कृष्णजी।'

दरवाजा खुल गया। वासुदेव ने सहारा देकर विश्वासराव को उतारा।

'ठहरो। मैं लालटेन जला लूं।'

वृद्ध ने लालटेन जलाने के उपरांत कहा—

'आओ, अन्दर आ जाओ। क्या बात है?'

'हमारा एक साथी घायल हो गया है।' वासुदेव बोला।

वृद्ध ने लालटेन कृष्णजी को पकड़ा दी। रोशनी विश्वासराव पर पड़ी।

'ओह! इतना खून निकल गया तो भी होश में हो—अचम्भा है।'

विश्वासराव के कपड़े खून से तर-बतर हो रहे थे। वृद्ध ने घाव को देखा परखा।

'गोली तो शायद अन्दर नहीं होनी चाहिए।' वृद्ध ने कहा।

'आप देख लें।'

'मैं पानी गरम करवाता हूँ, घाव को साफ कर अच्छी तरह से देखूंगा। बूढ़ा हूँ न।'

थोड़ी सी देर में उसने गरम पानी, रुई और दवाइयों की पेटी आदि लाकर कमरे में रख दी। उन सबको खड़ा देखकर, वह बोला—

'इसे लिटा दो। हाँ हाँ इसे खाट पर लिटा दो।'

'खाट पर बिछे कपड़े खराब हो जाएँगे।' वासुदेव बोला।

'यह चिन्ता तो मुझे होनी चाहिए। क्या नाम है तुम्हारा?' बूढ़ा नाराजगी के स्वर मे बोला। विश्वासराव को खाट पर लिटाकर वासुदेव नम्र स्वर मे बोला—'बाबा, मेरा नाम वासुदेव है।'

'अरे!' वद्ध ने कृष्णजी के हाथ से लालटेन लेकर वासुदेव के चेहरे के आगे की। कुछ क्षण गौर से निहारने के उपरान्त, उसने लालटेन पुनः कृष्णजी को थमा दी और वासुदेव के चरणों पर झुक गया।

धन्य भाग है मेरे! मेरी कुटिया पवित्र हो गई।'

'अरे! बाबा क्या मुझे पाप का भागी बनाते हो?' वासुदेव ने उसे उठाया।

'भारत माँ के असली लाल तुम हो तुम। भाई लालटेन इधर करो।' कृष्णजी ने लालटेन, वैद्यजी और विश्वासराव के सम्मुख कर दी। वैद्यजी ने धीरे धीरे घाव साफ किया।

'क्या बुरी तरह छिला है। गोली ने बाहरी ही मार की है।'

मरहम लगाने के उपरांत वैद्यजी ने पट्टी बाँध दी।

'आपका धन्यवाद, चलो।' वासुदेव ने साथियों से कहा।

'अगर इन्हें ले जाने मे असुविधा हो तो यहीं छोड़ जाओ।' वद्ध बोला।

'हमारा जी नहीं मानता। वासुदेव ने संक्षिप्त उत्तर दिया। कृष्णजी और दौलत ने विश्वासराव को सहारा दिया और बाहर आ गए।

'अगर घोड़े पर चलने मे कष्ट महसूस करो, तो खाट ले लें। सुविधाजनक रहेगा।'

वासुदेव बोला—'नहीं, कोई विशेष तकलीफ नहीं है।'

साथियों के सहारा लेकर विश्वास घोड़े पर चढ़ गया।

यह मरहम लगाते रहना। बुखार हो जाए तो यह दवाई देते रहना।

वैद्यजी ने दवाइयाँ वासुदेव को पकड़ा दीं। वैद्यजी को पुनः धन्यवाद देकर वासुदेव साथियों के साथ अपने ठिकाने की ओर रवाना हो गया। ठिकाने पर पहुँचकर विश्वासराव को आराम से लिटा दिया गया। सभी साथी उसकी

तीमारदारी में लगे हुए थे। चार पाँच दिन हो गए, पर घाव भरने का नाम नहीं ले रहा था। बुखार भी निरंतर चल रहा था। विश्वासराव काफी कमजोर हो गया था। वासुदेव काफी चिंतित था।

'आप बेकार चिन्तित हो रहे हैं। घाव भरने में समय लगता है।' वासुदेव को उदास देख, विश्वासराव मुर्झाए स्वर में बोला।

'मैंने निश्चय किया है कि कल पूना जाकर डॉक्टर को पकड़ लाऊँगा।' दृढ़ स्वर में वासुदेव बोला किन्तु विश्वासराव ने प्रतिरोध करते हुए कहा—

'ऐसा करके, क्या आप सबका जीवन खतरे में डालना चाहते हैं?'

'तुम यहाँ चलने की स्थिति में नहीं हो ऐसे में विकल्प क्या है?'

'बुखार ही तो है हम चल सकते हैं। हाँ, समय अधिक लगेगा और फिर खतरा भी पूरा है।'

'खतरे की बात को मैं सँभाल लूँगा।'

'मैं दौलत और कृष्णजी को लेकर जाऊँगा। अधिक साथियों को साथ ले जाना ठीक नहीं रहेगा। वामनजी वहाँ हैं ही।'

'तुम व्यर्थ की हठ करते हो।'

वासुदेव ने साथियों से विचार विमर्श किया। अन्त में तय किया गया कि विश्वासराव की इच्छानुसार कार्य किया जाए। वे दिन ढलने पर रवाना हुए। साथियों ने भारी मन से उन्हें विदा किया। वासुदेव सामने नहीं आया। वे जब काफी आगे निकल गए तब वह बाहर आया और आँखों से ओझल होने तक उन्हें देखता रहा।

पूना में कचहरी क्या जली कि भारतीयों की शामत आ गई। खिसियानी बिल्ली खंभा नोचे वाली बात थी। अंग्रेजों को हर भारतीय अपनी मजाक उड़ाता नजर आता था, इसलिए दहशत फैलाने के लिए उन पर बेवजह अत्याचार किए जाते। ब्रिटिश पार्लियामेंट में इस अग्निकांड पर प्रश्न पूछे गए। वासुदेव फड़के अंग्रेजों के लिए भय का पर्याय बन गया। वामनराव गणेश वासुदेव जोशी (काका) और यहाँ तक कि महादेव गोविंद रानडे जो कि उस समय जज थे उन पर वासुदेव को मदद पहुँचाने का आरोप लगाया गया। प्रमाण था नहीं, इसलिए अंग्रेजी सरकार इनका कुछ नहीं बिगाड़ सकी। अंग्रेजी सर-

कार की पुलिस और सेना भी निस्सहाय थी। सह्याद्रि की पहाड़ियों म वासुदेव को तलाशते हुए, न जाने कितने अंग्रेज अफसर मारे गए। अब तो व उधर मुह करने म भी भय खाते थे। वे अपनी पराजय की खल्लाहट भारतीय सिपाहियों पर उतारते थे। ऐसी स्थिति मे जुगल बहुत प्रसन्न होता था। वह कई बार तो अंग्रेज अफसरा को खरी खरी सुना देता था—

'हम पर गुस्सा उतारने मे क्या होगा? चले हैं वासुदेव को पकडने, और उसका नाम सुनते ही सान पैंट गन्दी कर देते हैं।'—अफसर उसकी घुमावदार भाषा को समझ नही पाते थे। अधिकाश अधिकारी अपने-अपने परिवारो को लेकर पूना म एकत्रित हो गए थ। पुलिस भी पूना क आस-पास एकत्रित कर ली गई। अंग्रेजों को, वासुदेव को ढूढने की अपेक्षा अपनी सुरक्षा की चिन्ता अधिक थी।

समय अधिक लग गया, पर वे विश्वासराव को लेकर सुरक्षित पूना पहुच गए।

विश्वासराव बोला—'वामनराव के पास चलने की अपेक्षा, एकान्त म कोई कमरा ढूँढ लेना अच्छा रहेगा। मैं नही चाहता कि हमारे कारण वह सकट म पड़े।'

दौलतराव को भी उसकी बात जच गई। लोगो न यद्यपि कमरा देने मे आनाकानी की पर रुपयो ने काम बनवा दिया। चिकित्सक का भी प्रबन्ध हो गया। व मकानमालिक और चिकित्सक के सम्मुख सावधानी स बात करते और एक दूसरे का नाम नहीं लेते थे। घर के पीछे ही एक टूटा फूटा सा कमरा था जहाँ उन्होंने अपने घोडे बाँध रखे थ। उनके आगमन का पता परिचितो तक को नही था। तीन दिन बीत गए। विश्वासराव की हालत म सुधार होता नजर नही आ रहा था।

कचहरी अग्निकाड के बाद शहर म गुप्तचर सक्रिय थे। शहर मे प्राय हर नए आने वाले व्यक्ति पर नजर रखी जाती थी। ये लोग अभी तक तो बचे हुए थे, लेकिन दुर्भाग्य पूछकर नहीं आता। लोकेश टोह लेता हुआ उधर स निकल रहा था। गुप्तचर विभाग म उसने धाक जमा रखी थी। लालची और एक नम्बर का अंग्रेज-भक्त था। अपने आकाओ के हुक्म पर कुछ भी कर सकता था। काम,

हो रही थी।

'अरे हरखू !' उसने बाहर से आवाज लगाई। हरखू बाहर आया।

'अरे ! भाई कमरे में कौन आ गया। कोई रिश्तेदार हैं क्या ?'

'नहीं भाई, बीमार है बेचारा। कमरा माँगा, सो मैंने दे दिया।'

'पुण्य का काम है। कमरा तो मुझे भी चाहिए था। कमरे में कुछ सुधार भी किया है या वैसा ही टूटा फूटा रखा है ? कहते हुए उसने दरवाजा खोल दिया। टूटी-फूटी खाट पर विश्वासराव पड़ा था। दौलतराव और कृष्णजी बाहर गए हुए थे।

'अबे, बेचारे को अच्छी खाट तो देता। क्या नाम है भया तुम्हारा ? कहाँ से आए हो ?'

'मुरली ' विश्वासराव ने निःसंकोच होकर उत्तर दिया और गाँव का नाम भी बताया। लोकेश गहराई से कमरे का निरीक्षण कर रहा था।

अच्छा ! अच्छा !! आराम करो।' कहता हुआ वह चला गया।

'कौन था यह ?' विश्वासराव ने मकानमालिक से पूछा।

'पुलिस का कुत्ता था।' कहकर मकानमालिक चला गया। लोकेश गर्दन झुका कर गली में से निकल रहा था कि तेजी से आते दौलत और कृष्णजी पर उसकी नजर पड़ी। लोकेश का मस्तिष्क तेजी से काम कर रहा था। चलते चलते जिस बात को वह याद करने की कोशिश कर रहा था वह उसे याद हो आई।

'मुरली नहीं वह विश्वासराव था।'

'ओफ ! वासुदेव का दाहिना हाथ। पदोन्नति रुपया वाहवाही ' उसकी आँखों के आगे सुनहरा भविष्य तैर रहा था और कदम तेजी से कोतवाली की ओर बढ़ रहे थे। 'इसे कई बार व्यायामशाला में वासुदेव के साथ देखा था

इधर, दौलतराव और कृष्णजी ने कमरे में प्रवेश किया। विश्वासराव उन्हें देखते ही बोला—

'अभी खुफिया पुलिस का एक आदमी आया था। मुझे याद पड़ता है कि उसे मैंने पहले भी कई बार सभाओं और व्यायामशाला में देखा है।'

'हमें जगह बदल लेनी चाहिए।' कृष्णजी बोला।

पूना में ये लोग हमें जमीन के नीचे भी ढूँढ निकालेंगे।' विश्वासराव बोला।

'तो फिर ?' दौलतराव बोला।

'एक ही रास्ता है।'

'क्या ?'

'तुम दोनों, जितनी जल्दी हो सके—यहाँ से निकल जाओ।' विश्वासराव ने कहा।

'ऐसा कैसे हो सकता है ?'

'तो तीनों मारे जाएँगे।'

'वापस चलें।' कृष्णजी ने कहा।

विश्वासराव के अधरों पर क्षीण मुस्कराहट तैर गई—

'बेकार है मेरे से चला जाएगा नहीं तुम भी साथ में फँस जाओगे। समय मत गँवाओ। बात मानो निकल जाओ।'

'यह संभव नहीं है। हम जगह बदल लेंगे। कई परिचित हैं।' दौलतराव बोला।

'ऐसे में परिचितों को फँसाओगे ? बड़े मूर्ख हो परिचित क्या मेरे नहीं हैं ?' विश्वासराव आवेश में बोला।

कृष्ण तुम बाहर नजर रखो।' दौलतराव बोला। उसने जल्दी-जल्दी सारा सामान समेटना शुरू किया।

'दौलत, मेरी बात मानो। मुझे, लाश को, कहाँ घसीटोगे। मैं चलने लायक नहीं हूँ। अच्छा लाओ मुझे मेरी बन्दूक दो।' दौलतराव ने उसे बन्दूक पकड़ा दी।

'गोलियाँ भरी हुई हैं न ?' उसने दौलत से पूछा।

'हाँ।'

'अब तुम दोनों यह स्थान छोड़ दो अन्यथा मैं अपने को गोली से समाप्त कर लूँगा।' दौलत आश्चर्यचकित था। विश्वासराव के मुख पर उसने दृढ़ता की झलक देखी।

'मैं सही कह रहा हूँ। जाते हो या नहीं ? विश्वासराव ने धमकी दी।

'कृष्णजी चलो।' निराश स्वर में गोलत बोला। कृष्णजी, विश्वास की ओर बढ़ने का निश्चय कर रहा था, पर विश्वास उसका मन्तव्य भांप गया।

'मेरी ओर मत बढ़ना। मैं तीन तक गिनती गिनता हूँ, अगर तुम लोग नहीं गए तो मेरी लाश ले जाना। एक दो

दौलतराव और कृष्णजी शीघ्रता से निकल गए। विश्वासराव के मुख पर का तनाव दूर हो गया। उसने खड़े होने की कोशिश की, पर पैरों ने उसका साथ नहीं दिया। वह खाट पर बैठ गया। दरवाजा बन्द था। दोनों साथियों के घोड़ों की टापों का स्वर अभी तक उसके कानों में गूंज रहा था। वह बन्दूक के सहारे खड़ा हुआ और धीरे धीरे दरवाजे के पास आकर बैठ गया।

अब ठीक है दो चार को ठिकाने लगाने के उपरांत ही मरूंगा। ऐसी मौत किसके नसीब में होती है।' उसने मन में सोचा। विगत की स्नेहिल स्मृतियों में वह तैरने लगा। माँ पिता मित्र और शोभना! शोभना पर आकर उसके विचार केंद्रित हो गए। उम्र के साथ ही शैशवकाल की स्नेह भावना ने पलटा खाया और पवित्र प्यार की लहरों से दोनों सराबोर होने लगे। इसी बीच उसका झुकाव देश की विषम स्थितियों की ओर हुआ और उन्हीं को सुलझाने का उसने व्रत लिया। शोभना ने अपने प्यार की दुहाइयाँ दी, पर वह दूर निकलता गया। उनका प्यार परवान नहीं चढ़ सका। उसने विचारों को झटका। दरवाजे की ओट में से उसने सामने की गली में नजर दौड़ाई। दो अंग्रेज, करीब बीस पच्चीस भारतीय सिपाहियों को लेकर चले आ रहे थे। उसने गौर से देखा। आगे आगे वही व्यक्ति चला आ रहा था, जो कुछ समय पहले उसे देखकर गया था। अंग्रेज अफसर ने कुछ इशारा किया और उसके पीछे आने वाले सिपाही इधर उधर होने लगे।

'घेरा डाल रहे हैं।' विश्वासराव मुस्कराया। उसने बन्दूक उठाई। निशाना साधा और घोड़ा दबा दिया। परिणाम देखे बिना उसने फुर्ती से दूसरी गोली भरी और पुनः घोड़ा दबा दिया। चोट लगा कंधा और हाथ सुन्न हो रहे थे, फिर भी उसने साहस दिखाकर तीसरी गोली भर ली। गली में नजर दौड़ाई।

'मकान को आग लगा दो।' अंग्रेज अधिकारी ने आदेश दिया। एक अंग्रेज और एक भारतीय गुप्तचर के मरने से वह सम्भवतः बौखला गया था।

'मगर आस पास और भी मकान हैं सर।' एक सिपाही ने हिम्मत से कहा।

'शटअप यू नॉनसेन्स ऑर्डर इज ऑर्डर।'

लकड़ियाँ, चिथड़े मिट्टी का तेल आया। मकानमालिक चिल्लाता ही रहा, उसके सामने ही सारे घर को आग के हवाले कर दिया गया। धू धू कर लपटें आकाश को स्पर्श करने लगीं। लोग डर के मारे अपने घरों में दुबके हुए थे। विश्वासराव असहाय था।

हे धरती माँ मैं इस बार तुझे मुक्त करवाने में सफल नहीं हो पाया। मुझे फिर जन्म देना '

उसने बन्दूक की नली अपने मस्तक से सटाकर घोड़ा दबा दिया। काफी देर खड़े रहने के बाद, पुलिस के सिपाहियों को सुबह तक वहीं रहने की आज्ञा देकर अंग्रेज-अधिकारी चला गया। प्रातः हुई। समस्त उच्चाधिकारी घटनास्थल पर पहुँचे। जले हुए मकान का मलबा तलाशा गया। एक अधजली लाश और बन्दूक के बिना जले हिस्से लेकर वे लोग चले गए। सारे शहर में चर्चा थी कि विश्वासराव को अंग्रेजों ने जीवित आग में जला दिया। अंग्रेजों को भय था कि वासुदेव इस घटना का बदला अवश्य लेगा।

दौलतराव और कृष्णजी ठिकाने पर पहुँचे। वासुदेव वहीं [illegible] हुआ था। साथियों ने व्यग्रता से, विश्वासराव के बारे में पूछा। [illegible] घटना दोहरा दी। दौलतराव और कृष्णजी अपने को अपराधी [illegible] साथियों ने उनसे पूछा—

'आप आज्ञा दें तो हम पूना जाएँ?'

'जाकर क्या करोगे?'

'पता तो कर आएँ।'

'उचित समझो, तो जाओ मगर सावधानी से। [illegible] है।'

दिन में वासुदेव आया। सभी के चेहरों पर [illegible]

क्रिया— क्या बात है ?'

'दौलतजी आ गए हैं।' एक साथी ने धीमे स्वर म कहा।

'अच्छा।' वह गुफा मे घुस गया। उसे देखकर कृष्णजी और दौलत खड़े हो गए। वासुदेव ने पूछा— विश्वास कहाँ है ?'

दौलत न सारी घटना सुना दो। वासुदेव ने कोई उत्तर नही दिया।

'दो साथी घटना का विवरण लेने गए हैं।' कृष्णजी बोला।

एसी मित्रता निभाने वाल लोग बहुत कम होते हैं।' लम्बी सांस लेकर, दद-पूण स्वर मे वासुदेव बोला। शाम होने से पूव ही पूना गए साथी लौट आए। उन्होंने जो कुछ बताया उससे सभी साथी शोक म डूब गए। वासुदेव न सभी को दिलासा दिया।

क्रातिकारी की यही चरम गति है। उसे ऐसी ही मृत्यु चुननी चाहिए। धन्य है वह माँ जिसने विश्वास जैसे पुत्र को जन्म दिया। हम सबकी ओर स विश्वास को सच्ची श्रद्धाजलि यही होगी कि हम भी उसके माग क अनुसरण करें। मैंने अपने दल म रुहेले और पठान घुड़सवारो की भर्ती शुरू कर दी है ताकि अंग्रेजी सेना का डटकर मुकाबला किया जा सके।'

वासुदेव दुगुनी ताकत से अपने काय म जुट गया। विश्वासराव की मृत्यु ने उसमे एक नया जोश उत्पन्न कर दिया। दौलतराव के मन को उस दिन से चैन नही था, जिस दिन उसने सुना था कि विश्वासराव को जीवित जला देने का आदेश देने वाला अधिकारी पीयस था। एक दिन कृष्णजी ने वासुदेव से पूछा—

आप आज्ञा दें तो कुछ दिन गगापुर हो आऊँ। रात स्वप्न म देखा कि पत्नी की तबियत खराब है।'

'जरूर जाओ मगर सावधानी से जाना। मेजर डेनियल बड़ी तादाद म सेना लेकर उस क्षेत्र म उपस्थित है।

मैं भी घूम आऊँ। दौलतराव ने पूछा।'

'तुम भी घूम आओ।'

कृष्णजी और दौलत रवाना हो गए। एक दिन गगापुर म रहने क उपरात दौलतराव बोला—

मैं भी अपने घर जाकर परिजनो से मिल आता हूँ।

'शीघ्र आ जाना । मैं पत्नी के स्वस्थ होते ही वापस लौट जाऊँगा ।'

दौलतराव चला गया । मैले कुचैले कपडो मे वह भिखारी सा लगता था । रात के अँधेरे म सावधानी से उसने पूना म प्रवेश किया । घोडा वामनराव के यहाँ छोडा और एक दो दिन म आऊँगा कहकर निकल गया । रात उसने एक दुकान के आगे लटकर बिताई । दूसरे दिन नाटक करते हुए वह पुलिस चौकी के पास पहुचा । एक भारतीय पुलिसमन ने आकर उसे टोका—

'अरे ! भाग जा यहाँ से तेरा बाप आने वाला है । वह बिना ठोकर के बात नही करता ।'

'मैं तो पहले ही किस्मत का मारा हूँ । मैं साहब से ■ माफ माँगने आया हूँ । गाँव वालो ने मेरा यह हाल कर दिया । मैं भिखारी नही हूँ ।

'वह तेरा हाल और भी बुरा कर देगा ।'

'पेयर साहब तो एसे नही हैं ।'

'पेयर नही, पीयस । अरे ! बडा जालिम है, साला । तेरी यह गत गाँव वालो ने क्यो बनाई र ?

'मैंने उन्ह कहा था कि मैं अफसरो को कह दूगा ।'

'क्या कह दगा ?'

'कि वासुदेव यहाँ आता है ।' पुलिसमैन चौंका ।

'ठहर यही ठहर ' वह अन्दर भागा और कुछ ही क्षणो मे वापस आ गया ।

'चल, तुझे बडे साहब ने बुलाया है ।'

'कौन वडे साहब ?'

पीयस साहब ।'

वह उसे साथ लेकर एक कमरे के पास आया और इशारा करके बोला—

'जा—अन्दर चला जा ।

दौलत कमरे मे आ गया । गोरा साहब कुर्सी पर बठा हुआ उसे गौर स देख रहा था । उन दोनो के सिवाय कमरे म और कोई नही था ।

'टोम वासुदेव को देखा मैन ।

हरामजादा ?' वह दाँत पीसता हुआ पीयस पर चीते के सदृश

पीयस चीख पाता कि चाकू का वार उसके सीने पर हुआ। दौलत ने उसके सीने म से चाकू निकाला पर इसी बीच पीयस के मुह पर से उसकी हथेली हट गई। एक लम्बी चीख पीयस के मुह से निकली। पुलिसमैन उसके कमरे की ओर दौड, पर इतने म दौलत उसका ठडा कर चुका था। वह सबसे आगे वाले पुलिसमन पर झपटा। गोलियाँ चली और दौलत का भी प्राणा त हो गया। शहर म आग की तरह उसके दुस्साहस की चर्चा फल गई। वामनराव क पास भी खबर पहुची। उसे बडा दु ख हुआ। उसके मुँह स निकला—

वह शायद यहाँ इसीलिए आया था। पतगे हैं स्वाधीनता रूपी दीप की खातिर अपने प्राण होम कर रहे हैं।'

गगापुर का एक नवयुवक खबर लाया कि एक आदमी ने पुलिस-स्टेशन क अन्दर जाकर अग्रेज पुलिस अधिकारी को दिन-दहाडे मार गिराया।'

'कौन था भाई '

'दौलतराव नाम बता रहे थे। बेचारे का शरीर गोलियो से छलनी कर दिया गया था।'

पूरे गाँव मे खबर फैल गई। कृष्णजी ने भी सुनी। वह अवाक रह गया।

'हे! ईश्वर ' उसने जाकर, नवयुवक से बात कर के छान-बीन की। उसे विश्वास हो गया कि वह दौलत ही था।

'वासुदेवजी को क्या जवाब दूगा !' उसने मन मे सोचा।

पूरा महीना बीत गया। व गुम्थ इसी बीच अग्रेजों को दो-तीन चमत्कार दिखा चुका था। पाँच सौ रुहेले घुडसवारो की सेना ने अग्रेजी सेना को कई स्थानो पर दिन मे तारे दिखा दिए। अग्रेज बेहद घबरा गए। सेना वासुदेव के पीछ पडी थी। समस्त पुलिस बल को पूना बुलाकर अग्रेजो की रक्षा थ लगा दिया गया। उन्हें भय था कि वासुदेव अपने घुडसवारो को लाकर उन्हें रौंद न दे। जुगन भी अपनी टुकडी लेकर पूना पहुँच गया था। उसे विगत घटनाओ का पता लगा। उसके आँसू निकल पडे। वह एकात मे जाकर खूब रोया। वह जानता था कि विश्वासराव और दौलत, वासुदेव के दो हाथ थे। उसके मन मे आता कि ऐसे मे उसे वासुदेव के पास चला जाना चाहिए लेकिन फिर वह सोचता शायद वह इसे पसद न करे।

उधर वासुदेव काफी परेशान था। दौलत और कृष्णजी का कोई पता नहीं था, न कोई और खबर थी। वासुदेव ने खुद ही गगापुर जाकर पता करने की सोची। वह अपने चार विश्वस्त साथियों को लेकर गगापुर रवाना हुआ। कृष्णजी को उसके पहुंचने की बिल्कुल भी आशा नहीं थी। वासुदेव ने सहज स्वर में प्रश्न किया—

'अब तुम्हारी पत्नी की तबियत कैसी है?'

'अब ठीक है।' कृष्णजी ने उत्तर दिया और ऊंचे स्वर में बोला— अरी! सुनती हो, कौन आया है!'

'कौन आया है।' नारी-स्वर आया।

'तुम जिनके दर्शन करना चाहती थी।'

'आह! वासुदेव भैया।' उसने वासुदेव के चरण स्पर्श किए।

'इन लोगों के लिए भोजन तैयार करो।'

वह चली गई। वासुदेव बोला— दौलत नहीं दिख रहा है?'

वासुदेव कृष्ण जी के चेहरे को देखता रहा। कृष्णजी को इसी प्रश्न का भय था।

वह पूना गया था।'

'ओह! अकेला क्यों जाने दिया? विश्वास की मृत्यु के बाद उसका मन अशान्त सा था। कितने दिन हो गए? मैं तो सोच रहा था कि तुम्हारे पास होगा।' वासुदेव चिंतित स्वर में बोला। कृष्णजी की समझ में नहीं आ रहा था कि पूरी बात कैसे बताए।

'तुम मुझसे कुछ बात छिपा रहे हो।' वासुदेव उसे असमंजस में पड़ा देखकर बोला।

'हाँ—बात ही कुछ ऐसी है।' कृष्णजी ने हिम्मत कर सारी घटना पूर्ण विवरण सहित सुना दी। वासुदेव तो मानो आकाश से गिरा। उसके मुँह से निकला—'बहुत बुरा हुआ।' वह हाथों में सिर दिए बैठ गया। कृष्णजी ने साहस जुटाकर कहा—

'आप हाथ मुँह धो लें।'

'खाना बनाने के लिए मना कर दो।'

कृष्णजी चुपचाप उठकर अन्दर चला गया। चारों साथी भी दुःखी थे। वासुदेव दिन भर लेटा रहा हल्का सा बुखार था, जो शाम होते-होते क्रमशः बढ़ता गया। कृष्णजी भी उदास था। उसने हल्के स्वर में पूछा—

'वैद्य को बुला लाऊँ ?'

'नहीं धीरे धीरे अपने आप उतर जाएगा। यह तो तकरीबन महीने भर से चल रहा है। पीछा ही नहीं छोड़ रहा है। कृष्णजी, अब तो मैं जीवन से ऊब गया हूँ। लगता है जीवन में कोई रस नहीं रह गया है।'

कृष्णजी उसके मुँह से ऐसे शब्द पहली बार सुन रहा था।

'आप जैसे जीवत पुरुष के मुँह में ऐसे शब्द शोभा नहीं देते।'

हाँ—ऐसा ही कुछ मैंने भी सोचा था। तभी इस शरीर को शैल-पर्वत स्थित मल्लिकार्जुन के समक्ष विसर्जित नहीं किया, पर '

'हमारा जो उद्देश्य है, उसे पूरा करने का प्रयत्न जारी रखना चाहिए। यह शरीर तो ईश्वर की देन है इसे नष्ट करना पाप है।

'काश ! स्वतन्त्रता की कीमत, इसकी उपयोगिता को समस्त भारत समझ पाता। गोरे हमारा शोषण कर रहे हैं हमें लूटकर स्वयं समृद्ध हुए जा रहे हैं। हमारे ही देश में, हमें कुत्ता कहा जाता है मगर हम तब भी सन्तुष्ट हैं हाय रे हतभाग्य !!'

सदियों की गुलामी ने हमारी विचारधारा को भी बदल दिया है समय लगेगा लोग चेतेंगे समस्त भारत के लोग एकजुट होकर आजादी की माँग करेंगे।' कृष्णजी बोला।

देखें ऐसा समय कब आता है। बदन टूट रहा है। मैं आराम करना चाहता हूँ। खोए खोए से स्वर में वासुदेव बोला।

कृष्णजी चुपचाप उठकर चला गया। शाम को बड़ी जिद करके कृष्णजी की पत्नी ने वासुदेव को एक रोटी खिलाई। बुखार भी उतार पर था। रात को सोते समय कृष्णजी की पत्नी बोली—

मेरी एक सखी ने पूछा कि हमारे घर में कौन आए हैं। मैं सब से बोली—जिसे आज सारा इलाका पूज रहा है वासुदेव।' वह बोली कि उसे भी उनके दर्शन करा दो। मैंने उसे सुबह आने के लिए कहा है।'

कृष्णजी चौका और क्रोधित स्वर मे बोला—'अरे ! मूर्ख, यह तूने क्या कर दिया ?'

'क्यो ? क्या बुरा हो गया ? दशन कर लेगी बेचारी।'

'बेवकूफ सारा गुड गोबर कर दिया। पुलिस को भी भनक पड गई तो ! बात तो फलेगी। वासुदेव का जीवन बहुत कीमती है। ओह !' वह शीघ्रता से वासुदेव के पास आया। वासुदेव अभी तक सोया नही था। कृष्णजी को आया देखकर वह बोला—

'तुम व्यर्थ चिंतित हो रहे हो। मैं बिल्कुल ठीक हूँ।'

'आपके यहाँ होने की बात मूर्ख पत्नी के कारण, दूसरो के कान मे पड गई है। मैं बेहद शर्मिन्दा हूँ। आप कही किसी खतरे म न पड जाएँ। गाँव मे अच्छे और बुरे, दोनो प्रकार के लोग हैं।'

'कोई विशेष बात नही है। तुम घबराओ मत। हा, पर मेरा यहा से निकल जाना ठीक है।'

कृष्णजी, उसे चुपचाप विदा करने गाँव की सीमा तक आया। वासुदेव के रवाना होने से पहले कृष्ण बोला—कुछ ही दूरी पर देवर गाव है। वहाँ मेरा मित्र विनायक भासले रहता है। वह आपके आराम का सारा प्रबंध कर दगा। सुबह मैं भी आ जाऊगा।'

'ठीक है।' वासुदेव साथियो सहित अन्धेरे मे खो गया। वासुदव अत्यधिक थकावट अनुभव कर रहा था। वे आधी रात के करीब देवर गाँव की सीमा पर पहुँच गए। सीमा पर ही मदिर था। वासुदेव बोला—

'शेष रात यही गुजार ली जाए। क्या विनायक को परेशान करें। लगता है, पुन ज्वर चढ रहा है।' वह घोडे स उतर कर मदिर के प्रागण मे लेट गया। साथी भी निकट बठ गए। एकाएक वासुदेव साथियो से बोला—

'तुम लोग जाओ। मैं आ जाऊँगा। साथी चिंतित हो रहे होगे।'

'मगर ' एक साथी न कुछ कहने का प्रयास किया।

अगर मगर कुछ नहीं फौरन रवाना हो जाओ। हाँ, अगर मैं नही लौटू तो सब लोग अपने-अपने घर चले जाना।'

साथी चले गए। वासुदव ने आँखें मूँद ली। कुछ ही देर म उसे गहरी नीद

आ गई।

कृष्णजी की आशंका गलत नहीं थी। वासुदेव के निकलते ही सेना ने गाँव को घेर लिया। गाँव में हड़बड़ाहट मच गई। चौपाल में खड़ा होकर अंग्रेज-अफसर चिल्लाया—

'वासदेव किडर है? जल्दी बटाना माँगता, नहीं तो गाँव को आग लगा देगा।'

उस अफसर के पास आकर एक ग्रामीण बोला—

'हुजूर वह तो निकल गया है। उधर गया है।'

'टोम—गलत खबर दिया?'

नहीं खबर ठीक थी, पर आपने पहुँचने में देर कर दी। आप उसे अभी भी पकड़ सकते हैं।'

अंग्रेज-अफसर सेना लेकर, उस ग्रामीण का बताई हुई दिशा में चल पड़ा। कृष्णजी घर से निकल कर बाहर आया। अ य कई लोग भी आ गए। वह ग्रामीण वहाँ से खिसकना चाहता था कि कृष्णजी ने उसकी बाँह पकड़ ली और घृणा-युक्त स्वर में बोला—

माधव तुम नीच हो—गद्दार।

'थू है—तुझ पर। एक नवयुवक ने उस पर थूका।

अरे! मैंने, इतनी सी ही खबर तो दी थी कि गाँव की चौपाल पर वासुदेव है। वह किसके घर म ठहरा था यह तो नहीं बताया न? माधव बेशर्मी से बोला।

'अगर इतना बता देता तो तेरी बोटियाँ अलग-अलग कर दी जाती।'

कृष्णजी क्रोध में बोला। सब अपने अपने घरों में घुस गए। कृष्णजी ने अपनी पत्नी को आड़े हाथों लिया—

तुम्हारी वह सखी माधव की पत्नी रही होगी?'

'हाँ।' वह सिसकते हुए बोली।

'देखा, तुम्हारी छोटी सी भूल ने वासुदेव के प्राण संकट म डाल दिए हैं।'

'मुझे यह पता नहीं था। वह रोते हुए बोली।

कृष्णजी ने अब कुछ भी कहना बेकार समझा।

वासुदेव को यह तो पता था कि वह कभी न कभी अंग्रेजी शासन के चंगुल

मे फंसेगा, पर ऐसी निस्सहाय अवस्था मे पकडा जाएगा, यह कभी नही सोचा था। वह मन्दिर में ही सोया हुआ था कि अंग्रेजी सेना ने उसे चारो ओर से घेर लिया। निकट मे पडी उसकी बन्दूक को भी सेना ने अधिकार मे कर लिया था। अब जाकर कही अंग्रेज अधिकारी को उसे जगाने की हिम्मत पडी। वासुदेव अपना नाम सुनकर हडबडा कर खडा हो गया। चारो ओर दृष्टि दौडाई बन्दूको की नालिया ही नालिया, और उन सबका केन्द्र वही था। वह मुस्कराया—

'यह तो एक दिन होना ही था तुम कौन हो ?' अंग्रेज अधिकारी से उसने पूछा। अंग्रेज अधिकारी ने गर्व से उत्तर दिया—

'मेजर डेनियल।'

'भाग्य तुम लोगो का साथ दे रहा है, पर याद रखना, अधिक दिन नही देगा। काश ! मैं इस समय सदलबल होता।'

डेनियल के इशारे पर उसे जजीरो से जकड दिया गया।

वासुदेव को कडे पहरे मे पूना लाया गया। जगल की आग की तरह खबर चारो ओर फैल गई। शीघ्र ही न्याय का नाटक शुरू हुआ। अदालत के भीतर और बाहर नरमुड ही नरमुड नजर आ रहे थे। जनता वासुदेव की जय जयकार कर रही थी। अदालत मे पुकार हुई—

'अभियुक्त का कोई वकील हाजिर है ?'

अद्भुत सन्नाटा छा गया। उसके वकील होने का मतलब था—अंग्रेज सरकार का दुश्मन। चुप्पी अधिक देर नही रही। पीछे से एक आवाज उभरी —'मै वासुदेव फडके की तरफ से वकालतनामा प्रस्तुत कर रहा हूँ।'

वासुदेव और समस्त उपस्थित जनता के आश्चय का ठिकाना न रहा। वकील थे—सार्वजनिक सभा के काका दाने गणेश वासुदेव जोशी। अदालत से बाहर निकलते समय जनता ने 'वासुदेव जिन्दाबाद' के उद्घोष से आकाश गुंजा दिया। वासुदेव मुस्करा कर डेनियल से बोला—

'तुम्हें मेरी गिरफ्तारी पर बहुत बडा पुरस्कार मिलेगा, पर वह एक दूसरे चुक जाएगा धन ही तो है, पर मुझे जो पुरस्कार मिल रहा है, उसे देख रहे हो न ?'

काका ने उसके मुकदमे में रात दिन एक कर दिया। वासुदेव ने अदालत मे कहा—

'मैं सफल नहीं हो पाया, इसका मुझे दुःख नहीं है। मैं अंग्रेजी सरकार से कहना चाहूँगा कि उन्हें हमारे देश में रहने का कोई अधिकार नहीं है। अगर उन्होंने हमें स्वतन्त्र नहीं किया, तो इस प्रकार के प्रयास निरन्तर जारी रहेंगे वासुदेव पैदा होते रहेंगे। मैंने जो कुछ किया अपने देश और देशवासियों के लिए किया। हर भारतीय का यही कर्तव्य होना चाहिए।'

७ नवम्बर, १८७९ को जज ने वासुदेव को कालेपानी की सजा सुनाई। अंडमान में कालेपानी की सजा काटनी पड़नी थी, मगर गवर्नर टेम्पिल को यह विश्वास नहीं था कि अंडमान की जेल उसे रख पाएगी।

निर्णय किया गया कि उसे दूर, अदन के किले में रखा जाए।

जिस दिन उसे अदन रवाना किया जाना था उससे कुछ ही देर पहले काका उससे मिलने आए।

'मुझे दुःख है वासुदेव, जैसा मैं चाहता था, हुआ नहीं।'

'इतना ही बहुत है, आपने मेरा साथ दिया। मैं आपका चिरऋणी रहूँगा।

'यह तुम्हारा बड़प्पन है।'

बात करने के लिए और था भी क्या? काका विदा लेकर बाहर आए कि वासुदेव को ले जाने के लिए गारद आ गई। उन्हीं में जुगल भी था।

'अंग्रेजों के खूब खैरख्वाह बन रहे हो?' धीरे से वासुदेव बोला।

'बस! आज-आज और हूँ।' साथ चलते चलते जुगल बोला।

कहाँ जाओगे?'

'कहीं दूर तेरे कारण यहाँ पड़ा था। बहुत कमजोर हो गए हो?'

'बुखार और खाँसी पीछा नहीं छोड़ रही है।'

'अदन बहुत दूर है?'

'सुना तो यही है।

'ए बात नहीं जल्दी कदम उठाना माँगटा।' अंग्रेज-अफसर ने उन्हें टोका।

जुगल भिनाया—'हरामजादा जो करता है गोली से उड़ा दूँ।'

'कितनों को उड़ाया है?'

'अरे ! यह तो आवेश की बात है।'

'मरी मिल और ' वासुदेव मुस्कराया।

'तुम्हें पता है ?'

'मैं तुम्हारा रोम रोम जानता हूँ। दिखते भोले हो, पर हो चतुर अंग्रेजों को अभी तक मूर्ख बनाए जा रहे हो।'

'यह मेरे मित्रों की मेहरबानी है मेरा हर राज, उनका राज है। अन्यथा हमारी मित्रता का र ज कभी का खुल जाता।'

'सभी परिचितों को मेरा नमस्कार कहना। गाँव की ओर जा सको, तो हो आना।

'अच्छा विदा ! यहाँ से गारद बदलेगी।' भारी स्वर में जुगल बोला।

गारद की दूसरी टुकडी वासुदेव का साथ लेकर चल पडी। जुगल का काफी देर से रखा हुआ धैर्य और संयम टूट पडा।

अदन तक की समुद्री यात्रा के दौरान वासुदेव का शरीर और भी छीजता रहा। उसे लाकर, समुद्र में दूर, अदन के मध्य म स्थित किले की एका त कोठरी में बद कर दिया गया। न कोई संगी और न कोई साथी। बुखार और खाँसी से निरंतर घुलता शरीर हड्डियों का ढाँचा मात्र रह गया, किन्तु आत्मबल उतना ही फौलादी होता जा रहा था

विचारों में प्रखरता यहाँ से एक बार मुक्त होकर, गोरों से पुन टक्कर लेने की भावना उसके हृदय म उमडती घुमडती रहती थी।

१२ अक्टूबर, १८८०। अपनी एकान्त कोठरी म बैठा-बैठा वासुदेव अपनी सखडी हो गई टाँगों को देख रहा था। उनसे मोटी तो बेडियाँ ही नजर आ रही थीं। पाँवों म पडी बेडियों को उसने हिलाया डुलाया।

ये भी मेरे शरीर का अंग बन गईं मालूम होती हैं। कोठरी म चलते फिरते इनकी आवाज कितनी मधुर लगती है क्योंकि यहाँ आने के बाद अन्य कोई आवाज नहीं सुनी। वासुदेव बडबडाया। बेडियों से खेलन-खेलते उसे लगा कि इनको पाँवों से अलग किया जा सकता है। सुखद आश्चर्य पाँवों म से बेडियाँ निकल गई। वह बुदबुदाया कमजोर होने का लाभ है।'

कुछ देर वह बैठा-बैठा सोचता रहा। वापस पहुँच पाना तो संभव नहीं

है। पर हाँ, अगर समुद्र तक भी पहुँच पाया तो आगे की कुछ सोची जा सकती है। वह चुपचाप कोठरी की छत पर चढ़ गया। रात थी किले की दीवार को लाँघ कर सिंहद्वार तक पहुँच गया। खुली हवा म आने तक, उसे किसी अवरोध का सामना नहीं करना पड़ा। इतनी सी मेहनत से उसका दम फूल गया।

कष्ट से मुक्ति की भावना ने उसम एक नया जोश भर दिया, यद्यपि उसे पता था कि चारो ओर सागर के रूप मे जल की अपार राशि लहरा रही है। फिर भी आशा की किरण को लौटा कसे दे? चलता गया तेज कदमों से, किले की काल कोठरी से दूर और दूर होता गया। वह जल्दी स जल्दी समुद्र के किनारे पहुचना चाहता था।

प्रात उसकी कोठरी को खाली पाकर हडकम्प मच गया। प्रहरी उसकी तलाश म भागे और पुन पकड कर ले आए। अब यन्त्रणाओ का नया दौर शुरू हो गया। क्षयरोग से जजर शरीर अत्याचारों को कितना सहता? वह अक्सर कहता था—

'मुझे इस शरीर स कोई मोह नहीं है। निष्क्रिय शरीर किस काम का? यह आप लोगो के लिए लज्जाजनक बात है कि मै अभी तक जीवित हूँ तुम्हारे अत्याचारो मे भी दम नहीं है।'

समय निकलता गया। शरीर हड्डियो का ढाँचा मात्र रह गया था। १७ फरवरी, १८८३ तक वह दारुण यत्रणाओ को सहता रहा। चार बजे शाम को उसने प्रहरी को कहा—

'मैं अब मुक्त हो रहा हू। साहस हो तो रोक लो।'

उसकी वाणी म एक अद्भुत ओज था, मानो कोई तपस्वी भविष्यवाणी कर रहा हो। बीस मिनट बाद उसने प्राण त्याग दिए। अंग्रेजी सरकार ने एक महीने तक उसके महाप्रयाण की खबर बाहर नहीं आने दी। यहाँ तक कि उसके शव को दाग तक नहीं दिया, क्यो कि शवदाह वहाँ निषिद्ध था। उसे दफना दिया गया। यह न्याय था अंग्रेजों का जिसने उस महान् देशभक्त को ३८ वष की उम्र मे ही ससार से विदा दे दी इस कसूर पर कि वह अपने देश को आजादी चाहता [illegible]